अक्टूबर-दिसंबर 2016
मूल्य 40 रुपए

शोध दिशा

समकालीन सृजन को समर्पित त्रैमासिकी

लघुकथा अंक

अतिथि संपादक
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

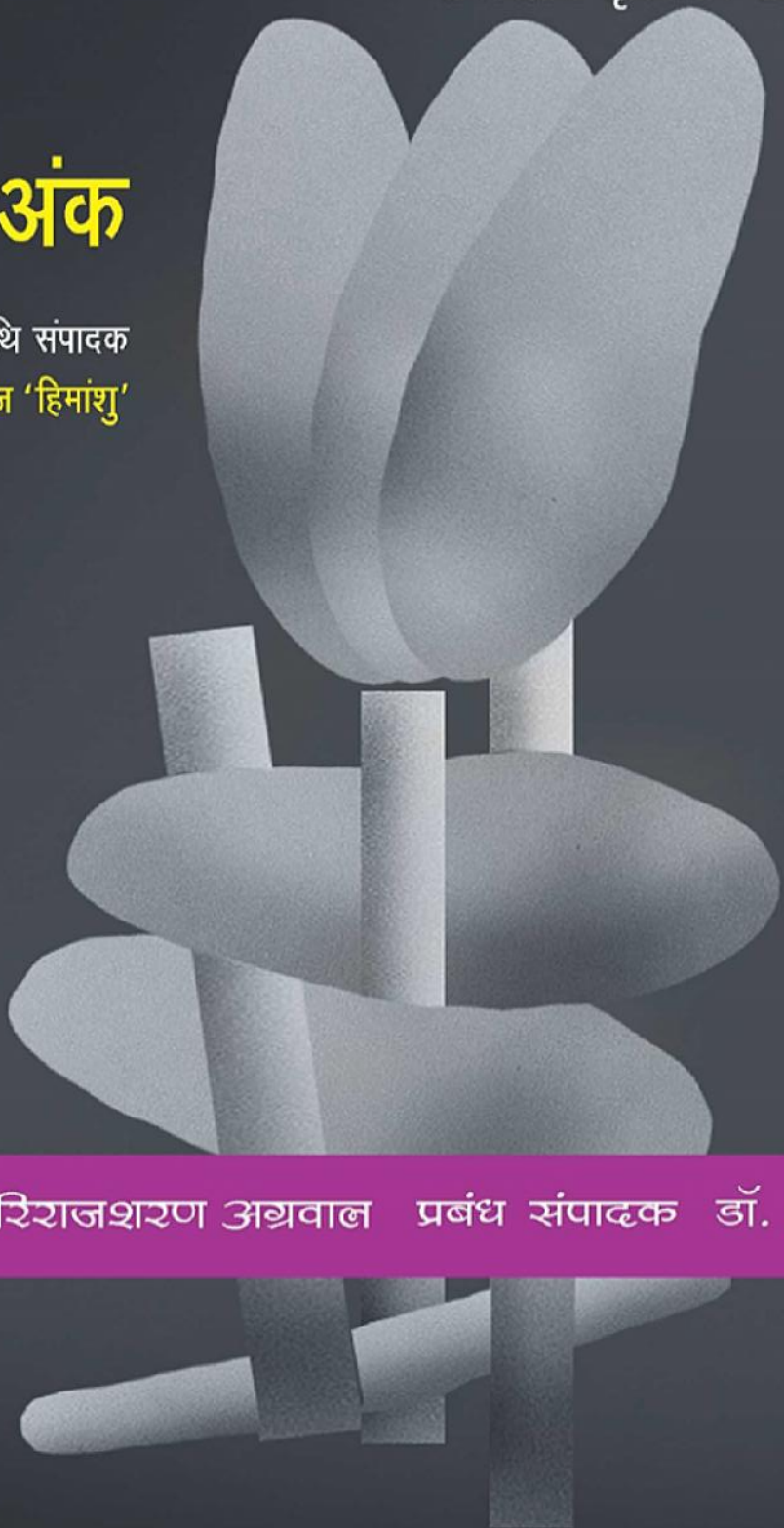

संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल प्रबंध संपादक डॉ. मीना अग्रवाल

शोध दिशा

वर्ष 9 अंक 4 | अक्टूबर 2016 से दिसंबर 2016 | 40 रुपये

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार, बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फ़ोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : giriraj 3100@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय
दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति भटनागर
सी-106, शिव कला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सैक्टर 62, नोएडा
फ़ोन : 09928570700

गुड़गाँव कार्यालय
डॉ० मीना अग्रवाल
बी-203, पार्क व्यू सिटी-2
सोहना रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)
फ़ोन : 0124-4076565, 07838090732

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

अतिथि संपादक
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
मनोज अबोध
सत्यराज

कला संपादक
गीतिका गोयल 09582845000
डॉ० अनुभूति 09958070700

उपसंपादक
डॉ० अशोक कुमार 09557746346

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

चित्रकार
डॉ० आर०के० तोमर
के० रवींद्र

शुल्क
आजीवन शुल्क : एक हज़ार पाँच सौ रुपये
वार्षिक शुल्क : एक सौ पचास रुपये
एक प्रति : चालीस रुपये
विदेश में : पंद्रह यू०एस० डॉलर (वार्षिक)

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें।

स्वत्वाधिकारी 'हिंदी साहित्य निकेतन' की ओर से स्वत्वाधिकारी, मुद्रक प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, निकट ज्योतिष भवन, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

संरक्षक

रो॰ असित मित्तल, नोएडा
श्री अजय रस्तोगी, मेरठ
श्री निश्चल रस्तोगी, मेरठ
श्री अनिलकुमार गोयल, नोएडा
रो॰ आर॰के॰ जैन, बिजनौर
डॉ॰ धैर्य विश्नोई, बिजनौर
डॉ॰ प्रकाश, बिजनौर
रो॰ राजीव रस्तोगी, मुरादाबाद
रो॰ राकेश सिंहल, मुरादाबाद
श्री महेश अग्रवाल, मुरादाबाद
श्रीमती ताराप्रकाश, मुज़फ़्फ़रनगर
रो॰ परमकीर्तिसरन अग्रवाल, मु॰न॰
रो॰ देवेंद्रकुमार अग्रवाल, काशीपुर
श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल, (नैनी पेपर्स, काशीपुर)
श्री अमितप्रकाश, मुज़फ़्फ़रनगर
रो॰ नीरज अग्रवाल, जयपुर
श्री सत्येंद्र गुप्ता, नजीबाबाद
श्री अशोक अग्रवाल, गुड़गाँव
डॉ॰ सुधारानी सिंह, मेरठ

आजीवन सदस्य

रो॰ आर॰ के॰ साबू, चंडीगढ़
रो॰ सुशील गुप्ता, नई दिल्ली
रो॰ एम॰एल॰ अग्रवाल, दिल्ली
डॉ॰ मनोजकुमार, दिल्ली
श्री प्रवीण शुक्ल, दिल्ली
डॉ॰ दीप गोयल, दिल्ली
श्री आशीष कंधवे, दिल्ली
श्री अविनाश वाचस्पति, दिल्ली
पावर फाइनेंस कारपोरेशन (इं) लि॰
श्री ए॰बी॰ रावत, दिल्ली
श्रीमती शशि अग्रवाल, दिल्ली

उत्तर प्रदेश

श्री सुभाष गोयल, नोएडा
श्री ओमप्रकाश यति, नोएडा
सुश्री भावना सक्सेना, नोएडा
डॉ॰ कुँअर बेचैन, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ अंजु भटनागर, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मिथिलेश रोहतगी, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मंजु शुक्ल, ग़ाज़ियाबाद
डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित, शिकोहाबाद
डॉ॰ पल्लवी दीक्षित, शिकोहाबाद
रो॰ डॉ॰ एस॰के॰ राजू, हाथरस
श्री दिनेशचंद्र शर्मा, मोदीनगर
श्री एस॰सी॰ संगल, बुढ़ाना
डॉ॰ नीरू रस्तोगी, कानपुर
श्री हरीलाल मिलन, कानपुर
श्री विनोदकुमार गोयल, दादरी
श्री अलीहसन मकरैंडिया, दादरी
डॉ॰ प्रणव शर्मा, पीलीभीत
श्रीमती पिंकी चतुर्वेदी, वाराणसी
श्री अरविंदकुमार, जालौन
नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन
डॉ॰ राकेश शरद, आगरा
डॉ॰ राकेश सक्सेना, एटा
श्री अरविंदकुमार, मोहदा (हमीरपुर)
श्री गोपालसिंह, बेलवा (जौनपुर)
डॉ॰ रामसनेहीलाल शर्मा, फिरोज़ाबाद
श्री दिनेश रस्तौगी, शाहजहाँपुर
श्री भूदेव शर्मा, नोएडा
श्री इंद्रप्रसाद अकेला, मुरादनगर
प्राचार्य, डॉ॰ गोविंदप्रसाद, रानीदेवी पटेल महाविद्यालय कानपुर नगर
श्रीमती रजनीसिंह, डिबाई (बुलंदशहर)

खुरजा (उ॰प्र॰)

श्रीमती उषारानी गुप्ता
रो॰ राकेश बंसल
रो॰ डॉ॰ दिनेशपाल सिंह
रो॰ प्रेमप्रकाश अरोड़ा
रो॰ सुनील गुप्ता आदर्श
रो॰ राजीव सारस्वत

जे॰पी॰ नगर

रो॰ अभय आनंद रस्तोगी, हसनपुर
रो॰ डॉ॰ विनोदकुमार अग्रवाल, हसनपुर
रो॰ डॉ॰ सरल राघव, अमरोहा
डॉ॰ बीना रुस्तगी, अमरोहा
रो॰ शिवकुमार गोयल, धनौरा
रोटरी क्लब, भरतियाग्राम

अफजलगढ़ (बिजनौर)

रो॰ रविशंकर अग्रवाल
रो॰ अतुलकुमार गुप्ता
रो॰ महेंद्रमानसिंह शेखावत
श्री वासुदेव सरीन
श्री हंसराज सरीन
श्री अमृतलाल शर्मा
श्री सुरेशकुमार

चाँदपुर (बिजनौर)

डॉ॰ मुनीशप्रकाश अग्रवाल
श्री सुरेंद्र मलिक
गुलाबसिंह हिंदू महाविद्यालय
डॉ॰ बलराजसिंह, बाष्टा (बिजनौर)
श्री विपिनकुमार पांडेय

धामपुर (बिजनौर)

डॉ॰ लालबहादुर रावल
श्री जे॰पी॰ शर्मा, शुगर मिल
डॉ॰ सरोज मार्कण्डेय
डॉ॰ शंकर क्षेम
श्री नरेंद्रकुमार गुप्त
श्रीमती सुषमा गौड़
डॉ॰ मिथिलेश माहेश्वरी
रो॰ शिवओम अग्रवाल
डॉ॰ वीरेंद्रकुमार शर्मा
डॉ॰ कृष्णकांत चंद्रा
डॉ॰ श्रीमती संहिता शर्मा
डॉ॰ पूनम चौहान
डॉ॰ भानु रघुवंशी
डॉ॰ ख़ालिदा तरन्नुम
श्री आर्यभूषण गर्ग
श्री संजय जैन
श्री निशिवेशसिंह एडवोकेट
श्री दीपेंद्रसिंह चौहान
मौ॰ सुलेमान, परवेज़ अनवर, शेरकोट
कुँ॰ निहालसिंह, दुर्गा पब्लिक स्कूल
प्राचार्य, आर॰एस॰एम॰ (पी॰जी॰)कालेज
प्राचार्या, एस॰बी॰डी॰ महिला कालेज
राधा इंटर कालेज, अल्हेपुर (धामपुर)
धामपुर पब्लिक कन्या इंटर कालेज
डॉ॰ रवींद्रसिंह, प्राचार्य, दिशा इंस्टी॰

नगीना (बिजनौर)

श्री पंकजकुमार, पो॰ भोगली
श्री करनसिंह, पो॰ भोगली
श्री पंकजकुमार अग्रवाल
श्री मुनमुन अग्रवाल
डॉ॰ वारिस लतीफ
श्री ओमवीर सिंह

नजीबाबाद (बिजनौर)

श्री इंद्रदेव भारती
डॉ॰ रासुलता

बरेली (उ॰प्र॰)

रो॰ डॉ॰ आई॰एस॰ तोमर
रो॰ रविप्रकाश अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ रामप्रकाश गोयल
डॉ॰ सविता उपाध्याय
डॉ॰ महाश्वेता चतुर्वेदी
रो॰ पी॰पी॰ सिंह

शोध
दिशा

डॉ॰ अशोक उपाध्याय
रो॰ श्यामजी शर्मा
श्री विशाल अरोड़ा
डॉ॰ वाई॰एन॰ अग्रवाल
श्री राजेंद्र भारती
डॉ॰ देवेंद्राकुमारी झा

बिजनौर (उ॰प्र॰)

श्री राजकमल अग्रवाल
डॉ॰ बलजीत सिंह
रो॰ रमेश गोयल
रो॰ विज्ञानदेव अग्रवाल
श्रीमती शशि जैन
डॉ॰ मोनिका भटनागर
डॉ॰ ओमदत्त आर्य
श्री जोगेंद्रकुमार अरोरा
श्री चंद्रवीरसिंह गहलौत, एडवोकेट
रो॰ आर॰डी॰ शर्मा
डॉ॰ निकेता
डॉ॰ अजय जनमेजय
श्री पुनीत अग्रवाल
डॉ॰ निरंकारसिंह त्यागी
श्री अशोक निर्दोष
श्री वी॰पी॰ गुप्ता
रो॰ प्रदीप सेठी
रो॰ हरिशंकर गुप्ता
रो॰ सी॰पी॰ सिंह
डॉ॰ तिलकराम, वर्धमान कॉलेज
आर॰बी॰डी॰ महिला महाविद्यालय
रो॰ डॉ॰ रजनीशचंद्र ऐरन, हल्दौर
श्री अरुण गोयल, किरतपुर
रो॰ डॉ॰ दीपशिखा लाहौटी, नगीना
रो॰ बी॰के॰ मालपानी, स्योहारा
डॉ॰ हेमलता देवी, गोहावर
नहटौर डिग्री कालेज, नहटौर
श्री विवेक गुप्ता, शादीपुर

मवाना (उ॰प्र॰)

रो॰ अनुराग दुबलिश
श्री अंबरीशकुमार गोयल
आर्य कन्या इंटर कालेज
ए॰एस॰ इंटर कालेज
लक्ष्मीदेवी आर्य कन्या डिग्री कालेज

मुज़फ़्फ़रनगर (उ॰प्र॰)

रो॰ शरद अग्रवाल
रो॰ वीरेंद्र अग्रवाल
रो॰ दिनेशमोहन
रो॰ डॉ॰ ईश्वर चंद्रा
रो॰ डॉ॰ अमरकांत
रो॰ अनिल सोबती
रो॰ डॉ॰ जे॰के॰ मित्तल
रो॰ सुधीरकुमार गर्ग
रो॰ प्रदीप गोयल
श्री गौरव प्रकाश
डॉ॰ बी॰के मिश्रा
रो॰ राकेश वर्मा
रो॰ संजीव गोयल
प्राचार्य, एस॰डी॰ कालेज ऑफ लॉ
प्रधानाचार्य, ग्रेन चेम्बर्स पब्लिक स्कूल
रो॰ संजय जैन, शामली
रो॰ डॉ॰ कुलदीप सक्सेना, शामली
रो॰ उमाशंकर गर्ग, शामली
रो॰ डॉ॰ सुनील माहेश्वरी, शामली
श्री अतुलकुमार अग्रवाल, खतौली

मुरादाबाद (उ॰प्र॰)

रो॰ सुधीर गुप्ता, एडवोकेट
रो॰ बी॰एस॰ माथुर
रो॰ ललितमोहन गुप्ता
रो॰ सुरेशचंद्र अग्रवाल
श्री शचींद्र भटनागर
रो॰ योगेंद्र अग्रवाल
रो॰ नीरज अग्रवाल
रो॰ के॰के॰ अग्रवाल
रो॰ श्रीमती सरिता लाल
रो॰ श्रीमती चित्रा अग्रवाल
डॉ॰ महेश 'दिवाकर'
रो॰ ए॰एन॰ पाठक
रो॰ चक्रेश लोहिया
रो॰ यशपाल गुप्ता
रो॰ सुधीर खन्ना
रो॰ रमित गर्ग
श्री विनोदकुमार
डॉ॰ रामानंद शर्मा
डॉ॰ पल्लव अग्रवाल
श्री राजेश्वरप्रसाद गहोई
श्री विश्वअवतार जैमिनी
श्रीमती कनकलता सरस
श्री योगेंद्रकुमार
श्री हरीश गर्ग, संभल
श्री वीरेंद्र गोयल, संभल
श्री नितिन गर्ग, संभल
रो॰ डॉ॰ राकेश चौधरी, चंदौसी

मेरठ (उ॰प्र॰)

रो॰ ओ॰पी॰सपरा
रो॰ विष्णुशरण भार्गव
रो॰ एम॰एस॰ जैन
रो॰ गिरीशमोहन गुप्ता
रो॰ डॉ॰ हरिप्रकाश मित्तल
रो॰ प्रणय गुप्ता
डॉ॰ आर॰के॰ तोमर
रो॰ संजय गुप्ता
श्री कृिानस्वरूप
रो॰ नरेश जैन
रो॰ सागर अग्रवाल
डॉ॰ अनिलकुमारी
रो॰ प्रदीप सिंहल
श्री शिवानंद सिंह 'सहयोगी'
रो॰ नवल शाह
डॉ॰ रामगोपाल भारतीय
श्रीमती बीना अग्रवाल
श्रीमती मृदुला गोयल
रो॰ मुकुल गर्ग
श्री सियानंद सिंह त्यागी
श्री राकेश चक्र
रो॰ सी॰पी॰ रस्तौगी
डॉ॰ ज्ञानेदत्त हरित

रामपुर (उ॰प्र॰)

श्री शांतनु अग्रवाल
श्री नरेशकुमार सिंघल
डॉ॰ मीना महे

लखनऊ (उ॰प्र॰)

श्री महेशचंद्र द्विवेदी, आई॰पी॰एस॰
श्री दामोदरदत्त दीक्षित
डॉ॰ किरण पांडेय
श्री अनुपम मित्तल
श्रीमती रेणुका वर्मा
श्रीमती उषा गुप्ता
श्री अमृत खरे
श्री विनायक भूषण

सहारनपुर (उ॰प्र॰)

डॉ॰ विपिनकुमार गिरि
श्री श्रीपाल जैन ठेकेदार
श्री पूर्णसिंह सैनी, बेहट
श्री विनोद 'भृंग'
एम॰एल॰जे॰खेमका गर्ल्स कालेज
श्री सुनिल जैन 'राना'

उत्तराखंड

डॉ॰ आशा रावत, देहरादून

डॉ॰ राखी उपाध्याय, देहरादून
श्री अमीन अंसारी, जसपुर
श्री विपिनकुमार बक्शी, कोटद्वार
डॉ॰ अर्चना वालिया, कोटद्वार
धनौरी डिग्री कालेज, धनौरी
नेशनल इंटर कालेज, धनौरी

रुड़की

डॉ॰ अनिल शर्मा
श्री प्रेमचंद गुप्ता
श्री अविनाशकुमार शर्मा
श्री वासुदेव पंत
श्री मयंक गुप्ता
श्री अमरीष शर्मा
श्री उमेश कोहली
श्री जे॰पी॰ शर्मा
श्री मनमोहन शर्मा
श्री सुनील साहनी
श्री अशोक शर्मा 'आर्य'
श्री मेनपालसिंह
श्री संजय प्रजापति
श्री ओमदत्त शर्मा
श्री अरविंद शर्मा
श्री राजेश सिंहल
श्री ब्रिजेश गुप्ता
श्री संजीव राणा
श्री ऋषिपाल शर्मा
श्री राजपाल सिंह
बी॰एस॰एम॰ इंटर कालेज
आनंदस्वरूप आर्य सरस्वती विद्या मंदिर
योगी मंगलनाथ सरस्वती विद्या मंदिर
शिवालिक पब्लिक स्कूल, डंडेरा

काशीपुर

श्री समरपाल सिंह
श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ वी॰एम॰ गोयल
रो॰ डॉ॰ एस॰पी॰ गुप्ता
रो॰ डॉ॰ डी॰के॰ अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ एन॰के॰ अग्रवाल
रो॰ डॉ॰ रविनंदन सिंघल
रो॰ विजयकुमार जिंदल
रो॰ जितेंद्रकुमार
रो॰ प्रदीप माहेश्वरी
रो॰ रवींद्रमोहन सेठ
श्री प्रमोदसिंह तोमर

आंध्र, कर्नाटक, केरल, मिज़ोरम

श्री अनंत काबरा, हैदराबाद
श्री श्याम गोयनका, बैंगलौर
डॉ॰ दीपा के॰, बैंगलोर (कर्नाटक)
डॉ॰ एन॰ चंद्रशेखरन नायर, केरल
डॉ॰ बी॰ आर॰ राल्टे, आइजॉल

तमिलनाडु

डॉ॰ बी॰ जयलक्ष्मी, चेन्नई
डॉ॰ पी॰आर॰ वासुदेवन शेष, चेन्नई
श्री एन॰ गुरुमूर्ति, चेन्नई
सुश्री प्रतिभा मलिक, चेन्नई
सुश्री अपराजिता शुभ्रा, चेन्नई
श्री योगेशचंद्र पांडेय, चेन्नई
श्री महेंद्रकुमार सुमन, चेन्नई
श्री संजय ढाकर, चेन्नई
श्री प्रदीप साबू, चेन्नई
सुश्री स्वर्णज्योति, पांडिचेरी

पंजाब

रो॰ विजय गुप्ता, राजपुरा
कर्नल तिलकराज, जालंधर
श्री सागर पंडित, अमृतसर

उड़ीसा

श्री श्यामलाल सिंहल, राउरकेला

मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़

रो॰ रविप्रकाश लंगर, उज्जैन
डॉ॰ हरीशकुमार सिंह, उज्जैन
डॉ॰ अशोक भाटी, उज्जैन
श्री माणिक वर्मा, भोपाल
श्री प्रदीप चौबे, ग्वालियर
श्री उमाशंकर मनमौजी, भोपाल
श्री जगदीश जोशीला
श्री विनोदशंकर शुक्ल, रायपुर
श्री रामेश्वर वैष्णव
श्री गजेंद्र तिवारी, बागबाहरा
श्री धीरेंद्रमोहन मिश्र, लक्खीसराय
डॉ॰ रामलखन राय, समस्तीपुर
श्रीमती सीमाकुमारी, समस्तीपुर

महाराष्ट्र, गुजरात

रो॰ सज्जन गोयनका, मुंबई
श्री जावेद नदीम, मुंबई
रो॰ डॉ॰ माधव बोराटे, पुणे
श्रीमती रिज़वाना कश्यप, पुणे
रो॰ सुरेश राठौड़, मुंबई
डॉ॰ अश्विनीकुमार 'विष्णु', अमरावती
डॉ॰ शैलजा सुरेश माहेश्वरी, अमलनेर
श्री मधुप पांडेय, नागपुर
श्री सुभाष काबरा
श्री अरुणा अग्रवाल, पुणे
श्री सागर खादीवाला, नागपुर
डॉ॰ मिर्ज़ा एच॰एम॰, सोलापुर
श्री वनराज आर्ट्स, कॉमर्स कालेज, धरमपुर (बलसाड)
श्री मोरारजी देसाई आर्ट्स एंड कॉमर्स कालेज, वीरपुर (तापी)

राजस्थान

रो॰ डॉ॰ अशोक गुप्ता, जयपुर
रो॰ अजय काला, जयपुर
श्री कमल कोठारी, जयपुर
रो॰ विवेक काला, जयपुर
श्री आर॰सी॰ अग्रवाल, जयपुर
श्री राजीव सोगानी, जयपुर
श्री सुरेश सबलावत, जयपुर
श्री कमल टोंगिया, जयपुर
श्री मुकेश गुप्ता, जयपुर
श्री विनोद गुप्ता, जयपुर
श्री गिरधारी शर्मा, जयपुर
रो॰ एस॰के॰ पोद्दार, जयपुर
रो॰ राजेंद्र सांघी, जयपुर
रो॰ आर॰पी॰ गुप्ता, जयपुर
श्री जयपुर चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंड॰
डॉ॰ शंभुनाथ तिवारी, भीलवाड़ा
डॉ॰ दयाराम मैठानी, भीलवाड़ा
श्री मुरलीमनोहर बासोतिया, नवलगढ़

हरियाणा

श्री विकास, तहसील महम, रोहतक
डॉ॰ स्नेहलता, रोहतक
डॉ॰ सुदेशकुमारी, जींद
श्री हरिदर्शन, सोनीपत
डॉ॰ प्रवीनबाला, जुलाना मंडी
श्रीमती अनिलकुमारी, घिलौड़ कलाँ
डॉ॰ प्रवीणकुमार वर्मा, फरीदाबाद
श्रीमती रेखारानी, फरीदाबाद
श्री अभिषेक गुप्ता, फरीदाबाद
श्रीमती सविताकुमारी, सोनीपत
श्रीमती सुमनलता, रोहतक
श्री सुरेशकुमार, भिवानी
डॉ॰ सविता डागर, चरखी दादरी
छोटूराम किसान कालेज, जींद
ए॰पी॰जे॰ सरस्वती कालेज, चरखी दादरी
विनोदकुमार कौशिक, चरखी दादरी
डी॰सी॰ मॉडल सीनि सेकेंडरी स्कूल फरीदाबाद
डॉ॰ विजय इंदु, गुड़गाँव
डॉ॰ विधु गुप्ता, गुड़गाँव

आपसे कुछ बातें...

इराक़ का शहर बसरा। लोगों ने देखा कि एक अर्द्धविक्षिप्त महिला अपने एक हाथ में पानी की बाल्टी और दूसरे हाथ में जलती हुई आग की अँगीठी लिए हुए बढ़ती चली जा रही है। अभी सवेरा था और धरती पर सूरज की धूप अभी नहीं फैली थी। महिला कुछ दूर आगे बढ़ी थी कि सामने से बसरा के एक विद्वान आ गए। उन्होंने महिला का रास्ता रोका और पूछा–'माई, तुम यह आग और पानी एक साथ कहाँ लिए जा रही हो?'

महिला चुप रही। विद्वान ने अपना प्रश्न फिर से दोहराया। महिला ने कहा, 'मैं इस पानी से नरक की आग बुझाऊँगी और इस आग से स्वर्ग को फूँक दूँगी।'

महिला की बात सुनकर विद्वान के होंठों पर व्यंग्य-भरी हँसी उभर आई। वह बोले, 'माई, तुम ऐसा क्यों करना चाहती हो?'

विद्वान का प्रश्न सुनते ही महिला ने उत्तर दिया–'ताकि लोग ईश्वर की पूजा स्वर्ग की लालसा और नरक के भय से न करें। उनकी पूजा में श्रद्धा हो, निष्ठा हो; भय और लालसा का अंश न हो।'

यह केवल एक उदाहरण है। आपने देखा कि लघुकथा किसी विशेष क्षण में उपजे भाव, घटना या विचार की संक्षिप्त और शिल्प से तराशी गई प्रभावशाली अभिव्यक्ति है। लघुकथा संक्षिप्त होती है और सांकेतिकता से परिपूर्ण। वह जीवन की व्याख्या लाक्षणिक रूप से करती है। उसमें वर्णन और विवरण का अवकाश नहीं होता। वहाँ संकेत और व्यंजना से काम चलाया जाता है।

यदि हम लघुकथा के इतिहास पर विचार करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि लघुकथा कोई आज की नई विधा नहीं है। प्राचीनकाल से ही इसका अस्तित्व था। प्राचीन संस्कृत साहित्य में लघुकथाएँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती हैं। लघुकथा का प्रारंभिक रूप ऋग्वेद की उन कथाओं में प्राप्त है, जिन्हें हम यम-यमी, पुरुरवा-उर्वशी, पितर पूजा आदि नामों से जानते हैं। इसके अतिरिक्त पंचतंत्र, हितोपदेश तथा जातक कथाओं में लघुकथा का प्रारंभिक रूप प्राप्त होता है। वैदिक काल की लघुकथाएँ बौद्ध, जैन तथा महाभारत की लघुकथाएँ भी इसकी उत्पत्ति के आदिस्रोत हैं।

इसी प्रकार प्राचीनकाल की बोधकथाओं को तब की लघुकथाओं के रूप में देखा जा सकता है। यद्यपि इन बोधकथाओं का स्वरूप आधुनिक लघुकथाओं से नितांत भिन्न था, फिर भी दोनों के कतिपय मूलभूत तत्त्वों में साम्य था। यह साम्य उद्देश्य की दृष्टि से है। प्राचीन बोधकथाएँ एक निश्चित उद्देश्य को दृष्टिपथ में रखकर लिखी जाती थीं। तब उनका उद्देश्य आदर्श-प्रधान या नीतिगत होता था। ये बोधकथाएँ जीवन से उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मानव-समाज को उपयुक्त मार्ग चुनने का अवसर प्रदान करती थीं।

आज परिस्थितियाँ बिल्कुल बदल गई हैं। जैसे-जैसे सुख-संपन्नता और सुविधाओं में वृद्धि हुई है, जीवन की भगदौड़ बहुत बढ़ गई है। परिणामत: लोगों के पास उतना समय नहीं रहा है कि वे आराम से बैठकर लंबे-लंबे उपन्यास या कहानियाँ पढ़ सकें। ऐसी स्थिति में छोटे आकार की रचनाएँ ही पाठक को संतुष्ट करने का विकल्प बनती हैं। पाठक कुछ ऐसी रचनाएँ चाहते हैं, जिन्हें चलते-फिरते, उठते-बैठते, बातचीत करते हुए भी बीच-बीच के अंतराल में पढ़ा जा सके। हाँ, ये रचनाएँ भले ही छोटी हों, किंतु जीवन की माँग को पूर्ण करने में समर्थ और सक्षम हों।

जैसा कि हम जानते हैं कि प्राचीनकाल में लघुकथाएँ या कहें बोधकथाएँ ही एकमात्र संप्रेषण का माध्यम थीं। उस काल की लघुकथाएँ पौराणिक साहित्य को समृद्ध करती हैं। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि लघुकथा का जन्म तो वैदिकयुग में ही हो चुका था, किंतु समय और परिस्थितियों के बदलाव में लघुकथा के स्वरूप में भी व्यापक परिवर्तन परिवर्तन आया है।

लघुकथा परंपरागत, निरर्थक और खोखले जीवनमूल्यों पर प्रहार करती है और नवीन एवं सार्थक जीवनमूल्यों की पृष्ठभूमि तैयार करती है। लघुकथा प्राय: समस्या की ओर संकेत करती है और शेष कार्य अपने पाठक पर छोड़ देती है। वह अप्रत्यक्ष रूप में समाधान के लिए प्रेरित करती है। अच्छी लघुकथा में स्थितियों का निदान लेखक नहीं सुझाता। उसमें यह निदान पाठक द्वारा खोजा गया अधिक होता है।

जैसा कि पहले कहा गया है कि आज हमारे जीवन में उतना अवकाश नहीं है कि हम लंबी-लंबी रचनाएँ पढ़ सकें। ऐसी स्थिति में छोटे आकार की रचनाएँ ही पाठक को संतुष्ट कर पाती हैं। इसी वस्तुस्थिति को सामने रखते हुए इस अंक की योजना तैयार की गई है। इस अंक का संपादन-भार श्री रामेश्वर काम्बोज जी ने सहर्ष स्वीकार किया, इसके लिए शोध-दिशा परिवार उनका विशेष आभारी है।

संपादकीय

तमाम अवरोधों और उपेक्षाओं के बावजूद लघुकथा की यात्रा जारी है। कभी फिलर की तरह इस्तेमाल की जाने वाली लघुकथा पाठ्य पुस्तकों तक पहुँच गई है। हिंदी साहित्य अकादमी और दिल्ली हिंदी अकादमी में 15 मार्च और 27 मार्च 2016 में किया गया लघुकथा-पाठ आशान्वित करता है। विशेषांकों की परंपरा में 2017 के आरंभ में 'साहित्य अमृत' के विशेषांक की प्रस्तुति, संपादन में 'पड़ाव और पड़ताल', 'लघुकथा अनवरत' नए-पुराने रचनाकारों के लिए महत्त्वपूर्ण सेतु के रूप में किए गए प्रयास हैं। पंजाबी में मिन्नी त्रैमासिक और हिंदी में संरचना वार्षिकी का निरंतर प्रकाशन, अंतर्जाल पर लघुकथा डॉट कॉम वेब साइट और जनगाथा ब्लॉग की सक्रियता ने बहुत से नए रचनाकारों को मंच दिया है। शोध दिशा का यह अंक इस इसी यात्रा से जुड़ा है।

इस अंक में लगभग 94 नए और अन्य पुराने लघु- कथाकारों की रचनाएँ शामिल की गई हैं। विषयवस्तु का वैविध्य सभी नए-पुराने लेखकों में देखने को मिलेगा। आजकल देश में जो संकीर्णता और सांप्रदायिकता का डेंगू फैला हुआ है, 'मेढकों के बीच' उसकी गहन व्याख्या करती है। विशिष्ट हो या सामान्य, प्रेम सबके लिए प्राणवायु है। 'कलियाँ गुलाब की' इस बात का अहसास कराती है, तो 'सम्मोहन' इसके उदात्त रूप को, 'जानवर' प्रेम की ओट में पलनेवाले कामुक पशु को प्रस्तुत करती है। शिक्षा-जगत् की हास्यास्पद स्थिति और घोर उपेक्षा 'लगा हुआ स्कूल', 'एक और जाल' में उजागर होती है। दफ़्तरी व्यवस्था में भ्रष्टाचार हमारे समाज का सबसे बड़ा आतंकवाद है। हर शाख पे, वन महोत्सव, काक्रोच, चक्कर, भ्रष्टाचार इसके स्याह पक्ष हैं, तो बिग बॉस, सूद समेत, दस्तूर इसके उजले पक्ष भी हैं, जो पूरी त्वरा से लघुकथा में उभरे हैं। सत्ता और राजनीति के छल-छद्म और शोषण को 'रात की परछाइयाँ', 'किसान की रोटी' और 'ब्रेकिंग न्यूज' में देखा जा सकता है।

रिश्तों की ओट में दैहिक शोषण की शर्मनाक पशुता निरंतर बढ़ती जा रही है। औरत को जितना खतरा बाहर से है, उससे ज्यादा ख़तरा अपनों के बीच है। इस कड़वे सच को लिहाफ़, भूत, फटी चुन्नी में बहुत शिद्दत से कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। तीनों रचनाकार नए हैं। प्रस्तुति में सांकेतिकता का आश्रय लिया गया है, जो रचनाओं की विशिष्टता है। सकारात्मक जीवनमूल्यों की छवि–फ़र्क पड़ेगा, ख़ुशबू, साड़ी, कर्ज़दार, मज़हब, फूल, छू लिया में देख सकते हैं। 'छू लिया' झटके से नहीं, वरन् धीरे से संकीर्ण सोच पर कारगर प्रहार करती है। नए विषयों के संधान में स्थापित लेखकों के साथ-साथ नए लेखक भी सजग हैं। अनुयायी, डिस्चार्ज, बीमार आदमी, नशा, अजनबी जैसे हमसफ़र, तीन संकल्प, मुखौटे, चूहे पाठकों को प्रभावित करेंगी। पारिवारिक परिवेश की लघुकथाओं की संख्या अधिक है। इनमें झूठा अहम्, अनमोल ख़ज़ाना, गहना, रस्म, भूकंप, ध्यान-पूजा परिवार का एक पक्ष है, तो इतनी दूर, दूसरा जल्लाद, दूरी, बाहरवाला कमरा, मुखौटे, करवाचौथ का कड़वा सच, ए॰टी॰एम॰ में दूसरा पक्ष है, जो परिवार और समाज की दुर्बलताओं को रेखांकित करता है। दूसरा जल्लाद एक अलग तरह की लघुकथा है, जिस पर खाप के क्रूर निर्णय की भयातुर धमक पूरा परिवार महसूस करता है।

लघुकथाकारों की सूक्ष्म दृष्टि जीवन के विविध पक्षों पर गई है। 'थर्ड जेंडर' भी लघुकथाओं का विषय बना है। पारस दासोत की 2013 में प्रकाशित किन्नर केंद्रित लघुकथाएँ उनकी मानवीय संवेदना की आँसू-भीगी करुण कथाएँ हैं। अप्रत्याशित, 'किन्नर ही तो था' कथाओं में उनके अछूते दर्द की मार्मिक प्रस्तुति है। शरीर के 'बौनेपन' के कारण अनुभूतियाँ तो बौनी नहीं हो सकतीं। 'पापा के मजबूत कंधे' का बौना पिता खुद अपने रोते हुए बच्चे को कंधे पर बिठाकर आतिशबाजी दिखाने का प्रयास करता है। मल्लिका के फूल, बाजरे की रोटी, माटी कहे और अस्तित्व लघुकथाएँ कम-से-कम शब्दों में जीवन की गहन पीड़ा की व्याख्या हैं।

'शोध दिशा' लघुकथा को निरंतर बढ़ावा देती रही है। आदरणीय डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल जी ने विगत वर्षों की भाँति लघुकथा को एक सशक्त मंच दिया है। सीमित समय में जैसा संभव था, छोटा-सा प्रयास किया है। जिनकी रचनाएँ इस अंक में शामिल की गई हैं, मैं उन सबका आभारी हूँ। 25 दिसंबर को लघुकथा के वरिष्ठ हस्ताक्षर डॉ॰ सतीश दुबे का देहावसान सबको व्यथित कर गया। सभी रचनाकारों की ओर से डॉ॰ दुबे जी को विनम्र श्रद्धांजलि! इस अंक में उनकी लघुकथा 'श्रद्धांजलि' का भी समावेश किया गया।

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
rdkamboj49@gmail.com

अनुक्रम

मेढकों के बीच/**सुकेश साहनी** 9
हत्यारे/**छाया सक्सेना 'प्रभु'** 9
झूठा अहं/**सतीशराज पुष्करणा** 10
कलियाँ गुलाब की/**बलराम अग्रवाल** 10
फर्क पड़ेगा/**मुरलीधर वैष्णव** 10
रात की परछाइयाँ/**मधुदीप** 12
माटी कहे/**आभा सिंह** 12
लगा हुआ स्कूल/**अशोक भाटिया** 13
अनमोल खजाना/**श्यामसुंदर अग्रवाल** 14
रोबोट/**ज्योत्स्ना सिंह** 14
जानवर/**सुभाष नीरव** 14
रस्म/**अनिता ललित** 16
अनुयायी/**राजेश उत्साही** 16
किसान की रोटी/**डॉ॰ उपेंद्रप्रसाद राय** 17
बाबू जी का श्राद्ध/**रेणु चंद्रा माथुर** 17
डिस्चार्ज/**मार्टिन जॉन** 18
भ्रष्टाचार/**कुमार गौरव अजितेंदु** 18
उत्सव/**सीमा स्मृति** 19
फेसबुक/**जगदीशराय कुलरियाँ** 19
वन महोत्सव/**अंकुश्री** 20
ध्यान-पूजा/**अनिता मंडा** 20
हरी बिल्ली/**डॉ॰ संध्या तिवारी** 21
बड़ी लूट/**प्रभात दुबे** 21
कलयुगी विक्रमादित्य/**डॉ॰ श्यामसखा श्याम** 22
एक और जाल/**डॉ॰ गोपालबाबू शर्मा** 22
धंधा/**अशोक अंजुम** 22
उपहार/**डॉ॰ मंजुश्री गुप्ता** 23
अफवाह/**प्रेम गुप्ता 'मानी'** 23
कॉक्रोच/**भावना सक्सेना** 24
भूत/**सीमा सिंह** 24
इतनी दूर/**कमल चोपड़ा** 25
करवा चौथ का कडुआ सच/**अरुणकुमार गौड़** 25
बाजरे की रोटी/**डॉ॰ पूरनसिंह** 26
नीयत/**सोनी धवन** 26
हर शाख पे.../**मिथिलेशकुमारी मिश्र** 27
इक्कीसवीं सदी की बेटी/**आकांक्षा यादव** 27
मुखौटे/**डॉ॰ भावना कुँअर** 28
बिग बॉस/**माधव नागदा** 28
अजनबी जैसे हमसफर/**गौतमकुमार सागर** 29
घर/**ऋता शेखर 'मधु'** 29
संस्कार/**डॉ॰ हरीश नवल** 30
बहुवचन का सुख/**संतोष सुपेकर** 30
इनाम या घूस?/**महेशचंद्र द्विवेदी** 30
लिहाफ/**डॉ॰ छवि निगम** 31
दूसरा जल्लाद/**रामकुमार आत्रेय** 32
सजा/**श्यामसुंदर 'दीप्ति'** 32
दीवार/**माला झा** 33
दुनिया का सबसे सुंदर गुलाब/**कमल कपूर** 33
दूरी/**राधेश्याम भारतीय** 33
साड़ी/**मंजूषा दोशी** 34
कुंभ का मेला/**अर्चना चतुर्वेदी** 34
अस्तित्व/**बी॰एल॰ आच्छा** 35
कर्ज दार/**डॉ॰ पूर्णिमा राय** 35
दंगा युग/**डॉ॰ मीना अग्रवाल** 36
बीमार आदमी/**रणजीत टाडा** 36
पापा के मजबूत कंधे/**वाणी दवे** 36
खुशबू/**सुदर्शन रत्नाकर** 37
मल्लिका के फूल/**सुधा गुप्ता** 38
भूख के जींस/**वंदना सहाय** 38
ए॰टी॰एम॰/**रोचिका शर्मा** 39
फटी चुन्नी/**सत्या शर्मा 'कीर्ति'** 39
अपनी-अपनी सोच/**शशि पाधा** 40
भूख/**रश्मि तरीका** 40
आदमी के बच्चे/**प्रेम जनमेजय** 41
शादी का शगुन/**रामनिवास 'मानव'** 41
भूकंप/**प्रियंका गुप्ता** 42
किन्नर ही तो था/**नीलिमा शर्मा** 42
सूद समेत/**दीपक मशाल** 43
बाहर वाला कमरा/**डॉ॰ शील कौशिक** 43
अप्रत्याशित/**डॉ॰ नीरज सुधांशु** 44
ब्रेकिंग न्यूज/**सविता मिश्रा** 44
नशा/**सारिका भूषण** 45
बयार/**पवित्रा अग्रवाल** 45
स्वर्ग के एजेंट/**डॉ॰ श्याम बाबू** 46
श्रद्धांजलि/**डॉ॰ सतीश दुबे** 46
मजहब/**कृष्णा वर्मा** 47
चक्कर/**डॉ॰ शैल चंद्रा** 47
दस्तूर/**कविता वर्मा** 48
टकराती रेत/**सुधा भार्गव** 48
बाबा का चरणामृत/**विनोद ध्रब्याल राही** 49

तीन संकल्प/**चंद्रेशकुमार छतलानी** 49
अवमूल्यन/**विभा रश्मि** 50
फूल/**डॉ॰ पद्मजा शर्मा** 50
लरजते पेड़/**रामकुमार घोटड़** 51
सम्मोहन/**रश्मि शर्मा** 51
ऑनलाइन बॉयफ्रेंड/**सुधीर मौर्य 'सुधीर'** 51
मुखौटे/**रीता गुप्ता** 52
योग्यता/**कृष्णकुमार यादव** 52
चूहे/**सुधीर द्विवेदी** 53
परंपरा/**सुबोध श्रीवास्तव** 53
जबान का रस/**शोभना दरबारी** 54
छू लिया/**जानकी बिष्ट वाही** 54
एजेण्डा/**रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'** 55
गहना/**माला वर्मा** 56

धरोहर

शंकर पुणतांबेकर

26 मई,1925 में कुंभराज (गुना, म॰प्र॰) में जन्म
31 जनवरी 2016 को देहावसान

अध्यक्ष और चोर

एक रात की बात है, अधिक देर काम करते रहने के कारण अध्यक्ष महोदय दफ्तर में ही सो गये। पिछले दरवाजे से एक चोर घुस आया। उसने तिजोरी खोली।

अध्यक्ष महोदय ने उसे आते देख लिया था। चोर ने जब तिजोरी खोली तो वे उससे बोले, 'अरे, तुम पिछले दरवाजे से क्यों आए? यहाँ तो अगले दरवाजे से ही स्वागत किया जाता है।'

चोर पहले तो सहमा फिर अध्यक्ष की ओर देखता रह गया।

अध्यक्ष ने आगे कहा, 'कितना अच्छा है, तुम तिजोरियाँ भी खोल लेते हो! तुम जैसे लोगों का तो हमारे यहाँ विशेष स्वागत है। बस, तुम हम लोगों में चले आओ।'

चोर ने कहा, 'मैं तुम लोगों में आ तो जाऊँ, पर मेरी कुछ शर्तें हैं।'

अध्यक्ष ने कहा, 'तुम्हारी जो भी शर्तें हों, हमें मंजूर है। तुम्हें एक बात बताऊँ! मैं भी कभी तुम्हारी ही तरह चोर था और तुम्हारी ही तरह एक रात यहाँ आया था।'

चोर भला अब क्या बोलता!

आम आदमी

नाव चली जा रही थी।

मझधार में नाविक ने कहा, 'नाव में बोझ ज्यादा है, कोई एक आदमी कम हो जाए तो अच्छा, नहीं तो नाव डूब जाएगी।'

अब कम हो जाए तो कौन कम हो जाए? कई लोग तो तैरना नहीं जानते थे, जो जानते थे उनके लिए भी परले पार जाना खेल नहीं था।

नाव में सभी प्रकार के लोग थे–डॉक्टर, अफसर, वकील, व्यापारी, उद्योगपति, पुजारी, नेता के अलावा आम आदमी भी। डॉक्टर, वकील, व्यापारी ये सभी चाहते थे कि आम आदमी पानी में कूद जाए। वह तैरकर पार जा सकता है, हम नहीं।

उन्होंने आम आदमी से कूद जाने को कहा, तो उसने मना कर दिया। बोला, 'मैं जब डूबने को हो जाता हूँ तो आपमें से कौन मेरी मदद को दौड़ता है, जो मैं आपकी बात मानूँ?'

जब आम आदमी काफी मनाने के बाद भी नहीं माना, तो ये लोग नेता के पास गए, जो इन सबसे अलग एक तरफ बैठा हुआ था। इन्होंने सब-कुछ नेता को सुनाने के बाद कहा, 'आम आदमी हमारी बात नहीं मानेगा, तो हम उसे पकड़कर नदी में फेंक देंगे।'

नेता ने कहा, 'नहीं-नहीं, ऐसा करना भूल होगी। आम आदमी के साथ अन्याय होगा। मैं देखता हूँ उसे। मैं भाषण देता हूँ। तुम लोग भी उसके साथ सुनो।'

नेता ने जोशीला भाषण आरंभ किया, जिसमें राष्ट्र, देश, इतिहास, परंपरा की गाथा गाते हुए, देश के लिए बलि चढ़ जाने के आह्वान में हाथ ऊँचा कर कहा, 'हम मर मिटेंगे, लेकिन अपनी नैया नहीं डूबने देंगे, नहीं डूबने देंगे, नहीं डूबने देंगे।

सुनकर आम आदमी इतना जोश में आया कि वह नदी में कूद पड़ा।

सुकेश साहनी

मेढ़कों के बीच

वर्षों पहले मैंने अपने बेटे को एक कहानी सुनाई थी, जो कुछ इस तरह थी–

एक बार की बात है, रात के अँधेरे में एक गाय फिसल कर नाले में जा गिरी।

सुबह उसके इर्द-गिर्द बहुत से मेढक जमा हो गए।

'आखिर गाय नाले में गिरी कैसे?'–उनमें से एक मेढक टरटराया, 'हमें इस पर गहराई से विचार करना चाहिए।'

'मुझे तो दाल में कुछ काला लगता है!' दूसरे ने कहा।

'कुछ भी कहो।' तीसरा मेढक बोला, 'अगर पुण्य कमाना है, तो इसे बाहर निकालना होगा।'

'मरने दो!' चौथा टर्राया, 'हमारी नाक के नीचे रोज ही सैकड़ों गाएँ-बछड़े काटे जाते हैं, तब हम क्या कर लेते हैं?'

'हमने तो चूड़ियाँ पहन रखी हैं। ' पाँचवें मेढक की टर्र-टर्र।

'भाइयो!' वहाँ खड़े एक बुजुर्ग ने उन सबको शांत करते हुए कहा, 'अगर ये गाय न होकर कुत्ता-बिल्ली होता तो क्या हमें इसे मर जाने देना था?'

एकबारगी वहाँ चुप्पी छा गई। वे सब उस बुजुर्ग को शक भरी नजरों से घूरने लगे। अगले ही क्षण वे सबके सब उस पर टूट पड़े। उन्होंने उसे लहूलुहान कर नाले में धकेल दिया। इस घटना से मेढकों में भगदड़ मच गई। वे सब सुरक्षित स्थलों में दुबक गए। घटनास्थल पर सन्नाटा छा गया।

'फिर क्या हुआ?' मुझे चुप देखकर बच्चे ने पूछा था।

'फिर?...वहाँ से गुजर रहे एक आदमी ने रस्सी की मदद से गाय को नाले से बाहर निकाल दिया। अपनी जमात से बाहर वाले का ऐसा करना मेढकों के गले नहीं उतरा। उनको इसमें भी कोई साजिश दिखाई देने लगी। यह बात कानों-कान पूरी मेढक बिरादरी में फैल गई। वे समवेत स्वर में जोर-जोर से टर्राने लगे।'

कहकर मैं चुप हो गया था।

'अब मेढक क्यों टर्रा रहे थे, पापा?'

'अब वे इस बहस में उलझे हुए थे कि गाय को बाहर निकालने वाला हिंदू था कि मुसलमान।'

'फिर!'

'फिर क्या? उनका टरटराना आज भी जारी है।'

बच्चा सोच में पड़ गया था। थोड़ी देर बाद उसने पूछा था, 'पापा, आपको तो पता ही होगा कि वह आदमी कौन था?'

'बेटा, मुझे इतना ही पता है कि वह एक अच्छा आदमी था,' मैंने उसकी भोली आँखों में झाँकते हुए कहा था, 'वह हिंदू था या मुसलमान, यह जानने की कोशिश मैंने नहीं की; क्योंकि तुम्हारे दादा जी ने मुझे बचपन में ही सावधान कर दिया था कि जिस दिन मैं इस चक्कर में पड़ूँगा, उसी दिन आदमी से मेढक में बदल जाऊँगा।'

इसके बाद मेरे बेटे ने मुझसे इस बारे में कोई सवाल नहीं किया था और मुझसे चिपककर सो गया था।

मुझे नहीं मालूम कि यह कहानी मेरे बच्चे के मतलब की थी या नहीं, उसकी समझ में आई थी या नहीं, पर इतना जरूर है कि उस दिन के बाद वह 'मेढकों' से जरा दूर ही रहता है।

185, **उत्सव, महानगर, पार्ट** 2
बरेली 243122

छाया सक्सेना 'प्रभु'

हत्यारे

नई बसी कॉलोनी में मि॰ सिंह के घर के सामने आम का वृक्ष लगा था। आम का वृक्ष बहुत पुराना था। वसंत ऋतु के दिनों में पूरा वृक्ष बौर से भर गया। उसमें अनेक पक्षियों के घोसले बने थे, बैसाख के आखिरी दिनों में पूरा वृक्ष हरे आम के फलों से लदा हुआ था।

जबसे मि॰ सिंह घर में रहने आए थे, तबसे यह वृक्ष उनकी आँखों में खटक रहा था। वे अपने पड़ोसियों से आए-दिन कहते रहते कि जब आम बड़े होंगे, तो लोग आम तोड़ने के लिए पत्थर मारेंगे, जिससे मेरे घर की खिड़कियों के काँच टूट जाएँगे। एक-दिन मौका देखकर उन्होंने आम का वृक्ष कटवाना शुरू कर दिया। जब तक लोग विरोध करते, तब तक वृक्ष ठूँठ में तब्दील हो गया। बेशर्मी की हद तो इतनी कि वो उस ठूँठ को भी खोदकर उसमें अँगारे भर रहे थे, ताकि किसी भी हालत में वहाँ नई पौधा न पनप सके।

वृक्ष के कट जाने से पक्षियों के घोसले नष्ट हो गए, दिन-भर कोयल की कुहू-कुहू व पक्षियों के कलरव से जो आनंद हम कॉलोनीवासियों को मिलता था, उससे हम सभी वंचित हो गए।

आजकल मि॰ सिंह वहाँ अपनी नई कार खड़ी करते हैं।

माँ नर्मदे नगर, म॰न॰ 12
फेज-1, बिलहरी, जबलपुर (म॰प्र॰)

सतीशराज पुष्करणा

झूठा अहं

आज पति-पत्नी एक-दूसरे से रुष्ट हैं। बात कोई विशेष नहीं थी। रामानंदजी अपने साहित्यिक मित्रों के मध्य बैठे बातचीत में खोए थे और उनकी पत्नी सुशीलादेवी पर्दे की ओट से बार-बार संकेत से उन्हें बुला रही थी। रामानंद देख रहे थे, किंतु बातचीत एवं उसका विषय कुछ इस प्रकार चल रहा था कि वे उसको बीच में छोड़कर जाना साहित्यिक गोष्ठी एवं मित्रों का अपमान एवं मर्यादा का उल्लंघन समझ रहे थे। यह उचित भी था। बस, पत्नी ने इसे अपना अपमान एवं प्रतिष्ठा का प्रश्न समझ लिया।

मित्रों के जाते ही वह कमरे में गए और बोले, 'तुम शायद कुछ कह रही थीं!'

सुशीलादेवी इतने क्रोध में थीं कि कोई उत्तर न दिया। हाव-भाव देखकर रामानंद जी समझ गए कि आज कैकेयी कोप भवन में है।

अपराध-बोध महसूस करते हुए उन्होंने पुनः कहा, 'देखो! तुम्हारी नाराजगी वाजिब हो सकती है, किंतु मेरी स्थिति एवं विवशता को भी तो समझने की चेष्टा करो। पत्नी होने के नाते ये सब तुम महसूस नहीं करोगी तो कौन करेगा?'

सुशीला देवी ने पति की ओर ऐसे देखा कि यदि उसका वश चले तो शायद उन्हें सूली पर चढ़ा दे।

'अरे भाई! अब गुस्सा थूक भी दो! जो हुआ, सो हुआ।' आपस में कड़वाहट न बढ़े, यह विचार करके उन्होंने समर्पण करते हुए कहा, 'अच्छा बाबा! अब जाने भी दो, भविष्य में ध्यान में रखूँगा, तुम्हारी भावनाओं एवं अहं को चोट न लगे। अब तो बोलो, कुछ तो बोलो। वह बात तो मुझे बताओ, जिसके लिए तुम इतनी नाराज हो गईं!'

किंतु सुशीलादेवी न मानीं। वह शायद थोड़ी खुशामद और चाहती थीं और मन में सोच रही थीं कि एक-दो बार मान-मनौवल और हो, तो थोड़ा कह-सुनकर नॉर्मल हो जाऊँ। किंतु रामानंद आखिर पुरुष थे, साहित्यकार थे। उनका अहं भी जाग उठा और उन्होंने भी कसम खा ली कि जब तक सुशीला को अपनी भूल का अहसास नहीं हो जाएगा, वह भी बात नहीं करेंगे।

अब स्थिति बड़ी विचित्र थी। घर में केवल दो प्राणी, पति और पत्नी। बीच-बचाव की कोई गुंजाइश नहीं। पत्नी प्रतीक्षा में रही, जब उन्हें भूख लगेगी या चाय की तलब होगी, तो बोलेंगे ही। आज तो बाहर दुकानें भी बंद हैं। रविवार है न! पत्नी यह सब सोचकर अपने आपमें संतुष्ट एवं प्रसन्न है।

रामानंद जी को भूख बहुत जोर से लगी है। सोचते हैं कि एक तो गोष्ठी में इतना बोलना पड़ा कि थकान हो गई और अब भूख भी कस कर लगी है। वह उठे और उन्होंने एक गिलास भरकर पानी पी लिया। मगर फिर भी मन में कई प्रकार की अजीब-सी बेचैनियाँ हैं, जिन्हें स्पष्ट तौर पर स्वयं वह भी नहीं समझ पा रहे हैं।

उधर पत्नी ने भोजन बनाना आरंभ कर दिया है। रसोई में हल्के-हल्के गैस का चूल्हा जलने का स्वर, कुछ बर्तनों की खटपटाहट सुनाई पड़ी। बर्तनों की खटखट से उनके साहित्यिक मन ने उन्हें समझाया, भाई! जहाँ दो बर्तन होते हैं, खटपट तो होती ही है। किंतु अगले ही क्षण उनका पुरुष-मन फुफकार उठा, 'मैंने तो सत् प्रयास किया ही था, मगर उसी ने मेरी भावनाओं पर तुषारापात कर दिया।'

रसोई से आती सब्जी बनने की सुगंध, फिर रोटियों की सौंधी-सौंधी खुशबू। मिला-जुलाकर स्थिति यह थी कि भूख बढ़ती ही जा रही थी। साहित्यिक मन कहता कि छोड़ो! जीवन-संगिनी है। आपस में क्या मान और क्या स्वाभिमान! किंतु पौरुष है कि समझौते के निकट ही नहीं जाने देता।

सुशीलादेवी पति के मनोभावों को समझ रही है और इस प्रतीक्षा में है कि वह बस एक बार बोल दें, तो सारी बात समाप्त।

अब खाना तैयार है। वह परस रही है। पति का चेहरा इस समय उसे बहुत बेचारा-सा लग रहा है। ऐसा चेहरा देखकर उसके मन में ऐसा प्यार उमड़ रहा है, जो एक बेटे के लिए माँ के मन में उमड़ता है। पत्नी भी तो एक तरह से माँ ही होती है। बस एक ही तो अंतर...स्त्री किसी भी भूमिका में हो, मूलतः वह माँ ही होती है।

रामानंद परसे जा रहे खाने को इस प्रकार देख रहे हैं कि मन बार-बार ललचा रहा है। उन्हें लगता है कि उनका पुरुष-मन पराजित हो जाएगा। वह अपने को नियंत्रित किए हुए हैं, किंतु उन्हें बार-बार लगता है कि मन उनके नियंत्रण से बाहर होता जा रहा है और अब वह समर्पण कर ही देगा।

पत्नी ने टेबल पर खाना लगाते हुए ममता-भरी दृष्टि से पति की ओर देखा और कहा, 'आइए! खाना खा लीजिए।'

रामानंद बाबू थोड़ा इतराते हुए बोले, 'नहीं! मुझे भूख नहीं है।'

'वह तो मैं समझ ही रही हूँ। किंतु फिर भी मेरी खुशी के लिए खा लीजिए!'

रामानंद बाबू भीतर तक भीग गए और झटपट खाने की टेबल की ओर बढ़ गए।

द्वारा बिहार सेवक प्रेस
'लघुकथानगर', पी॰एन॰ सिन्हा कंपाउंड
भिखना पहाड़ी, महेंद्रू
पटना 800006 **(बिहार)**

बलराम अग्रवाल

कलियाँ गुलाब की

जैसे ही गाड़ी को पार्क के किनारे रोका, एक केशोर्योन्मुख लड़की ने खिड़की के बंद शीशे को ठकठकाया। उसके एक हाथ में गुलाब के नन्हे-नन्हे अनेक गुलदस्ते थे। एक-एक खिली-अधखिली कली को उसकी लंबी टहनी से काँटे तराशकर हरी पत्तियों-समेत पारदर्शी पन्नी में शंक्वाकार गुलदस्ते का रूप दिया गया था। नीरजा ने दरवाजा खोला और बाहर आ खड़ी हुई।

'गुलदस्ता लो न मेमसाब', दूसरी ओर ड्राइविंग सीट से उतरकर बाहर आ खड़े संजय की ओर इशारा करते हुए उसने तुरंत ही उससे विनती की, 'साब को देने!'

'साब को देने के लिए!' नीरजा ने मुस्कुराते हुए पूछा, 'क्यों?'

'प्यार...व्यार...।'

'अच्छा, हमें तो पता ही नहीं था आज तक कि प्यार फूल देकर भी जताया जाता है!' वह मजाक करती-सी बोली, 'तुमने दिया है किसी को?'

जवाब में लड़की कुछ नहीं बोली।

'तुम्हें दिया है किसी ने?'

वह इस पर भी चुप रही। नजरें नीची करके शरमाते हुए नकारात्मक सिर हिला दिया, बस।

'नाम क्या है तुम्हारा?' नीरजा ने पूछा।

'सायना।'

'बहुत सुंदर। एक गुलाब कितने का है, सायना?'

'पचास का जोड़ा।'

'जोड़ा नहीं, एक कितने का है?'

'एक फूल तो अकेला छोरा या अकेली छोरी ही खरीदे है।' उसने दलील दी, 'आप तो दोनों साथ हो, दो लो।'

'क्यों?'

'एक फूल आप साब को दोगी, एक साब आपको देगा।' उसने समझाया।

'ठीक है; पर, पहले तुम एक ही फूल मुझे दो।' नीरजा ने उससे कहा।

लेकिन इस बात पर ध्यान दिए बिना उसने तुरंत एक जोड़ा गुलाब नीरजा के हाथ में पकड़ा दिया। नीरजा ने भी इंकार नहीं किया। पर्स की जेब से निकालकर पचास रुपए का नोट उसके हाथ में थमा दिया। फिर हाथ में पकड़े गुलाबों में से एक को उसकी ओर बढ़ाकर वह बोली, 'आज तक तुम्हें किसी ने गुलाब नहीं दिया न? यह लो, आज मैं तुम्हें देती हूँ, लव यू सायना!'

यह सुनकर लड़की ने एक नजर अपनी ओर बढ़े ताजातरीन गुलाब पर डालते हुए नीरजा के चेहरे को देखा। फिर पैर के अँगूठे से जमीन को खुरचते हुए धीमे-से बोली, 'छोरी थोड़े ही ना छोरी को ऐसा बोले है।'

'तो?'

'इनसे दिलवाके बुलवाइए!' भवों से संजय की ओर इशारा करके उसने शरमाते हुए कहा और मुट्ठी में पकड़े गुलाबों के गुच्छे से अपने मासूम चेहरे को ढाँपकर दूसरी ओर मुँह करके खड़ी हो गई।

एम 70, **नवीन शाहदरा**
दिल्ली 110032

मुरलीधर वैष्णव

फर्क पड़ेगा

आज स्कूल की पिकनिक में वह समुद्र-तट पर आई हुई थी। उसका मन खेलकूद में नहीं लग रहा था। इतने में समुद्र की एक तेज लहर आई और हजारों छोटी मछलियों को रेत पर पटककर लौट गई। मछलियों को रेत में तड़फते देखा तो उसका बाल-मन करुणा से भर गया। वह उनके पास गई और अपने नन्हे हाथों से पकड़कर एक-एक मछली को समुद्र के पानी में डालने लगी। वह कुल चार-पाँच मछलियों को ही पानी में डाल पाई थी कि पास ही से गुजर रहे आदमी ने उसे ऐसा करते देख कहा-'यहाँ तो हजारों मछलियाँ पड़ी हैं, बेटी! तुम्हारे ऐसा करने से क्या फर्क पड़ेगा?'

'जिन्हें मैं पानी में डाल रही हूँ, उनको फर्क पड़ेगा।' अपनी धुन में मशगूल वह उस आदमी की ओर देखे बिना ही बोली।

ए-77 **रामेश्वरनगर, बासनी प्रथम**
जोधपुर 342005

मधुदीप

रात की परछाइयाँ

इस बार चुनाव आयोग का डंडा कुछ ज्यादा ही तेजी से घूमा। कोई जलूस नहीं, कोई धूम-धड़ाका नहीं, दीवारों पर पोस्टर भी नहीं। बस, चौपालों पर छोटी-छोटी सभाएँ, जैसे ये विधान सभा के चुनाव न होकर ग्राम पंचायत के चुनाव हों।

अब वोट पड़ने में सिर्फ सात घंटे शेष रह गए हैं। यह झुग्गी-झोपड़ियों का छोटा-सा इलाका है। मगर वोट यहाँ बेहिसाब ठुँसे पड़े हैं। पूरे इलाके में मरघटी सन्नाटा छाया हुआ है मगर कुछ परछाइयों की बेचैन चहलकदमी और फुसफुसाहटें इस सन्नाटे को तोड़ने की कोशिश में हैं।

परछाइयों की पदचाप चारों तरफ फैलती जा रही है। असली चुनाव-प्रचार जोरों पर है। भरे हाथ परछाई हर झुग्गी में घुस रही है और आश्वस्त कदमों से लौट रही है।

रात के गहराने के साथ- साथ परछाइयों की तेजी और बेचैनी बढ़ती जा रही थी, मगर पौ फटते ही वे न जाने कहाँ दुबक गई हैं!

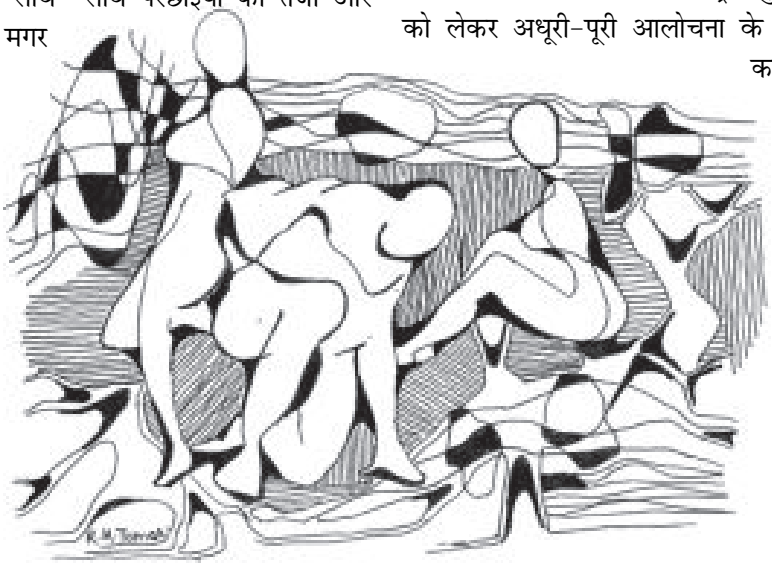

सुबह के दस बज रहे हैं। सूरज आसमान में काफी ऊपर आ चुका है। इलाके के पोलिंग बूथ पर एक विकट स्थिति पैदा हो गई है। वोटिंग के लिए लंबी लाइन लगी है, लाइन में लगे बहुत-से वोटर नशे में झूम रहे हैं। हुड़दंग होने का खतरा बढ़ता जा रहा है...।

चुनाव अधिकारी बेचैन है। वह बार-बार मोबाइल के बटन दबा रहा है। बार-बार सूचना दी जा रही है, व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त फोर्स की गाड़ियाँ सायरन बजाती हुईं तेजी से आ रही हैं...।

रात की परछाइयाँ चिंता में डूबी, बेचैन तथा सहमी हुई एक तरफ खड़ी हैं।

दिशा प्रकाशन, 138/16, **त्रिनगर, दिल्ली** 110035
मो॰ 9312400709

आभा सिंह

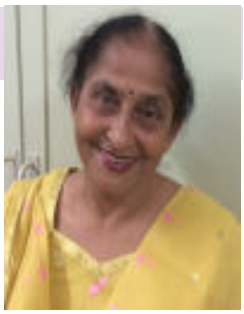

माटी कहे

आज चंपा की ड्यूटी कॉटेज वार्ड में थी। एक-एक कॉटेज झाड़ती बुहारती चंपा नं॰ आठ तक आई। दरवाजा खुला था। वह झाड़ू घसीटती कमरे के पार तक चली गई।

'ठैर-ठैर तो सही' सफेद बुर्राक कपड़े पहने बूढ़ी महिला यथाशक्ति जल्दी-जल्दी चलती हुई आई और बाल्टी-मग उठाकर खिड़की में रख दिए। मरीज के पलंग की चादर ऊपर कर दी। नीचे रखे अटैची केस व झोले-झाले मेज पर टिका दिए। अपने पलंग की चादर भी मोड़माड़कर ऊपर समेट दी। दूसरी खिड़की में रखी सुराही और खाने का डिब्बा तौलिए से ढक दिया, फिर हाथ झाड़ती एक तरफ को बचकर खड़ी हो गई।

व्यवधानों की बीच झाड़ू लगी। डिटॉल डालकर पोंछा लगा। फिनायल से बाथरूम लैट्रिन धुले। अस्पताल की गंदगी को लेकर अधूरी-पूरी आलोचना के मध्य आधे-पौने घंटे में काम खत्म हुआ। चलते-चलते चंपा पूछ बैठी 'कब आईं माँजी?'

'कल शाम, बेटी, बीमार है।'

'बहुत अच्छा किया आपने यहाँ आकर, बहुत बढ़िया अस्पताल है यह। यहाँ के डॉक्टर और नर्सें भी बहुत काबिल हैं। कल सुबह ही मेरी माँ को भी छुट्टी मिली है। यहीं थी साल भर से, इसी कमरे में।' मासूम हँसी, दूध-से सफेद दाँत और माथे पर शीशे की टिकुली झक-झक चमक उठी।

हाथ मसलती माँजी झाड़ू घसीटती चली जा रही चंपा को देखती रह गईं। असहाय नजरें कमरे की एक-एक चीज को ध्यान से देखती हुई तौलिये से ढके पानी और खाने के डिब्बे पर टिक गईं।

'रघुराई', 80/173, **मध्यम मार्ग**
मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)

अशोक भाटिया

लगा हुआ स्कूल

नए साल में स्कूल खुल गए थे। रामगढ़ गाँव का यह सरकारी स्कूल मिडिल से हाईस्कूल बन गया था। कुछ दिन पहले वहाँ एक नया अधिकारी बिना पूर्व सूचना दिए पहुँच गया। उस समय स्कूल में एक सेवादार के अलावा कोई जिम्मेवार व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा था। बच्चे खुले में कूद-फाँद रहे थे। गाड़ी को देख वे अपनी-अपनी कक्षाओं में दुबक गए। कमरों में लाइट नहीं थी, गर्मी और अँधेरा था।

'क्या बात, किधर हैं सब लोग?'—युवा अधिकारी का पारा चढ़ गया। सेवादार उनके निर्देशानुसार हाजरी का रजिस्टर ले आया। उसमें सभी अध्यापकों की हाजरी लगी हुई थी। अधिकारी को दाल में काला ही काला नजर आ रहा था। उसने दोषियों को देख लेने की सख्त भाव-मुद्रा बना ली। सेवादार बड़ा अनुभवी था। ऐसे हालात से वह कई बार निपट चुका था। उसने साहब को खुद ही बता दिया कि हेडमास्साब बैंक तक गए हैं। आने ही वाले होंगे।

अध्यापकों के बारे पूछने पर वह तफसील से बताने लगा। पहला नाम सबसे सीनियर टीचर रामफल का था।

'जी रामफल गाम मैं ड्रापआउट बाड़काँ का पता करण गए हैं।

'और श्रीचंद?'

'वो आज बाड़काँ खात्तर सब्जी खरीदणा ने जा रया सै। मिड डे मील बणेगा।'

'और ये कृष्णकुमार कहाँ जा रहा है?' कड़क अधिकारी ने सेवादार से ही सारी जानकारी लेना ठीक समझा या उसकी यह मजबूरी थी—कहा नहीं जा सकता।

'जी किशन भी दूध-घी खरीदण जा रया सै।'

'सुबह-सुबह क्यों नहीं चला गया?' अधिकारी ने टाँग पर दूसरी टाँग रखते हुए पूछा।

'जी वा बच्याँ की गिणती करके ले जाणी थी।' सेवादार ने स्पष्टीकरण दिया, जैसे सारी जिम्मेदारी उसी की हो।

अधिकारी ने ठोड़ी पर हाथ फेरते हुए सोचा—सारे बाहर के काम इन टीचर्स को ही दे रखे हैं। अब बाकी के टीचर तो पक्का फरलो पर होने चाहिए। 'वो संस्कृतवाले शास्त्री कहाँ हैं?'

'जी वा नए बाड़काँ खात्तर यूनिफाम का रेट पता करण शहर नै जाण लाग रे। इहाँ गाम मैं तो मिलदी कोन्या।'

अधिकारी सकपका गया, पर उसे चौकीदार की बातें सच लग रहीं थीं। अब तक जितना उसने सुन रखा था, उसमें उसे अध्यापक ही दोषी और काम न करनेवाले लगते थे; लेकिन यहाँ तो उसे माजरा कुछ और ही लग रहा था। उसे अपना इरादा पूरा होता नहीं दिख रहा था। उसने इधर-उधर देखा, धीरे-धीरे पानी के दो घूँट भरे, फिर चौकीदार से कहा— 'ये गणित वाले भूषण की भी रामकहानी सुना दें फिर।'

'साब वो हर साल स्टेशनरी अर बैग खरीदया करे है। इब्बी आ ज्यागा।

इतने में कैंटीनवाला बुजुर्ग चाय ले आया था। कक्षाओं में से बच्चे रह-रहकर बाहर झाँकते हुए उस अधिकारी को देख लेते, मानो वह चिड़ियाघर से भागा हुआ कोई जंतु हो। अधिकारी को बहुत मीठी चाय भी कड़वी लग रही थी। उसने दो घूँट भरकर अपना काम पूरा करने की कवायद फिर शुरू की।

'ये अनिल कुमार भी किसी काम से गया है?'

'जी, गाम की मर्दमशुमारी की उसकी ड्यूटी लग री सै।'

'जनगणना तो खत्म हो चुकी है!' अधिकारी की सवालिया निगाहें उसकी ओर उठीं।

'साब वो तो पिछले महीन्ने घर और गाए-भैंस गिणन की हुई थी। इबके धर्म अर जात का पता करण गए हैं जी।

अब तक पी॰टी॰ मास्टर को भी खबर मिल चुकी थी। वह आखरी कमरे से तेजी से निकला। आकर अधिकारी को करारी नमस्ते ठोंकी और अपना परिचय दिया। वह स्कूल में तरह-तरह के काम करने से बड़ा परेशान था। अधिकारी ने चेहरे पर सख्ती और गर्दन में अकड़ को बढ़ाते हुए उससे पूछा—'आप कहाँ थे? ये बच्चे हुडदंग कर रहे थे। इन्हें कौन कंट्रोल करेगा?'

'सर, मैं नौवीं क्लास के बच्चों की आँखें और दाँत चेक कर रहा था।'

'ये काम तो डॉक्टर का है!'

'सर, यहाँ कभी कोई डॉक्टर नहीं आता। पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर सब हमें ही बनना पड़ता है।' कहकर पी॰टी॰ मास्टर अपनी भाषा पर मुग्ध हो गया।

तभी स्कूटर पर स्कूल के मुख्य अध्यापक अवतरित हुए। उन्होंने अधिकारी को बताया कि वे बैंक में बच्चों के खाते खुलवाने के कागजात जमा कराकर आए हैं। स्कूल का एकमात्र क्लर्क उस दिन छुट्टी पर था। अधिकारी और मुख्य अध्यापक-दोनों की आँखों में कुछ सवाल और विषय चमके, फिर दोनों की संक्षिप्त बातचीत के बाद उन सवालों की बत्तियाँ गुल हो गईं। पी॰टी॰ मास्टर बच्चों को आयरन की गोलियाँ बाटने नौवीं कक्षा की तरफ हो लिया। मुख्य अध्यापक ने अधिकारी को नाश्ते के लिए जैसे—तैसे मनाया और उसे अपने घर की तरफ लेकर चल दिया।

स्कूल फिर पहले की तरह चलने लगा, जो आज तक वैसा ही चल रहा है...

1882, **सेक्टर**-13, **करनाल** 132202 **(हरियाणा)**

श्यामसुंदर अग्रवाल

अनमोल खजाना

अलमारी के लॉकर में रखी कोई वस्तु जब पत्नी को न मिलती तो वह लॉकर का सारा सामान बाहर निकाल लेती। इस सामान में एक छोटी-सी चाँदी की डिबिया भी होती। सुंदर तथा कलात्मक डिबिया। इस डिबिया को वह बहुत सावधानी से रखती। उसने डिबिया को छोटा-सा ताला भी लगा रखा था। मुझे या बच्चों को तो उसे हाथ भी न लगाने देती। वह कहती, 'इसमें मेरा अनमोल खजाना है, जीते जी किसी को छूने भी न दूँगी।'

एक दिन पत्नी जल्दी में अपना लॉकर बंद करना भूल गई। मेरे मन में उस चाँदी की डिबिया में रखा पत्नी का अनमोल खजाना देखने की इच्छा बलवती हो उठी। मैंने डिबिया बाहर निकाली। मैंने उसे हिलाकर देखा। डिबिया में से सिक्कों के खनकने की हल्की-सी आवाज सुनाई दी। मुझे लगा, पत्नी ने डिबिया में ऐतिहासिक महत्त्व के सोने अथवा चाँदी के कुछ सिक्के सँभालकर रखे हुए हैं।

मेरी उत्सुकता और बढ़ी। कौनसे सिक्के हैं? कितने सिक्के हैं? उनकी कितनी कीमत होगी? अनेक प्रश्न मस्तिष्क में उठ खड़े हुए। थोड़ा ढूँढ़ने पर डिबिया के ताले की चाबी भी मिल गई। डिबिया खोली तो उसमें से एक थैली निकली। कपड़े की एक पुरानी थैली। थैली मैंने पहचान ली। यह मेरी सास ने दी थी, मेरी पत्नी को। जब सास मृत्यु-शय्या पर थी और हम उससे मिलने गाँव गए थे। आँसू-भरी आँखों और काँपते हाथों से उसने थैली पत्नी को पकड़ाई थी। उसके कहे शब्द आज भी मुझे याद हैं-'ले बेटी ! तेरी माँ के पास तो बस यही है देने को।'

मैंने थैली खोलकर पलटी तो पत्नी का अनमोल खजाना मेज पर बिखर गया। मेज पर जो कुछ पड़ा था, उसमें वर्तमान के ही कुल आठ सिक्के थे–तीन सिक्के दो रुपये वाले, तीन सिक्के एक रुपये वाले और दो सिक्के पचास पैसे वाले। कुल मिला कर दस रुपये।

मैं देर तक उन सिक्कों को देखता रहा। फिर मैंने एक-एक कर सभी सिक्कों को बड़े ध्यान से थैली में वापस रखा, ताकि किसी को भी हल्की-सी रगड़ न लग जाए।

575, **गली नः** 5, **प्रतापनगर,**
कोटकपूरा (पंजाब) 151204

पैसा ही अरमान है, पैसा ही पहचान।
पैसे ने ही गढ़ लिए, संविधान वरदान।

ज्योत्स्ना सिंह

रोबोट

बड़े ट्रंक का सामान निकालते हुए शिखा ने बड़े ममत्त्व से अपने पुत्र राहुल के छुटपन के वस्त्र और खिलौनों को छुआ। छोटे-छोटे झबले, स्वेटर, झुनझुने, न जाने कितनी ही चीजें उसने बड़े यत्न से अब तक सम्हालकर रखी थीं।

अरे रोबोट! वह चिहुँक उठी। जब दो वर्ष का था बेटा, तो अमेरिका से आए बड़े भैया ने उसे ये लाकर दिया था। कई तरह के करतब दिखाता रोबोट पाकर राहुल तो निहाल हो उठा। उसमें प्राण बसने लगे थे उसके। पर शरारत का ये आलम कि कोई खिलौना बचने ही न देता था। ऐसे में इतना महँगा रोबोट बर्बाद होने देने का मन नहीं हुआ शिखा का।

रोबोट से खेलते समय वह बहुत सख्त हो उठती, बेटे के साथ। आसानी से राहुल को देती ही नहीं। लाख लानत मलामत करने पर ही कुछ समय को वह खिलौना मिल पाता। फिर उसकी पहुँच से दूर रखने को न जाने क्या-क्या जुगत लगानी पड़ती उसे।

शिखा के यत्नों का ही परिणाम था कि वह अब तक सही-सलामत था। राहुल तो उसे भूल भी चुका था। फिर अब तो बड़ा भी हो गया था, पूरे बारह वर्ष का। अपनी वस्तुओं को माँ के मन मुताबिक सम्हालकर भी रखने लगा था।

'अब राहुल समझदार हो गया है, आज मैं उसे ये दे दूँगी। बहुत खुश हो जाएगा, उसका अब तक का सबसे प्रिय खिलौना।' बड़बड़ाते हुए उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं।

तभी राहुल ने कक्ष में प्रवेश किया।

'देख बेटा, मेरे पास क्या है?' उसने राजदाराना अंदाज में कहा।

'क्या माँ?'

'ये रोबोट, अब तुम इसे अपने पास ही रख सकते हो। अब तो मेरा बेटा बहुत समझदार हो गया है।'

'अब इसका क्या करूँगा माँ?' क्षण मात्र को पीड़ा के भाव उभरे, फिर कोई तवज्जो न देते हुए सख्त लहजे में बोला, मैं कोई लिटिल बेबी थोड़े ही हूँ, जो रोबोट से खेलूँगा'

18-**ए, विक्रमादित्य पुरी**
स्टेट बैंक कॉलोनी, बरेली 243005

पत्थर छोटी ज़िंदगी, पर पहाड़-से द्वंद्व।
बहती नद-सी साँस में, सौ-सौ हैं छलछंद।

सुभाष नीरव

जानवर

बीच पर भीड़ निरंतर बढ़ती जा रही थी। सूरज समुद्र में बस डुबकी लगाने ही वाला था। वे दोनों हाथ में हाथ थामे समुद्र किनारे रेत पर टहलने लगे। पानी की लहरें तेजी से आतीं और लड़की के पैरों को चूमकर लौट जातीं। लड़की को अच्छा लगता। वह लड़के का हाथ खींच पानी की ओर दौड़ती, दाएँ हाथ से लड़के पर पानी फेंकती और खिलखिला कर हँसती। लड़का भी प्रत्युत्तर में ऐसा ही करता। उसे लड़की का इस तरह उन्मुक्त होकर हँसना, खिलखिलाना अच्छा लग रहा था। अवसर पाकर वह लड़की को अपनी बाहों में कस लेता और तेजी से उनकी ओर बढ़ती ऊँची लहरों का इंतजार करता। लहरें दोनों को घुटनों तक भिगोकर वापस लौट जातीं। लहरों और उनके बीच एक खेल चल रहा था–छुअन-छुआई का।

लड़का खुश था, लेकिन भीतर कहीं बेचैन भी था। वह बार-बार अस्त होते सूरज की ओर देखता था। अँधेरा धीरे-धीरे उजाले को लील रहा था। फिर, दूर क्षितिज में थका-हारा सूर्य समुद्र में डूब गया।

लड़के की बेचैनी कम हो गई। उसे जैसे इसी अँधेरे का इंतजार था। लड़का लड़की का हाथ थामे भीड़ को पीछे छोड़ समुद्र के किनारे-किनारे चलकर बहुत दूर निकल आया। यहाँ एकांत था, सन्नाटा था, किनारे पर काली चट्टानें थीं, जिन पर टकराती लहरों का शोर बीच बीच में उभरता था। वह लड़की को लेकर एक चट्टान पर बैठ गया। सामने विशाल अँधेरे में डूबा काला जल। दूर कहीं-कहीं किसी जहाज की बत्तियाँ टिमटिमा रही थीं।

'ये कहाँ ले आए तुम मुझे?' लड़की ने एकाएक प्रश्न किया।

'भीड़ में तो हम अक्सर मिलते रहते हैं–कभी...'

'पर मुझे डर लगता है। देखो, यहाँ कितना अँधेरा है।' लड़की के चेहरे पर सचमुच एक भय तैर रहा था।

'किससे? अँधेरे से?'

'अँधेरे से नहीं, जानवर से–'

'जानवर से? यहाँ कोई जानवर नहीं है।' लड़का लड़की से सटकर बैठता हुआ बोला।

'है अँधेरे और एकांत का फायदा उठाकर अभी तुम्हारे भीतर से बाहर निकल आएगा।'

लड़का जोर से हँस पड़ा।

यह जानवर ही तो आदमी को मर्द बनाता है। कहकर लड़का लड़की की देह से खेलने लगा।

'मैं चलती हूँ...।' लड़की उठ खड़ी हुई।

लड़के ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया।

'देखो, तुम्हारे अंदर का जानवर बाहर निकल रहा है...मुझे जाने दो।'

सचमुच लड़के के भीतर का जानवर बाहर निकला और लड़की की पूरी देह को झिंझोड़ने-नोचने लगा। लड़की ने अपने अंदर एक ताकत बटोरी और जोर लगाकर उस जानवर को पीछे धकेला। जानवर लड़खड़ा गया। वह तेजी से बीच की ओर भागी, जहाँ ट्यूब लाइटों का उजाला छितरा हुआ था।

लड़का दौड़कर लड़की के पास आया, 'सॉरी, प्यार में ये तो होता ही है...।'

'देखो, मैं तुमसे प्यार करती हूँ, तुम्हारे अंदर के जानवर से नहीं।' और वह चुपचाप सड़क की ओर बढ़ गई। बीच पीछे छूट गया, लड़का भी।

आर॰ज़ैड॰एफ॰-30ए, दूसरी मंजिल
प्राचीन काली मंदिर के पीछे (नाला पार)
वैस्ट सागरपुर, पंखा रोड, नई दिल्ली 110046
subhashneerav@gmail.com

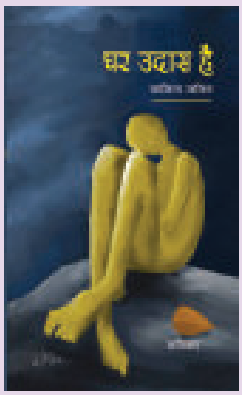

घर उदास है
कविता-संग्रह

लालित्य ललित

मूल्य
तीन सौ रुपए

हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

संबंधों के खेत में, मत तू कीकर रोप।
प्यार-भरे संबंध में, उचित नहीं आरोप।

अनिता ललित

रस्म

बर्तन गिरने की आवाज से शिखा की आँख खुल गई। घड़ी देखी तो आठ बज रहे थे, वह हड़बड़ाकर उठी।

'उफ्फ! मम्मी जी ने कहा था कल सुबह जल्दी उठना है, रसोई की रस्म करनी है, हलवा-पूरी बनाना है और मैं हूँ कि सोती ही रह गई। अब क्या होगा! पता नहीं, मम्मी जी, डैडी जी क्या सोचेंगे, कहीं मम्मी जी गुस्सा न हो जाएँ। हे भगवान!'

उसे रोना आ रहा था। ससुराल और सास नाम का हौवा उसे बुरी तरह डरा रहा था।

कहा था दादी ने–'ससुराल है, जरा सँभलकर रहना। किसी को कुछ कहने का मौका न देना, नहीं तो सारी उम्र ताने सुनने पड़ेंगे। सुबह-सुबह उठ जाना, नहा-धोकर साड़ी पहनकर तैयार हो जाना, अपने सास-ससुर के पाँव छूकर उनसे आशीर्वाद लेना। कोई भी ऐसा काम न करना जिससे तुम्हें या तुम्हारे माँ-पापा को कोई उल्टा-सीधा बोले।'

शिखा के मन में एक के बाद एक दादी की बातें गूँजने लगीं थीं।

किसी तरह वह भागा-दौड़ी करके तैयार हुई। ऊँची-नीची साड़ी बाँधकर वह बाहर निकल ही रही थी कि आईने में अपना चेहरा देखकर वापस भागी–न बिंदी, न सिंदूर–आदत नहीं थी, तो सब लगाना भूल गई थी। ढूँढकर बिंदी का पत्ता निकाला। फिर सिंदूरदानी ढूँढने लगी...जब नहीं मिली तो लिपस्टिक से माथे पर हल्की-सी लकीर खींचकर कमरे से बाहर आई।

जिस हड़बड़ी में शिखा कमरे से बाहर आई थी, वह उसके चेहरे से, उसकी चाल से साफ झलक रही थी। लगभग भागती हुई सी वह रसोई में दाखिल हुई और वहाँ पहुँचकर ठिठक गई। उसे इस तरह हड़बड़ाते हुए देखकर सासू माँ ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा। फिर ऊपर से नीचे तक उसे निहारकर धीरे से मुस्कुराकर बोलीं, 'आओ बेटा! नींद आई ठीक से या नहीं?'

शिखा अचकचाकर बोली, 'जी मम्मी जी! नींद तो आई, मगर जरा देरी से आई, इसीलिए सुबह जल्दी आँख नहीं खुली 'सॉरी।'

बोलते हुए उसकी आवाज से डर साफ झलक रहा था।

सासू माँ बोलीं, 'कोई बात नहीं बेटा! नई जगह है, हो जाता है!'

शिखा हैरान होकर उनकी ओर देखने लगी। फिर बोली, 'मगर...मम्मी जी, वो हलवा-पूरी?'

सासू माँ ने प्यार से उसकी तरफ देखा और पास रखी हलवे की कड़ाही उठाकर शिखा के सामने रख दी, और शहद जैसे मीठे स्वर में बोलीं, 'हाँ! बेटा! ये लो! इसे हाथ से छू दो!'

शिखा ने प्रश्न-भरी निगाहों से उनकी ओर देखा।

उन्होंने उसकी ठोड़ी को स्नेह से पकड़कर कहा, 'बनाने को तो पूरी उम्र पड़ी है! मेरी इतनी प्यारी, गुड़िया जैसी बहू के अभी हँसने-खेलने के दिन हैं, उसे मैं अभी से किचेन का काम थोड़ी न कराऊँगी। तुम बस अपनी प्यारी-सी, मीठी मुस्कान के साथ सर्व कर देना–आज की रस्म के लिए इतना ही काफी है।'

सुनकर शिखा की आँखों में आँसू भर आए। वह अपने-आपको रोक न सकी और लपककर उनके गले से लग गई! उसके रुँधे हुए गले से सिर्फ एक ही शब्द निकला–'माँ!'

1/16 **विवेक खंड, गोमतीनगर**
लखनऊ (उ०प्र०) 226010)

राजेश उत्साही

अनुयायी

वह आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक था। बहुत सारे अनुयायी थे उसके। कुछ पक्के सिद्धांतवादी और कुछ कोरे अंधभक्त। वे सब उसकी एक आवाज पर मर-मिटने को तैयार रहते।

वह कहता, '...।' सब हाथ उठाकर उसका समर्थन करते।

उन सबकी यानी उसकी प्रगति की राह में एक खाई थी। मंजिल पर पहुँचने के लिए उस खाई को पाटना जरूरी था।

उसने अपने अनुयायियों से कहा, 'यह खाई हमारी प्रगति में बाधा नहीं बन सकती। हमारी हिम्मत और दृढ़ निश्चय के आगे यह टिक नहीं सकेगी। साथियो, देखते क्या हो आगे बढ़ो।'

देखते ही देखते वे सब उस खाई में समा गए।

उसने मुस्कराकर एक नज़र लाशों से पटी खाई पर डाली और फिर उन पर चलते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ गया।

Editor (Hindi),Teachers of India Portal,
Azim Premji University, Pixal Park,
B-Block,PES Institute of Technology
South Campus,Electronics City,
Hosur Road (Beside NICE Road)
BANGLORE 560 100

उपेंद्रप्रसाद राय

किसान की रोटी

उस दिन एक किसान की थाली से रोटी भाग खड़ी हुई। बेचारे किसान ने हर जगह खोज की। गाँव-गाँव, शहर-शहर, दर-दर की खाक छानी, किंतु रोटी को न मिलना था, न मिली। अंत में भूख से परेशान होकर उसने थाने में रपट लिखा दी। थानेदार को गुस्सा आया। सिपाही को बुलाकर डाँटा, 'क्यों बे! रोटी भाग गई और तुम्हें खबर तक नहीं। यह थाना है कि धर्मशाला? जा और पता लगाकर आ कि रोटी आखिर भागी तो भागी कहाँ?'

सिपाही निकल पड़ा रोटी की खोज में...गाँव-गाँव, शहर-शहर। उसने भी दर-दर की खाक छानकर अंत में पता लगा ही लिया। सेठ धनपत के दरवान को डराया-धमकाया तो उसने उगल दिया कि उस दिन किसान के यहाँ से जो रोटी भागी थी, वह सीधे सेठ की तिजोरी में जाकर छुप गई और अभी वहीं है।

सिपाही ने जाकर सारी वारदात बताई तो थानेदार की चिंता जाती रही। उसने खैनी की पीक दीवार पर थूकी। कुर्सी पर आराम से बैठते हुए टाँगों को मेज पर पसारा, दाएँ हाथ से डंडा पकड़कर बाएँ हाथ की हथेली पर धीरे-धीरे पटकते हुए बोला, 'रोटी के लिए सेठ की तिजोरी से अच्छी जगत और कहाँ मिल सकती है? वहाँ है तो सचमुच सुरक्षित है। क्यों बे किसान, अब तक तूने रोटी अपने पास रखी ही क्यों थी? कर दूँ तेरा चालान, नाजायज चीज रखने के जुर्म में?'

किसान ने थानेदार के पैर पकड़ लिए, 'माई-बाप! इस बार तो माफ कर दो। आगे से ऐसी गलती नहीं करूँगा।

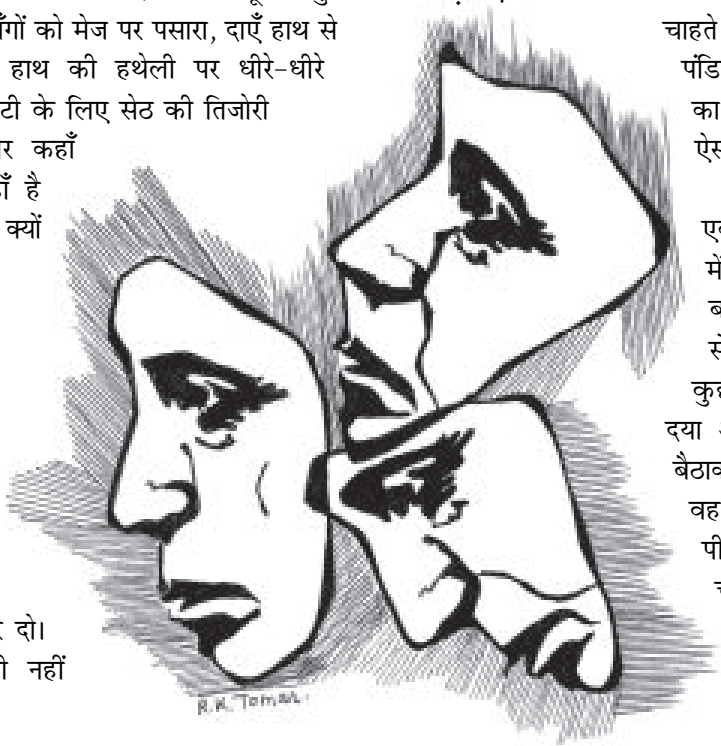

पुराना एम०को० कैंपस
संदलपुर, पो० महेंद्रू, पटना 800006

रेणु चंद्रा माथुर

बाबूजी का श्राद्ध

श्राद्धपक्ष चल रहे थे। घर में बाबूजी का ग्यारस का श्राद्ध निकालना था। दो-चार दिन पहले से ही पंडित जी को न्योता दे दिया था। उस दिन सुबह जब याद दिलाने के लिए पंडितजी को फोन किया तो वे कहने लगे' 'क्या करूँ, मुझे तो बिल्कुल समय नहीं है, दूसरी जगह से भी न्योता है। पहले वहाँ जाकर फिर वहीं से ऑफिस चला जाऊँगा। आपके यहाँ तो शाम को ही आ पाऊँगा।' क्या करते, आजकल पंडित मिलते कहाँ हैं सो मानना पड़ा। फिर थोड़ी देर में उन्हीं का फोन आया और बोले, 'खाने का इंतजाम टेबिल-चेयर पर कीजिएगा। मैं नीचे बैठकर खाना नहीं खाऊँगा, और दक्षिणा में कपड़ों के अलावा कम से कम सौ रुपये देने होंगे। यदि आपको मंजूर हो तो मुझे ऑफिस में ही फोन कर बता देना।

हम सभी का सिर चकरा गया। ये पंडितजी आ रहे थे या कोई अफसर आ रहे थे, जिनका हमें स्वागत करना था। सोच में पड़ गए कि हम क्या करें? श्राद्ध का खाना तो सुबह ही खिलाना चाहते थे। जब तक श्राद्ध निकालकर पंडितजी को भोजन न करा दें, घर का भी कोई सदस्य खाना न खाए, ऐसी परंपरा थी।

थोड़ी देर में देखा कि द्वार पर एक बूढ़ा आदमी निढाल अवस्था में बैठा था और बुदबुदा रहा था, मैं बहुत भूखा हूँ। कई दिनों से ठीक से खाना भी नसीब नहीं हुआ है। कुछ खाने को दे दो।' उस पर बड़ी दया आ गई। उसे घर के अहाते में बैठाकर आग्रहपूर्वक खाना खिलाया। वह भरपेट खाना खाकर और पानी पीकर, ढेर सारा आशीष देता हुआ चला गया। उस दिन लगा आज बाबूजी का श्राद्ध ठीक से संपन्न हुआ है।

140, **न्यू कालोनी**
एम०आई० रोड, पाँच बत्ती
जयपुर (राज०) 302001

मार्टिन जॉन

डिस्चार्ज

उसने चिट्ठी लिखी, लिफाफे में भरा और टेबुल पर रखकर पोस्ट ऑफिस जाने की तैयारी करने लगा। चिट्ठी के बगल में ही मोबाइल आराम फरमा रहा था। उसे देखते ही उसके होंठों पे एक तिरछी मुस्कान तैर गई, 'हेलो! अभी भी जिंदा हो?' उसने तंज कसा।

'कयामत तक जिंदा रहूँगी!'

'यह भी कोई जीना है...वन जी से भी कम स्पीड...कछुए की तरह!'

'आखिर में कछुए की ही जीत हुई थी।'

'हाऊ बोरिंग स्टोरी!...आउट ऑफ डेटेड!...अरे मुझे देखो, फोर जी स्पीड एंड ग्लोरियस लाइफ।'

'जब तक पावर है!'

'सो व्हाट?...इसी पावर के दम पर तुम्हारे साथियों को कब्रिस्तान पहुँचा चुका हूँ। अब तुम्हारी बारी है चिट्ठी रानी।'

'मुझे नेस्तनाबूद करने का ख्वाब मत देखो। जब तक पावर है खूब बोलियाँ निकलेंगी। उसके बाद टाय-टाय फिस्स!'

'फास्ट कम्युनिकेशन के जमाने में जो प्रोग्रेस चाहता है वह पावर से प्यार करता है।...तरक्की और पावर में गहरा रिश्ता है।'

'कोई भी रिश्ता दिल से बड़ा नहीं होता।'

'व्हाट दिल-विल?...जेट युग में इसे कौन पूछता है!'

'तुम क्या जानो दिल की अहमियत। तुम तो बगैर रूह वाला जिस्म हो।...दिल की बदौलत ही दुनिया बदसूरत होने से बची हुई है।'

'फिर भी जमाना मेरा दीवाना है।'

'इस दीवानगी में जज्बात की कोई जगह नही।...संवेदना का कोई मोल नहीं।...टोटली मेकानाइज्ड रिलेशन!'

'और तुम्हारा रिश्ता?'

'मुझे नाज है सदियों पुराने अपने रिश्ते पर।...क्योंकि ...मेरे हर हर्फ में रूह बसती है...हर लफ्ज में संजीदगी...पूरे वजूद में अपनेपन की खुशबू...दिल की गहराई तक उतरने वाला अलफाज।'

इस बीच मोबाइल के जिस्म से अजीब तरह की 'टूईं-टूईं' आवाज आने लगी। इससे बेखबर चिट्ठी अपने प्रवाह में बहती रही, '...मेरे स्पर्श से ही जिस्म के रेशे-रेशे में जलतरंग बजने लगती है, जिसकी स्वर-लहरियाँ घर-आँगन को मौसिकी से भर देती हैं...चिट्ठी लिखनेवाला और इसे बाँचनेवाला पूरी शिद्दत से गुफ्तगू करने लगते हैं...आंतरिकता की अनुभूति से सराबोर हो जाते हैं...दूरियाँ आँसू बहाने लगती हैं, नजदीकियाँ मुस्कराने लगती हैं।'

एक बार फिर मोबाइल का जिस्म 'टूईं-टूईं' करने लगा।

'क्यों भाई, तुम्हारी जुबान को क्या हो गया?...लगता है, जवाब देते नहीं बन पा रहा है। इसलिए आवाज लड़खड़ा रही है...मुझे मालूम है, सच्चाई का सामना करने की कुव्वत तुझमें नहीं है।'

मोबाइल लाजवाब हो गया। उसकी ख़ामोशी चिट्ठी को अखरने लगी। प्रत्युत्तर न पाकर उसने थोड़ा उचककर झाँका, 'अरे ये तो बेजान हो गया।' अब मुस्कराने की बारी चिट्ठी की थी।

दरअसल मोबाइल डिस्चार्ज हो गया था।

अपर बेनियासोल
आद्रा, पुरुलिया
पश्चिम बंगाल 723121

कुमार गौरव अजितेंदु

भ्रष्टाचार

'अरे इतने से नहीं होगा भाई, बात समझो। तुम्हारे लिए ही इतने कम पर तैयार हूँ कि गरीब आदमी हो और तुम उसमें से भी...'

'नहीं भैया, अभी इससे ज्यादा है ही नहीं। दुकान भी कुछ दिनों से बंद रखनी पड़ी इसी भागदौड़ के कारण सो...'

'ओ...हो, क्या यार तुम लोग भी...रुको फोन आ रहा है, जरा बात कर लूँ...हाँ दीनदयाल जी, कहिए...अच्छा अच्छा जी याद है, कल एकदम समय पर आ जाऊँगा...अरे आप लोग हमारे समाज के लिए ही तो इतना कुछ कर रहे हैं...जी बिलकुल हमसब मिलकर लड़ेंगे इस भ्रष्टाचार से...जी ठीक है, आ जाऊँगा कल...हाँ भाई बोलो तुम अब, कितने का इंतजाम हो पाएगा? फाइनल बताओ।'

'प...पाँच हजार तक का...'

'लाओ दो, जाओ देखता हूँ क्या हो पाता है...अरे मैनेज करना पड़ता है कई को, अपने लिए थोड़े माँग रहा। पूरी कोशिश करूँगा कि इतने में हो जाए, नहीं हुआ तो फिर परसों आना, कल थोड़ा काम है मुझको भी, अच्छा नमस्ते।'

द्वारा श्री नवेंदु भूषणकुमार
शाहपुर ठाकुरबाड़ी मोड़ के पास
दाउदपुर, दानापुर कैंट पटना 801503

सीमा स्मृति

उत्सव

महानगरों में प्रत्येक हाउसिंग सोसाइटी के आस-पास या कुछ दूरी पर प्रायः एक झुग्गी झोंपड़ी बस्ती होती है। वरना घरों में काम करने के लिए बाइयाँ कहाँ से मिलेंगी। मुझे मालिकों और नौकरों का रिश्ता परस्पर परजीवी-सा प्रतीत होता है। हमारी हाउसिंग सोसाइटी से कुछ दूरी पर, यमुना पुश्ते के पास एक झुग्गी झोंपड़ी बस्ती है।

उस दिन सुबह जब आँख खुली, न्यूज पेपर में खबर पढ़कर हैरान रह गई। यमुना पुश्ते की उस बस्ती में बीती शाम आग लग गई। पूरी बस्ती जल गई। ये शुक्र था, किसी के हताहत होने की खबर नहीं थी। बालकनी से देखा तो मिसेज शर्मा कार में कुछ सामान रख रही थीं। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने पूछा ही लिया–'मिसेज शर्मा, क्या कहीं जा रही हैं?'

'हाँ पुश्ते तक। क्या आपको मालूम नहीं, पुश्तेवाली झुगी बस्ती में कल रात आग लग गई है।' मिसेज शर्मा ने कहा। 'देखना आज कोई कामवाली नहीं आएगी'। सबसे बड़ा दर्द मिसेज शर्मा ने जल्द बाँट लिया। 'बस कुछ पुराने कपड़े, बर्तन और थोड़ा-सा खाने का सामान है। सोचा, वहाँ बाँट आऊँ। वहाँ तो सब जलकर खाक हो गया है।' मिसेज शर्मा ने बताया।

एक-दूसरे का दर्द बाँटने के कारण ही इंसानियत अभी जिंदा है। मुझे आफिस के लिए तैयार होना था और आज तो कामवाली का इंतजार करना भी बेकार है, यह सोच मैं जल्द अंदर आ गई। काम निपटा जब मैं आफिस के लिए निकली तो उसी बस्ती के आगे की मेन रोड से गुजर रही थी। देखा, सब जल चुका था और बस्ती के कुछ लोग उस बचे झुलसे सामान से कुछ खोज रहे थे। दूसरी ओर क्या देखती हूँ कि कारवालों की लंबी कतार थी। ऐसा लगा लोग, आज सब-कुछ दान कर देना चाहते थे। कितने जाने-पहचाने चेहरे हमारी ही सोसाइटी के थे। क्या कपड़े, बिस्कुट, रोटियाँ, डबल रोटियाँ, बरतन, पुरानी चप्पलें, चादरें, बाल्टी क्या-क्या नहीं बाँट रहे थे। यूँ कि दानवीर होने की किसी प्रतियोगिता का कोई लाइव शो चल रहा हो।

अचानक उसी शाम मुझे ऑफिस के काम से शहर से बाहर जाना पड़ा। चार दिन बाद लौटने पर मुझे लगा कि मैं भी बस्ती में कुछ देकर आऊँ। यही सोच कार में कुछ सामान रख रही थी तो मिसेज मेहता ने कहा, 'बस्ती के लिए सामान ले जा रही हैं।' अच्छा है, हम सबको बस्ती वालों की सहायता करनी चाहिए। जितनी जल्दी ये लोग रिहैबलिटेट होंगें, उतनी जल्दी ये कामवालियाँ काम पर आएगी। वर्ना मुश्किल तो हम वर्किंग लेडीज की होनेवाली है।'

मैं बस्ती में सामान बाँटकर निकल ही रही थी कि बरबस मेरे कदम एक बच्ची की मीठी-सी आवाज सुन थिर हो गए। वो अपनी बड़ी बहन से बिस्कुट का डिब्बा माँगते-माँगते कह रही थी, 'दीदी, दो ना, मुझे वो वाला पैकेट दो। दीदी, आजकल कितना बढ़िया सामान मिल रहा। देखो-देखो मेरी नई फ्राक। ये बिस्कुट तो बहुत स्वाद है, वाह मजा आ गया ओह, ये तो खत्म होनेवाला है। दीदी, दीदी बस्ती में दोबारा आग कब लगेगी?'

जी 11 **विवेक अपार्टमेंट, श्रेष्ठ विहार**
दिल्ली 110092

जगदीशराय कुलरियाँ

फेसबुक

मेरी फेसबुक की फ्रेंडलिस्ट में औरों के अतिरिक्त मेरी छात्राएँ भी शामिल है। यह ऑन लाइन कभी-कभार मुझसे मार्गदर्शन भी प्राप्त करती रहती है। अभी मैंने फेसबुक ऑन ही की है कि दबादब अपडेट्स आने शुरू हो गए हैं। मेरी छात्र रिंपी ने आज फिर आपनी प्रोफाइल पिक्चर चेंज कर दी है। सौभाग्य से यह ऑन लाइन भी है।

मैसेज आता है, 'सर, नमस्कार।'

'नमस्कार, क्या बात आज फिर फोटो चेंज कर डाली किसकी है यह?' मैंने पूछा है।

'सर, हीरोइन है कैटरीना कैफ!'

जबाब पढ़ते ही सिर घूमने लग जाता है कि आजकल के बच्चों को हो क्या गया है।

मैं फिर पूछता हूँ...'बेटा...इसकी फोटो क्यों लगाई है।'

'सर...कोई हमारी फोटो का मिस यूज न कर डाले, इसीलिए लगाई है'–उसने लिखा है।

'वह तो ठीक है बेटे, मगर आप सिर्फ एकट्रेस की फोटो ही क्यों लगाते हो, मदर टेरेसा और किरण बेदी की क्यों नही?'

मेरे इतना लिखते ही, रिंपी ऑफ लाइन हो गई।

46, **इम्पलाइज कॉलोनी**
बरेटा, जिला मानसा (पंजाब) 151501

अंकुश्री

वन महोत्सव

हर साल की तरह वन महोत्सव मनाया जा रहा था। वृक्षारोपण कार्य के बाद राज्यपाल महोदय ने भाषण दिया। अन्य मुख्य आगंतुकों का भी भाषण हुआ। सभी के भाषण प्रायः एक-जैसे थे। उसका सारांश था, 'जितने अधिक वृक्ष होंगे, पर्यावरण उतना ही स्वच्छ रहेगा। वृक्ष ऊँचे होंगे, वृष्टि उतनी ही अधिक होगी। वृक्षों की संख्या बढ़ने से लकड़ी एवं जलावन की समस्या का समाधान होगा ही, वन्यप्राणियों को भी सुरक्षा मिलेगी। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि हर बच्चा अपने जन्मदिन पर या उसकी याद में हर साल कम-से-कम एक वृक्ष अवश्य लगावे। जिस तरह नया वृक्ष लगाना जरूरी है, लगे हुए वृक्षों की रक्षा करना उससे भी अधिक जरूरी है।'

महोत्सव जोर-शोर से चल रहा था। भाषण के बाद वक्ताओं को थकान मिटाने के लिए नाश्ते का पैकेट और हलक तर करने के लिए ठंडे पेप की बोतलें दी गईं।

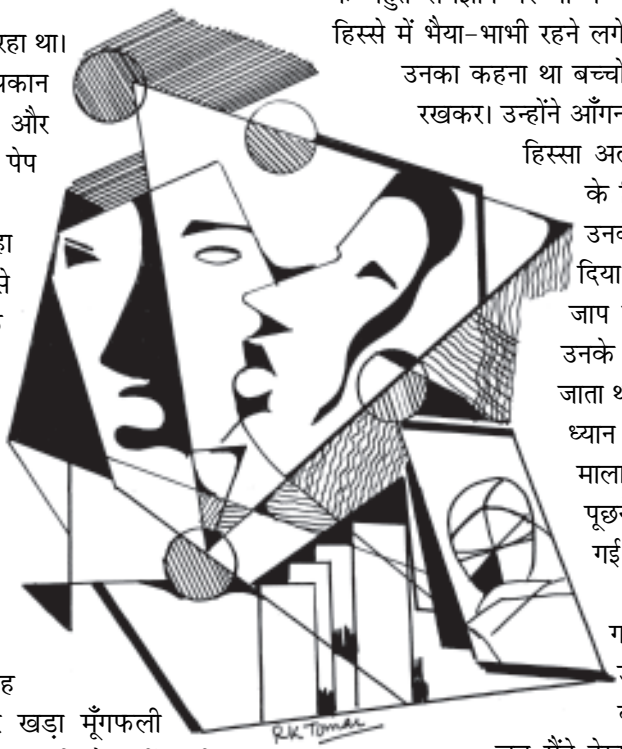

इधर महोत्सव संपन्न हो रहा था और उधर पंडाल के बगल से गुजरनेवाली मुख्य सड़क पर ट्रक गुजर रहे थे। उन पर लकड़ियाँ लदी थीं। उन्हें देखने से लग रहा था कि कच्ची उम्र में ही पेड़ काट लिए गए हैं।

'कच्ची उमिर के पेड़न को काट के जंगल बरबाद करने पर जब तक रोक नहीं लगेगी, ना पेड़ बढ़ेगा ना जंगल।' यह आवाज मूँगफलीवाले की थी। वह पंडाल के बाहर सड़क किनारे खड़ा मूँगफली बेच रहा था। उसकी आवाज किसी ने नहीं सुनी, क्योंकि उसे वन महोत्सव के लिए वक्ता के रूप में नहीं आमंत्रित किया गया था।

वन महोत्सव संपन्न हो जाने की खुशी में सभी व्यस्त थे। कार्यक्रम की समाप्ति पर धन्यवाद-ज्ञापन हो रहा था।

सिदरौल, प्रेस कॉलोनी
पोस्ट बॉक्स 28, **नामकुम**
राँची 834010

अनिता मंडा

ध्यान-पूजा

माँ को मुझसे ज्यादा भैया से लगाव था। किंतु भाभी ने माँ से कभी ताल-मेल नहीं बिठाया। यह बात भैया भी जानते थे। लेकिन भाभी के जिद्दी व कर्कश स्वभाव के कारण उनसे कभी कुछ नहीं कह पाते। भाभी अपने को आधुनिक ख्यालात का मानतीं। कुछ समय के अंतराल से घर में दो बच्चे भी आ गए। घर हरा-भरा हो गया।

बड़ा ढाई वर्ष का रोहन और छोटी रम्या अभी छह महीने की ही थी। माँ ने बहुत मेहनत की दोनों बच्चों को सँभालने में, पर भाभी के स्वभाव में कोई अंतर नहीं आया। रोज भाभी की जली-कटी, माँ को लेकर कहा-सुनी सुनने को टालने के लिए भैया ने पापा के सामने अपने अलग होने का फैसला रखा। पापा के बहुत समझाने पर माँ ने भी स्वीकृति दे दी। घर के आधे हिस्से में भैया-भाभी रहने लगे। पर भाभी इतने से भी न मानीं। उनका कहना था बच्चों को गँवार नहीं बनाना, गँवारों में रखकर। उन्होंने आँगन के बीच दीवार चुनवाकर अपना हिस्सा अलग कर लिया। राहुल और रम्या के लिए माँ का मन टूटता, पर भाभी उनको इधर नहीं भेजतीं। शाम को दिया-बाती के बाद माँ रोज माला का जाप करती थीं। राहुल जब साथ था, उनके ध्यान में व्यवधान करने पहुँच जाता था। इसलिए माँ रोज छत पर जाकर ध्यान करती थीं। अभी भी माँ छत पर माला जाप के लिए जाती थीं। हमारे पूछने पर कहतीं—मुझे यही आदत हो गई है।

एक दिन माँ को बहुत देर हो गई छत पर, मेरा ध्यान गया तो मैं ऊपर देखने जाने लगी। पर मेरे कदम यकायक आहिस्ता हो गए, जब मैंने देखा—माँ छत से झाँककर साँझ के धुँधलके में अपने पोते-पोती को निहार रही थीं। मैं दबे पाँव वापस आ गई। उनके ध्यान-पूजा में व्यवधान का साहस नहीं था मुझमें।

आई-137 द्वितीय तल
कीर्तिनगर
नई दिल्ली 110015

संध्या तिवारी

हरी बिल्ली

माध्यमिक बोर्ड उत्तर पुस्तिकाओ का जाँचकार्य चरम पर था। मास्साब दनादन कॉपी जाँचने में व्यस्त थे।

एकाएक! एक कॉपी के दो पन्ने ही चेक कर पाए थे कि कापी में चिपका सौ का नोट, रोल नंबर, विद्यार्थी का नाम और एक टिप्पणी–'कृपया नंबर बढ़ा दीजिए।'

अड़ोसी-पड़ोसी मास्टर मास्टरनियों ने एक-दूसरे को कनखियों से देखा। जैसे मन-ही-मन कह रहे हो–'हाय! ये कॉपी मेरे बंडल में क्यों न निकली?'

बीस पच्चीस कॉपियों के बाद फिर एक कॉपी में पाँच सौ का नोट और कुछ वैसी ही मिलती-जुलती टिप्पणी थी।

मास्साब प्रसन्नचित्त।

मास्साब की आज की किस्मत से परोक्षत: जले-भुने प्रत्यक्षत: प्रेम प्रदर्शित करते हुए एक साथी मास्साब ने पूछ ही डाला–'घर से निकलते समय क्या शगुन हुआ था, महाराज?'

मास्साब पहले तो सकुचाए फिर गद्‌गद् कंठ से बोले–

'शगुन क्या? वो भरी हुई बाल्टी देखी थी।' मास्साब कहकर झेंप गए।

'ओ, हो! जे बात!' साथी मास्साब ने टंकी लगाई।

परिणाम आने पर मेधावी छात्र के 70 और बैकबेंचर के 72 नंबर थे।

किसी का शगुन किसी का अपशगुन था।

उस टॉपर को क्या पता उसका रास्ता हरी बिल्ली काट गई थी।

द्वारा श्री राजेश तिवारी, पोस्ट मास्टर चैक
चैक पोस्ट ऑफिस
चैक बाजार चौक, पीलीभीत 262001 (उ०प्र०)

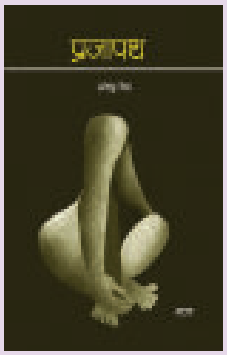

प्रजापथ

राजेन्द्र मिश्र

मूल्य
तीन सौ रुपए

हिंदी साहित्य निकेतन,
बिजनौर

प्रभात दुबे

बड़ी लूट

थानेदार के कमरे में बदहवास सी हालत में, विदेशी शराब के ठेकेदार ने लगभग दौड़ते हुए प्रवेश किया और कहा–'सर, यह तो गजब ही हो गया, दिन दहाड़े हमारी दुकान से तीन शराब की बोतलें लूट ली गईं'

'कौन थे वे लोग?' थानेदार ने गुस्से में कुर्सी से उठते हुए कहा।

'सर, कल्लू, मुन्ना और रफीक।'

'और कितने रुपए की शराब थी?'

'सर ग्यारह सौ रुपए की।'

यह सुनकर थानेदार दहाड़ा।

अभी आवाज हवा में तैर ही रही थी कि कमरे में ऊँची कद-काठी के तीन पहलवान सिपाही आकर खड़े हो गए। उन्होंने थानेदार को सेल्यूट मारा। थानेदार ने उन पर एक उचटती-सी नजर डाली और कहा–'सुनो, हमारी जीप ले जाओ, जिनका नाम यह ठेकेदार बता रहे हैं, उन लुटेरों को ढूँढकर, मारते हुए, मेरे सामने लाकर खड़ा करो। जाओ, जल्दी जाओ।

सिपाहियों ने फिर थानेदार को सेल्यूट मारा और तेजी से कमरे से बाहर की ओर भागे। उनके पीछे जाते हुए ठेकेदार को, थानेदार की आवाज सुनाई दी–'जायसवाल जी जरा सुनना।'–ठेकेदार ने पलटकर देखा, थानेदार उसकी ओर कागज की परची बढ़ाकर कह रहा था–'रात को कुछ वरिष्ठ अधिकारी बाहर से आ रहे हैं, यह शराब अभी भिजवा दो।' ठेकेदार ने परची हाथ में ली देखा और वह तत्काल समझ गया कि परची में लिखी शराब की कीमत दस हजार रुपयों से ज्यादा की ही होगी। बोझिल कदमों से कमरे बाहर जाते हुए ठेकेदार सोच रहा था कि काश यदि वह यहाँ न आया होता तो एक दिन में उसके साथ यह दुबारा बड़ी लूट न हुई होती।

111 **पुष्पांजली स्कूल के सामने**
शक्तिनगर, जबलपुर 482001 (म०प्र०)

तपते रेगिस्तान में, हिम्मत से ले काम।
धूल शूल-सी चुभ रही, कर उसको नाकाम।

श्यामसखा श्याम

कलयुगी विक्रमादित्य

प्रदेश के मुख्यमंत्री जनता के हर व्यक्ति से मिलते थे तथा चुटकियों में समस्या हल कर देने के लिए प्रसिद्ध थे। उनके दरबार से हाकिम, मातहत, प्रजा यहाँ तक कि कसूरवार भी खुश होकर बाहर आता था।

मास्टर नफेसिंह रिटायर्ड अध्यापक थे तथा उन्होंने प्राथमिक पाठशाला में मुख्यमंत्री को पढ़ाया था। यह अलग बात है कि मुख्यमंत्री बस प्राथमिक कक्षा ही पास कर सके थे, मगर वे पढ़े बेशक न थे, कढ़े हुए जरूर थे।

मास्टर नफेसिंह मुख्यमंत्री के पास पहुँचे। मुख्यमंत्री ने अपने गुरु को पहचानकर चरण छुए तथा दरबार में आए हर व्यक्ति से अपनी विनम्रता की वाहवाही लूट ली। अब मास्टर नफेसिंह को लगा कि उनका काम होकर रहेगा। उन्होंने शिकायत की कि गाँव का पटवारी उनकी जमीन के इंतकाल को चढ़ाने के लिए दौ सौ रुपये रिश्वत माँग रहा है और दो साल से चक्कर लगाने पर भी काम नहीं कर रहा।

मुख्यमंत्री मुस्कराए, कहने लगे, 'गुरुजी, आपने राजधानी तक आने का कितना किराया खर्च किया?'

मास्टर नफेसिंह ने कहा, 'बस व रिक्शा का मिलाकर कुल एक सौ दस रुपए।'

मुख्यमंत्री ने कुरते से बटुआ निकाला तथा नोट गिनकर मास्टर जी के हाथ पर रख दिए और कहा, 'मास्टर जी, यह हैं चार सौ बीस रुपये, दो सौ बीस आपके आने-जाने के किराए के तथा दो सौ पटवारी को देकर अपना काम करवा लें। और नाहक परेशान क्यों होते हैं?'

703 **जीएचएस** 88, **सेक्टर** 20, **पंचकुला** 134120

अशोक अंजुम

धंधा

'बाबूजी...!' उसने एल्यूमिनियम के कटोरे को आगे बढ़ाते हुए बड़ी कातर दृष्टि से देखा।

'चल-चल आगे बढ़!' उन पाँचों में से तीन के मुँह से एक साथ निकला था।

'स्सालों ने धंधा बना लिया है।' एक बोला।

वह कटोरा थामे अनमना-सा आगे बढ़ गया। वे पाँचों भी आगे एक सेठ की कोठी की तरफ बढ़ गए। वहाँ पहुँचकर एक ने कॉलबेल बजाई।

सेठ जी को ही दरवाजे पर आया देखकर उनमें से एक ने बैग में से रसीद-बुक निकाली और बोला,' सेठजी, कल शहर में स्वामी प्रसिद्धानंद जी पधार रहे हैं, गांधी मैदान में बहुत बड़ा जलसा है, आपका आर्थिक सहयोग चाहिए! कार्यक्रम में आपको पधारना भी है।'

सेठजी कुछ बोलते उससे पहले ही उनमें से एक ने एक हजार एक रुपये की रसीद काटकर सठजी के हाथों में थमा दी।

सेठजी ने अपने चेहरे पर घुले कसैलेपन को सँभालते हुए रुपये उन्हें थमाकर रवाना किया और अंदर की ओर बड़बड़ाते हुए पलटे, 'हुम्म..स्सालों ने धंधा बना लिया है!'

गली-2, **चंद्रविहार कॉलोनी**
(नगला डालचंद), क्वारसी बाईपास, अलीगढ़ 202 002
मो॰ 09258779744

गोपालबाबू शर्मा

एक और जाल

मोबाइल फोन की घंटी बजी। हिंदी के रीडर महोदय ने उसे कान से लगाया और कहा, 'हलो!'

उधर से उन्हीं के विभाग के साथी की आवाज आई, 'एक खुशखबरी है।'

'क्या?'

'यू॰जी॰सी॰ के अनुसार 'नैट' अब कंपलसरी नहीं रहा।'

'वाकई यह तो अच्छी खबर है। नैट सचमुच एक जाल ही था। बिना नैट से मुक्त हुए कोई प्रवक्ता बनने के लिए एप्लाई तक नहीं कर सकता था।'

'अब लोग पीएच॰डी॰ की तरफ ज्यादा भागेंगे।'

'हाँ, इसमें क्या शक है।''

'तो फिर तुम्हारे लिए मार्केटिंग शुरू कर दूँ?'

'क्या पॉसिबिलिटी है?'

'कम से कम साठ-सत्तर हजार। तीस 'सिनोप्सिस' मंजूर होने पर, बाकी थीसिस लिख जाने के बाद।'

'अभी इन्तजार करो। रेट और ऊँचे जाएँगे।'

शोध-छात्रों के लिए एक और जाल बुना जा रहा था।

46, **गोपाल विहार**
देवरी रोड, आगरा 282 001

मंजुश्री गुप्ता

उपहार

कमली मन-ही-मन बहुत खुश हो रही थी। आखिरकार उसने जो सोचा था, कर ही लिया। मगर कितनी मेहनत करनी पड़ी और अपनी खुद की कितनी इच्छाओं को मारना पड़ा। कल उसकी शादी की दसवीं सालगिरह है। कमली ने बहुत दिनों से सोच रखा है कि पति को मोबाइल उपहार में देगी। आठ घरों का झाड़ू-पोंछा और बरतन करती है। पिछले दो सालों से तीज-त्योहारों पर बंगलेवाले जो भी पैसे देते–बचाती आ रही थी। ऊपर से जब-जब भी शादियों का सीजन आता, कमली खाना बनाने का काम भी हाथ में ले लेती। हालाँकि वह बहुत ज्यादा थक जाती थी और बंगले वालों से चार बातें सुननी भी पड़ती थीं। मगर वह अपने पति को बहुत प्यार करती है। कभी-कभी दारू पीकर हाथ उठा लेता है तो क्या, प्यार भी तो करता है! सब बंगलेवाले कितने धूमधाम से जन्मदिन और शादियों की सालगिरह मनाया करते हैं। इस बार वह भी अपनी सालगिरह मनाएगी। खूब अच्छे से तैयार होकर फोटो खिंचाएगी! कितने दिनों से पति की इच्छा है, अच्छा मोबाइल लेने की, जब वह उसे मोबाइल देगी तो वह कितना आश्चर्यचकित हो जाएगा और वह उसे खूब प्यार करेगा।

आखिर इंतजार की घड़ी आ ही गई। कमली चार नंबर बंगले की मेमसाहब के साथ जाकर छह हजार का चाइनीज मोबाइल ले आई। उससे फोटो भी खींची जा सकती है। रेडियो भी चलता है और इंटरनेट भी! मोहन कितना खुश हो जाएगा!

शाम को वह खूब अच्छे से तैयार हुई। खूब बड़ी बिंदी और गहरी लिपस्टिक लगाई। हाथ भर के चूड़ियाँ पहनीं।

मोहन काम से लौटा। उसने दारू पी रखी थी।

कमली ने बड़े प्यार से लाल पन्नी में पैक मोबाइल का डिब्बा उसकी तरफ बढ़ाया-'शादी की सालगिरह मुबारक हो!'

'ये क्या है?' मोहन ने आश्चर्य से पूछा।

'खुद देख लो।' कमली ने इतराते हुए कहा।

पैकेट खोलकर जब मोहन ने मोबाइल देखा तो उसका पारा चढ़ गया। उसने एक झन्नाटेदार झापड़ कमली के गाल पर रसीद किया। 'साली! इतने पैसे कहाँ से लाई? चोरी की या कुछ और दारू पीने को माँगता हूँ तो पैसे नहीं होते तेरे पास! ये अमीरों के चोंचले रहने दे अपने घर में!'

कमली स्तब्ध रह गई। मोहन कमरे में जाकर नशे में धुत अपने बिस्तर पर पड़ गया। सुबह मोहन उठा तो उसका नशा काफूर हो गया। कमली और बच्चे घर पर नहीं थे!

एफ-25 **यू आई टी कॉलोनी, ढोलाभाटा**
अजमेर (राजस्थान) 305007

प्रेम गुप्ता 'मानी'

अफवाह

पूरे मोहल्ले में यह खबर आग की तरह फैल गई कि पंडित राघोराम की जवान लड़की गीता को पुलिस पकड़कर ले गई। लेडी पुलिस जीप लेकर आई थी।

ख़बर सुनते ही मोहल्ले के लोग बहाने से राघोराम के घर में ताँक-झाँक करने लगे, पर वहाँ से उन्हें कोई भी सुराग नहीं मिल पर रहा था। जवान लड़की के यूँ पकड़े जाने पर जिस हलचल की आशा वे सब कर रहे थे, उसके प्रतिकूल राघोराम के घर में शांति छाई हुई थी, जिसके कारण सबको निराश होना पड़ रहा था। उनकी बेशर्मी से सब हैरान थे।

हारकर वे सब अन्नो ताई के पास पहुँचे, क्योंकि अन्नो ताई का कहना था कि सब-कुछ उन्होंने अपनी आँखों से देखा है। सारे दिन अन्नो ताई के घर सबका आना-जाना लगा रहा और वे सबकी जिज्ञासा अपने ढंग से शांत करती रही, 'अरे भैया, ऊ तो कहो कि हम अपनी आँखिन से देख लीहा, नाही तो भला कौनो को पता लगता। अरे, हम तो पहिले ही कहित रहै कि ऊ छोरी के लच्छन ठीक नाही...दैखो पूरा मुहल्ला केर नाक काटि लिहन...।'

पंडित राघोराम पूरे मोहल्ले में फैल रही चर्चा से निरपेक्ष अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहे। जब भी वे बाहर निकलते, मोहल्ले वाले छिप-छिपकर उनकी ओर देखते और कानाफूसी करते। पर वाह रे बेशर्मी, उन्हें रत्ती-भर भी परवाह नहीं हुई। अब ऐसे में साफ बात कहकर सीधा झगड़ा कौन मोल ले।

इस कांड से किसी को लाभ हुआ हो चाहे नहीं, पर राधा देवी को जरूर हुआ। कितनी बार राघोराम की घरवाली ने उसकी लड़की की बात को लेकर उसे नीचा दिखाया है, अब वह जमकर बदला लेगी। उसने बात को और बढ़ा-चढ़ाकर फैलाना शुरू कर दिया। उसने किसी तरह यह सुराग भी लगा लिया कि गीता आज पाँच दिनों बाद वापस आ रही है। यह पता लगते ही सब अपने-अपने घरों के दरवाजे पर खड़े हो गए।

थोड़ी देर बाद एक जीप पंडित राघोराम के दरवाजे पर आकर रुकी। उस पर से हँसती हुई गीता उतरी, तो सबके मुँह लटक गए। जीप में एन॰सी॰सी॰ की वर्दियाँ पहने लड़कियाँ बैठी थीं, जो चार दिनों का कैंप लगाने के बाद लौटी थीं। उनकी वर्दी के कारण ही अन्नो ताई ने उन्हें पुलिस समझ लिया था।

जीप धूल उड़ाती चली गई, तो मोहल्ले वाले अन्नो ताई को कोसते हुए अपने-अपने घरों के दरवाजे बंद करने लगे।

एम॰आई॰जी-292 **कैलाशविहार, आवास विकास योजना संख्या एक, कल्याणपुर, कानपुर** 208017

भावना सक्सेना

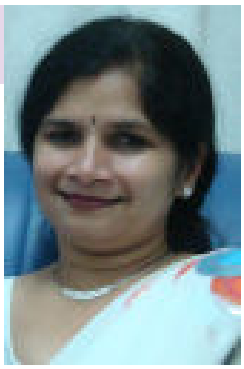

कॉक्रोच

सरकारी दफ्तर का एक अधिकारी...निजी सरकारी फोन, जरूरी बातें!

(दस्तक)...सर नमस्ते! क्या हम अंदर आ सकते हैं (आँख का इशारा पा दोनों अंदर पहुँचकर खड़े हो गए)

फोन पर वार्तालाप जारी है...हाँ भई सौदा बढ़िया है, मैं भी सोच रहा हूँ जयपुर में ही मकान खरीदूँ...आवास विकास के बढ़िया हैं...अरे ना ना भाई जहाँ बो रहेगो हम ना रह सकत बा... कौन ससुर रोज-दिन दिमाग खराब करबे...(वार्तालाप जारी है)

'सर हम बैठ जाएँ?'

'...हम्म्म...बैठो...'

'...अरे वा को तो मैं आभास कराके छोड़ूँआ...बोइ जैसे दसरथ नै मरने से पहले हो रहिया...जरूरी है (वार्तालाप लगभग 20 मिनट जारी है)...चल बाद मैं बात करेंगे...'

'हाँ जी आपका क्या काम है...?'

'सर हम परसों आपके पास आए थे...'उस' फाइल का पता करना था वापस आ गई क्या?'

हाथ फिर रिसीवर पर...उँगलियाँ बटन दबा रही हैं...एक बार...दो बार...तीन...चार बार...रिसीवर गर्दन में दबा साहब ने एक लिस्ट निकाली...आगंतुक खुश, साहब फाइल का पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं...

झल्लाकर रिसीवर पटकते हुए...देखिए तो कितने कॉक्रोच हो रहे हैं मेरे कमरे में...एडमिन में फोन करता हूँ कोई उठाता ही नहीं।

'सर वो फाइल...'

'नया कमरा है, नई बिल्डिंग है, पता नहीं कहाँ से आते हैं ये कॉक्रोच!'

'सर प्लीज, फाइल का पता करेंगे!'

'हम्म्म, ...क्या नाम बताया आपने?'

'...'

साहब मेज के एक ओर बनी शेल्फ पर रखी फाइलें एक-एक कर उठाते जाते हैं...

आगंतुक खुश, साहब फाइल का पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं।

एक फाइल लेकर करीब दस मिनट उसे पढ़ते हैं...(पटकते हुए)...'जाने क्या-क्या मसौदे आते हैं इस दफ्तर में।'

'सर प्लीज...जरूरी न होता तो आपको इस तरह परेशान न करते।'

'वही तो मैं कह रहा हूँ। बार-बार अफसर के पास जाना ठीक नहीं...आपकी फाइल आगे भेज दी है, आप तक पहुँच जाएगी।'

'अभी कहाँ होगी सर!'

अभी...अभी तो जी आप जाइए. ..यहाँ बैठकर समय खराब करने का क्या फायदा, फाइल पर हस्ताक्षर होकर आएँगे, तो आप तक पहुँचवा दूँगा।

अंदर जाने के पचास मिनट बाद. ..शर्मिंदा...रोष से भरे दो चेहरे बाहर हो गए...

...पता नहीं कहाँ से आते हैं ये कॉक्रोच!

64, **प्रथम तल**
इंद्रप्रस्थ कॉलोनी, सेक्टर 30-33
फरीदाबाद (हरियाणा)

सीमा सिंह

भूत

वो अपनी छोटी बहन को बड़े प्यार से सुला रही थी। 'मिट्ठू! मम्मा-पापा भगवान के घर चले गए तो क्या, मैं हूँ ना तेरा ख्याल रखने के लिए।'

'और चाचू भी तो हैं ना, दीदी।' मिटठू ने और भी समझदार होते हुए कहा।

चाचू के नाम पर बहन के चेहरे पर कितने ही रंग आए और चले गए। बोली-'चाचू के कमरे में कभी मत जाना, वो रात में भूत बन जाते हैं।'

बाहर आहट हुई। आहट के साथ उठते हुए निमिषा ने सख्त स्वर में कहा, 'मैं आती हूँ। वो भूत वाली बात कभी भूलना मत, मिट्ठू!'

देर तक निमिषा वापस नहीं आई। दीदी के प्रति प्रेम डर पर भारी पड़ा। मिट्ठू दबे पाँव चाचू के कमरे तक पहुँच चुकी थी।

'मेरे साथ आपने जो किया, मैं सह गई। मगर, मेरी बहन पर बुरी नजर डाली तो' निमिषा चीख रही थी-'मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।'

मिट्ठू डर गई।

आज चाचू ने दीदी को भी भूत बना दिया था। निर्वस्त्र, नितांत नग्न!

111ए /39 **अशोक नगर**
कानपुर 208012
मो॰ 8948619547

कमल चोपड़ा

इतनी दूर

खबर फोन पर मिली थी, जिसे सुनकर वह एकाएक उदास हो गई थी। घबराकर पति ने पूछा था–खैर तो है? भर्राए स्वर में उसने कहा, 'भैया कंपनी की तरफ से यू॰के॰ जा रहे हैं। एक ही तो भाई है मेरा, वो भी विदेश जा रहा है। इतनी दूर!'

ठठाकर हँस पड़ा–'अरे यह तो खुशी की बात है। यहाँ रखा ही क्या है? विदेश की बात ही कुछ और है। वैसे भी अब तो ग्लोबलाइजेशन हो चुका है! अब क्या देश क्या विदेश, कहीं कोई फर्क नहीं! दूरियाँ घट रही हैं। बटन दबाओ और जिससे मन चाहे बात कर लो। एक ही शहर में रहते हुए भी रोज-रोज कहाँ मिलना हो पाता है? सालभर बाद कभी किसी शादी ब्याह में मिल लिए तो मिल लिए। आम तौर पर फोन पर बात होती है। फोन के लिए अब कहीं कुछ क्या दूर। फोन पर बात करके मिले बराबर हो जाता है। मुझे देखो, मेरा एक भाई कनाडा में है और बहन यू॰एस॰ए॰ और जबसे पुराना मकान बेचकर यहाँ दो फ्लोर लिए हैं, बापू ग्राउंड फ्लोर पर रहते हैं और हम थर्ड फ्लोर पर फिर भी बापू से कई-कई दिन बाद मिलना हो पाता है। मोबाइल एस॰एम॰एस॰ और नेट ने सब-कुछ पास-पास कर दिया है। सारी दुनिया एक गाँव बन चुकी है, इसलिए तुम्हारी उदासी का कोई मतलब नहीं। बस एक क्लिक और दूरियाँ खत्म...हा हा।'

तभी कॉल बैल बजी। लपककर उसने छज्जे से नीचे झाँका। बाबूजी वाले पोर्शन के बाहर तीन-चार लोगों के साथ बाबूजी की कामवाली बाई खड़ी थी। लपककर वह नीचे आया।

दरवाजा अंदर से बंद था। बाबूजी खोल ही नहीं रहे थे। पड़ोसी ने आगे बढ़कर कहा–'मुझे तो यू॰एस॰ए॰ से आपकी सिस्टर का फोन आया था। बाबूजी ने ही दिया होगा उन्हें मेरा नंबर। सिस्टर कह रही थी वे दो दिन से बाबूजी को फोन मिला रही हैं। नो-रिप्लाई जा रहा है। बाबूजी उठा ही नहीं रहे। उन्हें चिंता हो रही थी। सिस्टर ने ही बताया कि इसी बिल्डिंग में आप थर्ड फ्लोर पर रहते हैं। ये आपके फादर हैं, मुझे तो पता ही नहीं था! ऐसा कभी जिक्र ही नहीं हुआ न? मैं खटखटा ही रहा था कि ये कामवाली भी आ गई...।'

कामवाली के चेहरे पर भी चिंता थी–'मैं अब्बी आई तो ये दरवाजा खटखटा रहे थे, पर बाबूजी दरवाजा ही नहीं खोल रहे। परसों काम के सुबह ग्यारह बजे जब मैं यहाँ से गई, तब तक तो बाबूजी ठीक-ठाक थे। कल होली को मेरी छुट्टी थी। कल मैं नहीं आई।'

शर्म आ रही थी उसे। इतना पास रहते हुए भी उसने कई दिन से बाबूजी की कोई सुध नहीं ली थी। अपनी ही दुनिया में मस्त था। फोन तक नहीं किया! और बाबू जी इधर...। दरवाजा तोड़ा गया। सामने ईजी चेयर पर बाबू जी बेजान पड़े थे। गर्दन एक तरफ को लुढ़की पड़ी थी। उनकी खुली हुई आँखें दरवाजे की ओर ताक रही थीं, जैसे किसी का इंतजार कर रही हों।

1600/114, **त्रिनगर, नई दिल्ली** 110035

अरुणकुमार गौड़

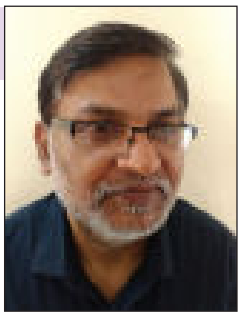

करवा चौथ का कड़ुआ सच

अगले दिन की छुट्टी का आवेदन-पत्र बॉस के सामने रखते हुए महिला कर्मचारी ने कारण स्पष्ट किया कि कल करवाचौथ है, वर्ष में एक ही ऐसा दिन है, जब पति के साथ पूरे दिन रहने की इच्छा रहती है। बॉस ने मुस्कुराकर छुट्टी स्वीकृत कर दी।

महिला ने घर में बड़बड़ाते हुए प्रवेश किया–'अगर बॉस करवाचौथ की छुट्टी भी नहीं दें, तो ऐसी नौकरी किस काम की? इससे अच्छा मैं नौकरी ही ना करूँ।'

पति ने हँसते हुए कहा–'यह कोई गंभीर मुद्दा नहीं है। शाम को चंद्रमा देखने के बाद दोनों साथ ही खाना खाएँगे और फिर सारी रात्रि साथ ही तो हैं।'

करवाचौथ के दिन महिला नौकरी के लिए घर से निकली। पुरुष मित्र दो चौराहे छोड़कर आगेवाली गली में चार पहिया वाहन लिये हुए खड़ा मिल गया। दोनों किसी अनजान राह पर निकल पड़े। दिनभर घूमते रहे, नाश्ता-खाना वगैरह चलता रहा और प्रीत की किश्ती में सवार दोनों को समय का भान ही नहीं रहा।

'अरे यार, मुझे घर जाना पड़ेगा। वो बेचारा मेरा मुँह देखकर खाना खाएगा' अचानक महिला मित्र ने कहा।

पुरुष मित्र को भी उसके विवाहित होने का ख्याल आया। वह बोला–'यार, मेरी धर्मपत्नी भी मेरा मुँह देखकर ही खाना खाएगी।'

और दोनों करवाचौथ का कड़वा सच प्रकट कर एक-दूसरे से विदा हो गए।

मन मंदिर कॉलोनी
वार्ड सं॰ 4
बालोतरा 344022 **(राजस्थान)**

पूरनसिंह

बाजरे की रोटी

लंच शुरू हो गया था। रणवीर ठाकुर, जितेंद्र मिश्रा और राजीव गुप्ता साथ-साथ खाना खा रहे थे। ये सभी लोग मेरे असिस्टेंट हैं।

यार पालक-पनीर तो बहुत स्वादिष्ट बना है। बड़ा टेस्टी है। राजीव गुप्ता खाने में बहुत माहिर है।

पनीर असल में, पालक के साथ थोड़ा और होता, तब मजा आता। जितेंद्र मिश्रा को हर चीज थोड़ी और चाहिए।

पालक के साथ मक्का की रोटी बहुत अच्छी लगती है। जब गाँव में था...लेकिन अब क्या इस शहर में आकर सब-कुछ। रणवीर ठाकुर रह जरूर दिल्ली में रहा है, लेकिन उसका मन हमेशा उसके गाँव में, अतीत में ही डूबा रहता है।

मैं सभी की बातें सुन रहा था कि अम्मा-पिताजी याद आ गए थे, कैसे अम्मा लोगों के खेतों से माँगकर लाए गए पालक, मेथी, बथुआ और सरसों को मिलाकर साग बनाया करती थी और शाम को पिताजी पूरे दिन मजदूरी करके बाजरा खरीदकर अपनी कमीज के दामन में लाते थे और अम्मा उसे छाँट-फटककर पीसती थी, तब बाजरे की रोटी के साथ साग खाया जाता था। सोचते-सोचते ही मुँह से निकल गया था, 'अच्छा आप सभी एक बात बताओ, आपमें से किसी ने बाजरे की रोटी के साथ मिक्स साग खाया है।'

'बाजरे की रोटी!' जितेंद्र मिश्रा बोला था।

हाँ-हाँ, बाजरे की रोटी।'

'सर हम जानते हैं बाजरा...सर, बाजरा हमारे यहाँ जानवरों के लिए बोया जाता था...सर बाजरा तो जानवर खाते थे।' एक ही साँस में तो बोल गया था जितेंद्र मिश्रा।

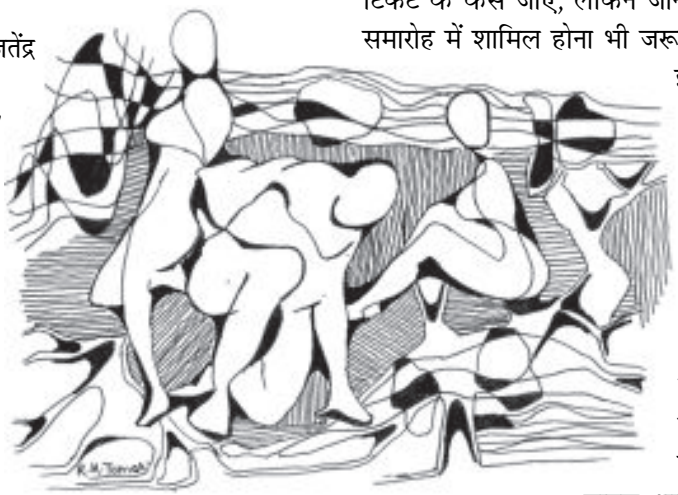

इतना सुनते ही मेरी आँखों की कोर से आँसू निकले और मेरी सब्जी में मिक्स हो गए। उस दिन कोई नहीं जान पाया था कि मन से निकली पीड़ा आँसुओं से होती हुई बिखर गई थी।

240, **बाबा फरीदपुरी**
वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली 110008

सोनी धवन

नीयत

कितना भी जल्दी सोचो, पर देर हो ही जाती है, फिर वही प्लेटफार्म पर भागमभाग। डिब्बे में अपना सामान रखते हुए सौम्या चौंककर बोली-'अरे सरस! वो लाल बैग कहाँ है?'

दोनों ने हड़बड़ाकर प्लेटफार्म पर भी देखा पर वो वहाँ कहाँ?

'ओह लगता है, हड़बड़ी में हमलोग रिक्शे से बैग उठाना ही भूल गए।'

'अब क्या होगा, उसी के अंदर छोटे पर्स में टिकट व पैसे सब रखा था। गर्म कपड़े भी उसी में'...परेशान होते हुए सरस बोली।

'मैं जाकर देखती हूँ शायद रिक्शेवाला मिल ही जाए।'

'पागल हो, वो रुका होगा क्या? गाड़ी भी तो छूटनेवाली है।'

'नहीं, मैं जल्दी से देखकर आती हूँ।' सौम्या कह ही रही थी कि सामने बैठे सज्जन बोल उठे-'कहाँ परेशान होगी, बैग देखते ही वह भाग गया होगा। छोटे लोग हैं, इनकी नियत ही ऐसी होती है, तभी तो बरक्कत नहीं रहती है।'

तभी गाड़ी ने सीटी दे दी। क्या करे क्या न करे। बिना टिकट के कैसे जाए, लेकिन जाना भी जरूरी है, कल शादी के समारोह में शामिल होना भी जरूरी है।

इसी उधेड़बुन में थी तभी हाँफती हुई आवाज में किसी ने कहा-'आपका बैग।'

उसने चौककर देखा वही रिक्शेवाला था।

'मैं जब तक इसे देखता आप लोग पता नहीं किधर चले गए। मैंने प्लेटफार्म पर भी देखा फिर इसके अंदर रखे टिकट से जान पाया कि आप इस डिब्बे में हैं। कहता हुआ वह तेजी से वापस भागा। गाड़ी रफ्तार पकड़ चुकी थी। जब तक वे आश्चर्य से उबरतीं, वह जा चुका था, बिना धन्यवाद व प्रशंसा सुने।

6, **गुजराती मोहल्ला**
इलाहाबाद 211001
मो॰ 9336838774

मिथिलेशकुमारी मिश्र

हर शाख पे...

किसी की रिपोर्ट पर रेलवे विजलेंस के अधिकारी ने पटना जं॰ पर कार्यरत टी॰सी॰ रामेंद्र को घूस लेते हुए पकड़ लिया और उसे पूछताछ हेतु कार्यालय में लाया गया। सर्वप्रथम एक चार्जशीट देकर उसे हस्ताक्षर करके एक प्रति लौटाने को कहा। चार्जशीट अँग्रेजी में लिखी हुई थी।

रामेंद्र ने उस चार्जशीट को ऊपर से नीचे तक बार-बार देखा, मगर उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि इसमें क्या लिखा हुआ है? अतः, उसने पूछ ही लिया, 'सर! हिंदी में समझा दीजिए।'

'क्यों? तुम अँग्रेजी नहीं समझ पाते हो?'

'नहीं सर!'

'तुम तो बी॰ए॰ पास हो न?'

'जी सर!'

'तो फिर...?'

'सर! आपसे क्या छिपाना?'

'चोरी से सारी परीक्षाएँ पास की थीं...मैं ही क्या, तमाम लड़के ऐसे ही...।'

'कमीशन की रिटन परीक्षा...?'

अब तक विजलेंस अधिकारी ढीला पड़ चुका था। उसे हँसी आ गई और कुछ क्षणोपरांत उसने पुनः पूछा, 'कितना पैसा दिया था?'

'ढाई लाख...!'

'इतना पैसा था...तुम्हारे पिता के पास?'

'कुछ था, कुछ जमीन बेचकर, कुछ कर्ज लेकर..।'

'इतना पैसा देकर नौकरी पाने में तुम्हें क्या लाभ हुआ?'

'सर! शादी में कम-से-कम पाँच लाख मिलेगा और बाकी सर, अभी शुरू किया था कि आपने धर लिया।'

विजलेंस अधिकारी अब बहुत ही सहज हो चुका था, 'अब तक कितना कमा चुके हो?'

'अधिक नहीं सर! दो महीने में कितना कमाते...करीब दस हजार...सर आपसे झूठ नहीं बोलूँगा।' रामेंद्र भी अबतक सहज हो चुका था।

'तुम्हारे जैसे अन्य लोग भी इसी तरह रेलवे में आ गए होंगे?'

'जी एकाध नहीं...सैकड़ों...ऊपर से नीचे तक सभी मिले रहते हैं।'

विजलेंस अधिकारी को लगा इससे और अधिक पूछ-ताछ कर इस पर कार्रवाई का कोई अर्थ नहीं होगा।

इसी प्रकार यह मुक्त भी हो जाएगा...मैं अपनी प्रतिष्ठा क्यों खोऊँ? अतः उसने रामेंद्र से चार्जशीट लेकर कहा, 'जाओ! अपना काम करो।'

वाणी-वाटिका
सैदपुर, पटना 800004

आकांक्षा यादव

इक्कीसवीं सदी की बेटी

वह एक आदर्श एवं सु-संस्कृत लड़की थी। घरवाले हमेशा उसकी तारीफ करते। रंग भले ही साँवला था, पर गुणों की खान। हर चीज को सहेजना, हर किसी की जरूरतों का ख्याल रखना कोई उससे सीखे।

लड़की बड़ी हुई तो माँ-बाप को शादी की चिंता। उसने भी अपने सपनों के राजकुमार के लिए न जाने कितने सपने सँजो रखे थे। खैर, वो दिन भी आ गया।

'आप की शिक्षा कितनी है?'

'जी, एम॰ए॰।'

'आपकी रुचियाँ क्या-क्या हैं?'

'जी, अच्छे-अच्छे पकवान बनाना, बागवानी करना, संगीत सुनना।'

लड़केवालों ने उसे एक बार साड़ी में देखा, फिर सलवार-सूट में। वह मन ही मन सोच रही थी कि एक बार तो हाँ कहकर देखो पूरा जीवन खुशियों से भर दूँगी। तभी उसके कान ड्राइंग रूम में चल रही वार्ता पर टिक गए।

'सब-कुछ तो ठीक है। पर रंग जरा दबा हुआ है।'

'जी, रंग से क्या होता है? हमारी बिटिया तो गुणवान है।'

'गुणवान से क्या होता है। हमें तो बहू गोरी-चिट्टी चाहिए।'

इतना सुनते ही वह ड्राइंग रूम में आई और लड़केवालों की तरफ मुखातिब होकर बोली, 'कभी आपने अपने बेटे का चेहरा ध्यान से देखा है? जब आप लोगों को अपने बेटे का रंग साँवला होने पर शर्मिंदगी नहीं होती तो एक लड़की के साँवले रंग पर प्रश्नचिह्न क्यों? यदि आप मेरे गुणों को कोई महत्त्व नहीं देते तो मैं भावी पति की किसी भी सँभावना के रूप में आपके बेटे को रिजेक्ट करती हूँ।'

टाइप 5 निदेशक बंगला, पोस्टल ऑफिसर्स कॉलोनी
जेडीए सर्किल के निकट
जोधपुर, राजस्थान 342001
मो॰ 09413666599

भावना कुँअर

मुखौटे

आज मकान मालिक के घर में पूजा थी, ठीक पिछले साल की तरह। किरायेदार मालती को लगा कि चाची कल कहना भूल गई होंगी, आज ही बुला लेंगी। दरवाजे पर खड़ी आने-जाने वाली औरतों के पैर छूने में मशगूल थी! छोटी जो थी सबसे। कॉलोनी की सभी औरतें पहचानती जो थी मालती को और प्यार भी बहुत करती थीं। सभी औरतें तकरीबन अंदर आ चुकी थीं; पर मालती को किसी ने अंदर आने को नहीं कहा। मालती समझ नहीं पाई की क्या बात है? तभी उसके कानों में पूजा के शुरू होने के स्वर गूँजे। वो मन में हजारों सवाल लिए अपने कमरे में चली गई। जाने कैसे दिल पर लगी थी कि अगले दिन भी मालती बाहर नहीं निकली। तभी दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। जाकर दरवाजा खोला, तो सामने चाचीजी खड़ी थीं। मालती ने उनके पैर छुए; पर कोई हाथ आशीर्वाद में न उठा। न ही कोई शब्द कानों में पड़ा।

जो सुना वह यह था–'मालती तुम्हें लगा तो होगा कि कल पूजा में मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, जबकि पिछले साल बुलाया था। मैंने तुम्हें जानबूझकर नहीं बुलाया, क्योंकि पिछले साल तुम पति के साथ थीं। अभी मैंने किसी से सुना है कि तुमने पति से अलग होने की अर्जी दे रखी है। हाँ, मैंने ही तुम्हें बताया था कि तुम्हारे पीछे तुम्हारा पति किसी लड़की के साथ यहाँ पूरे दो हफ्ते रहा है। मैं जानती हूँ कि वह चरित्रहीन है, पर यह समाज है ना, चरित्रहीन पुरुष को तो स्वीकारता है; पर औरत सच्ची और सही भी हो तो दोषी उसे ही बताता है। कॉलोनी में तुम्हारे बारे में लोग भला-बुरा कह रहे हैं। मैं जानती हूँ–तुम बहुत अच्छी हो, पर मैं मजबूर थी ये पूजा सुहागनों की थी और अब तो तुम सुहागन नहीं हो ना, बेटा!'

सारी बातें मालती के कानों में पिघले शीशे-सी चुभ रही थीं, पर चेहरे पर एक अजीब-सी कसैली मुस्कान थी, यही सोचकर कि चलो देर से ही सही; पर पता तो चला कि लोग किस-किस तरह से क्या-क्या सोचते हैं! कितनी आसानी से लोग दो-दो मुखौटे पहनकर घूमते हैं!

ई-मेल bhawnak2002@gmail.com

माधव नागदा

बिग बॉस

रामबाबू को बॉस दो बार अपने कमरे में बुला चुके हैं। वही सुहालका एंड सुहालका के टेंडरवाला मामला। बीस कम हैं तो क्या। प्रताप एंड संस को किसी तरह रिजेक्ट कर दो। बहुत से दाँव-पेंच हैं। आपसे पहले वाले एकाउंटेंट श्यामबाबू करते ही थे। कोई बाल तक बाँका नहीं कर सका। और सुनो। जब दुबारा बुलावा आया तो साहब ने संकेत कर ही दिया। सुर को जरा धीमा करके बोले, 'पहुँची हुई पार्टी है। करोड़पति। एक पेटी का ऑफर दिया है। आधी तुम्हारी। बस! खुश! फिर ठहाका लगाते हुए कहा, 'रामजी, सब कर रहे हैं आजकल। सरकार कानून बनाने वाली है कि रिश्वत देना अपराध नहीं होगा। देना अपराध नहीं तो लेना कैसे हो गया? समझ गए न? इसलिए बेधड़क रहो और अभी का अभी फाइनल कर दो।'

रामबाबू चुपचाप अपनी सीट पर आकर बैठ गए। बैठे रहे। अपने-आपमें डूबे हुए से। एकाएक उन्होंने सुहालका वाली फाइल एक तरफ पटक दी और प्रताप एंड संस को पास कर ठप्पे लगाने लगे। जोर-जोर से। इतने में रोड़ीलाल ने आकर कहा, 'रामबाबूजी, बॉस ने पुछवाया है कि उन्होंने जो काम कहा, वह हो गया क्या?'

'नहीं हुआ रोड़ीलाल। बॉस को कहना कि बिग बॉस ने मना कर दिया है।'

रोड़ीलाल नासमझ की तरह खड़ा रहा। फिर हिम्मत बटोरकर सवाल किया, 'रामबाबूजी, ये बिग बॉस कौन है? कहाँ है इसका ऑफिस?'

'बिग बॉस हम सबके भीतर रहता है रोड़ीलाल। हरदम चिल्लाता रहता है कि यह ठीक है, यह गलत है। मगर आजकल उसकी सुनता कौन है?' रामबाबू ने दार्शनिक अंदाज में कहा, 'खैर तुम नहीं समझोगे। यह फाइल लेते जाओ। साहब की टेबल पर पटक देना।'

रोड़ीलाल जाते-जाते ठिठक गया। कहने लगा, 'मैं सब समझ गया। मेरा बिग बॉस कहता है कि आप सच्चे आदमी हो।'

लालमादड़ी
नाथद्वारा 313301(राज॰)

गौतमकुमार सागर

अजनबी जैसे हमसफर

नई-नई शादी। नए स्वप्न। नई उमंगें। नव दांपत्य-जीवन की अलसाई कुमुदनियों-सी सुबहें, गुलाबी सुरमई शामें और बेशुमार रजनीगंधा-से खुशबूदार रतजगे।

संयुक्त परिवार में...एक लंबी-सी चौड़ी छत...आँगन की ओर खुलते कमरे...रिश्तेदारों की ताकती-झाँकती नजरें...एकांत के बहुमूल्य क्षण की तलाश में लजाते, शरमाते नए वर-वधू। शोख नयनों के इशारे....नए-नए कोड वर्ड में होती बातचीतें, दबी-दबी पनीली मुस्कुराहटें। जीवन के सबसे हसीन कुछ महीने, जो दोबारा लौटकर नहीं आनेवाले, मीठी आँच का प्रेम अलाव, जिन्हें तापते दो ठिठुरते जवाँ बदन। चैत के मुँहचोर चाँद को निहारते शीतल समीर के झकोरों में कंधे पर सिर रखकर मधु बतियाँ महुए के मादक फलों की पतित-ध्वनियों सी कानाफूसियाँ। फिरदौस-ए-इश्क के किवाड़ के दो पल्लों की तरह खुलती-बंद होती दो हथेलियाँ...दो हृदय...दो रूहें।

यह सब प्रकाशबाबू को याद आ रहा है, विवाह के करीब 28 वर्ष बाद। वे इसे अपनी धर्मपत्नी, विभा को बताते हैं...तो वह लजाकर झिड़कती है और कहती है...'दैया! अपनी उमर तो देखो...सठियाने की उमर में शोले दहक रहे हैं। अभी दो सप्ताह पहले बेटे की शादी की है, नई बहू घर में आई है, और आप?'

प्रकाशबाबू, चिंतित स्वर में कहते है, 'वही तो मैं कह रहा हूँ। नई-नई शादी के बाद क्या खुमारी, कैसी मदहोशियाँ और खुशियाँ रहती हैं। वह चीज मैं आलोक और निवेदिता में नहीं देख पा रहा हूँ, अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ, दोनों के बीच क्या सब-कुछ ठीक है? कभी उन्हें आपस में हँसते, कानाफूसी करते, इशारे करते नहीं देखा।'

'हाँ! यह बात मैंने भी नोट की है। सोचा-बहू से पूछूँ कि कहीं उसे यहाँ कोई परेशानी तो नहीं।' आलोक की माँ के चेहरे पर उदासी की लकीर खींच आई।

अगले दिन शाम को प्रकाशबाबू ऑफिस से आए। चाय पीते हुए अनायास पूछा, 'बेटे-बहू...कहीं घूमने गए हैं, क्या?'

'नहीं, वे दोनो छत पर हैं।' विभादेवी ने कहा।

प्रकाशबाबू को अनायास क्या सूझा, अपनी पत्नी का हाथ पकड़ा और कहा, 'चलो छत पर चलते हैं। ठंडी हवा में।'

'अरे, रुको...' वह कहती-कहती रह गई।

ऊपर उन्होंने देखा—आलोक और निवेदिता दोनों झूले पर बैठे हुए हैं। ठंडी हवा बह रही हैं। दोनों करीब बैठे हुए हैं। मगर चुप हैं। दोनों ने अपने कानों में इयर फोंस लगा रखे हैं। दोनों अपने-अपने स्मार्टफोन पर लगे हुए हैं...व्हाट्सएप और फेसबुक पर।

करीब आधे घंटे तक प्रकाशबाबू और विभादेवी ने दरवाजे की आड़ में खड़े-खड़े देखा। बहू-बेटे चुपचाप आभासी दुनिया में मस्त थे, मानो जीवन साथी नहीं, किसी रेल के दो अजनबी मुसाफिर हों।

प्रकाशबाबू...तेजी से आए और उन दोनों के फोन छीनते हुए कहा, 'माफ करना! लेकिन यह जरूरी है, अब तुम दोनों को फोन पूरे एक महीने बाद मिलेगा। किसी से बात करनी हो, तो लैंड-लाइन यूज करना।'

ऊपर चमकता हुआ चाँद थोड़ा और खूबसूरत हो गया। हवाओं में थोड़ी और रूमानियत घुल गई। ऊपर आसमान पर सफेद हंसों का जोड़ा उड़ता हुआ दिखा।

बैंक ऑफ बड़ौदा-5 **वातल**
सूरज प्लाजा 1
सयाजीगंज, बड़ौदा (गुजरात)

ऋता शेखर 'मधु'

घर

वह बहुत खुश थी। उसने राधा-कृष्ण की एक पेंटिंग बनाई थी। दौड़ी-दौड़ी माँ के पास गई—'माँ, इसे ड्राइंग रूम में लगा दूँ?'

माँ—'बेटा इसे तेरी भाभी ने बड़े प्यार से सजाया है। तेरा पेंटिंग लगाना शायद उसे पसंद आए न आए। तू ऐसा कर, इसे सहेजकर रख। अपने घर में लगाना।'

शादी के बाद, 'सासू माँ, इस पेंटिंग को ड्राइंग रूम में लगा दूँ?'

'बेटा, जो जैसा सजा है, वैसे ही रहने दो। इसे अपने घर में लगाना।'

पति के साथ नौकरी पर, 'इसे ड्राइंग रूम में लगा देती हूँ।'

पति—'नहीं, अपने बैड रूम में लगाओ या कहीं और यह मेरा घर है। मेरी मर्जी से ही सजेगा।'

पेंटिंग बक्से में बंद हो गई वापस। आज फिर वह उसी पेंटिंग को लिए खड़ी थी, बेटे के ड्राइंग रूम में। सोच रही थी, क्या यह घर मेरा है?

206, Skylark Topaz, 5th Main,
Jagdish Nagar, Near BEML Hospital,
New Thippasandra Post, Bangaluru 560075

हरीश नवल

संस्कार

'हम सांस्कृतिक कविता के पोषक हैं, हमने एक दल ऐसे नए प्रतिभाशाली कवियों का बनाया है, जिनका लेखन बहुत श्रेष्ठ है और कविता पिछले कवि सम्मेलनों की छवि को सुधारने की क्षमता रखती है', कहकर प्रोफेसर महेश्वर ने उस बड़े संस्था के सम्मेलन आयोजक की निगाहों में झाँककर अपने प्रति बने विश्वास को पहचान लिया और संतोष की साँस ली।

आयोजक ने कहा, 'आप ही क्यों न इस बार हमारे लिए कवियों को तय कर लें और हमें दस ऐसे आदर्श कवि दिला दें, जो आपके जैसे संस्कारी और निष्ठावान हों।'

'अवश्य मुझे प्रसन्नता होगी तभी माहौल बदल सकेगा।' प्रोफेसर महेश्वर ने सुसांस्कृतिक मुस्कान बिखेरते हुए कहा।

कवि-सम्मेलन का समय समीप आया, सम्मेलन आयोजक श्री मनोज जी ने प्रोफेसर महेश्वर को बुलाया और उन्हें पचास हजार रुपये से भरा लिफाफा सौंपते हुए निवेदित किया कि वे उपर्युक्त कार्य समय से संपन्न करा दें।

घर लौटकर प्रोफेसर महेश्वर ने लिफाफे में से आधे रुपये निकालकर अपनी सेफ में रखे और शेष आधे लेकर अपने दस संस्कारी कवियों की खोज में निकल गए।

65 **साक्षर अपार्टमेण्ट्स**
ए-3, पश्चिम विहार
नई दिल्ली 110063
मो॰ 9818988225

महेशचंद्र द्विवेदी

इनाम या घूस?

कृपलानीजी की अगुवाई में मेरे मुहल्ले में भ्रष्टाचार-उन्मूलन अभियान चल रहा है। कृपलानीजी एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता हैं और मुहल्ले के लोग उनका बड़ा सम्मान करते हैं। आज उनके घर पर भ्रष्टाचार-उन्मूलन संबंधी एक मीटिंग आयोजित है, जिसमें मैं भी आमंत्रित हूँ। कृपलानीजी के हाथ में कुछ कागज हैं, जिनमें यह संकल्प लिखा हुआ है कि हम भारत देश से भ्रष्टाचार का समूल नाश करेंगे। हम न तो कभी किसी प्रकार की घूस लेंगे और न कभी घूस देंगे तथा घूस लेनेवालों का मनसा-वाचा-कर्मणा विरोध करेंगे। कृपलानीजी सभी उपस्थित व्यक्तियों को देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की भयावहता के विषय में बताकर उस संकल्प पर हस्ताक्षर करने और तदनुसार आचरण करने को प्रेरित कर रहे हैं। अधिकतर लोग उनकी हाँ में हाँ मिला रहे हैं।

इसी बीच कृपलानीजी का बेटा आकर कहता है कि लाइनमैन ने टेलीफोन ठीक कर दिया है, इनाम के लिए खड़ा है। क्या जानेको कह दूँ? कृपलानीजी जेब से पचास का नोट निकालकर बेटे को थमाते हुए कहा, 'बेटा, टेलीफोन ठीक रखना है, तो लाइनमैन को नाखुश नहीं किया जाता है।'

मैं उन्हें अवाक देख रहा हूँ और सोच रहा हूँ कि यह इनाम है या घूस?

1/137 **विवेक खंड**
गोमती नगर, लखनऊ (उ॰प्र॰) 226090
मो॰ 09415063030

संतोष सुपेकर

बहुवचन का सुरक्षा

घर पर परिवार के सदस्यों के बीच जब किसी किसी बहस में घिर जाता हूँ, तो किसी एक सदस्य को अपने साथ शामिल कर लेता हूँ और यूँ 'मैं' से 'हम' बनकर बहस करता हूँ

दफ्तर में जब मेरी कोई गल्ती पकड़ी जाती है, तो 'हम कर्मचारी' बनकर स्टाफ को संगठित कर लेता हूँ।

बिल भरने की लाइन में खड़ा होते समय 'हम आम आदमी' का रोज पैदा कर लेता हूँ। अपने मजहबियों के बीच होता हूँ तो 'हम मजहबी' और गैर मजहबियों के बीच होता हूँ। तो 'हम सब इंसान' का जज्बा खड़ा कर लेता हूँ।

सड़क से गुजरते समय किसी छोटे मोटे गड्ढ़े में वाहन चला जाता है तो 'हम पीड़ित' चिल्ला-चिल्लाकर भीड़ इकट्ठी कर लेता हूँ।

भीड़ से निपटते की नौबत आती है तो खुद भी भीड़ में शामिल होने का प्रयास करता हूँ।

मैं, कभी 'मैं' बनकर रहा ही नहीं, हमेशा 'हम' बनकर ही सुरक्षा का अनुभव करता आया हूँ। यह अलग बात है कि 'हम' के मायने बदलते रहे है, हमेशा ।

सुदामा नगर, उज्जैन (म॰प्र॰) 456001

छवि निगम

लिहाफ

इतने सालों के साथ के बाद इतना तो मैं समझ सकता था कि कोई तो बात जरूर है कि कभी-कभी रीना अपनी किसी ख्याली दुनिया में अक्सर गुम हो जाती है। हाँ, वैसे शिकायत नहीं कोई मुझे उससे। पर कभी-कभी महसूस होता है कि दस साल की शादी के बाद भी, कहीं कुछ तो था—एक इंविजिबल-सा गैप, जो हमें अच्छे दोस्त बनने से रोकता-सा रहा था।

आज फिर लेटे-लेटे यही ख्याल आ रहा था।

'सुनिए, एक बात कहनी थी आपसे, बालों में कंघा फिराते वह बोली। नींद को बमुश्किल अपने से दूर करते, लिहाफ के एक कोने से मुँह निकाल मैंने पूछा, 'हाँ कहो, क्या हुआ?'

'वो दिन में चाचाजी का फोन आया था। कुछ दिनों में यहाँ आने की बात कर रहे थे।'

'अरे लो, आज तुम आज इसी सोच में डूबी हुई थीं क्या? अच्छा है, पर तुम तो महान हो, सच्ची। मायके से कोई आए तो औरतें कितनी खुश हो जाया करती हैं। पर एक तुम हो। शाम से ही कितना अजीब बिहेव कर रही हो। ये चाचाजी तो पहले भी तुम्हारे घर काफी आया जाया करते थे न। बढ़िया है। चलो आओ, लाइट ऑफ कर दो।'

लेकिन क्या इतनी-सी ही बात थी बस? फिर रीना सारी रात करवटें क्यों बदलती रही थी।

'ओहो राधा! बिटिया को क्यों ले आई हो साथ में? इसे स्कूल भेजा कर न। इतना समझाती हूँ, तुझे पर समझ ही नहीं आता।' रीना की आवाज ने मुझे संडे सुबह-सुबह जगा दिया। और मैं रजाई में दुबके-दुबके गर्म चाय के कप का इंतजार करते उनकी बातचीत सुनने लगा।

'अरे दीदी! बस ऐसे ही हमरे पाछे चली आत है।'

'मुझे सब पता है। ऐसे ही धीरे-धीरे पूरे काम बच्चियों के सर डाल देते हो तुम लोग।'

'कुछ नईं होगा दीदी वाको।

'अच्छा-अच्छा ये पिंकू का पुराना स्वेटर इसे पहना दो तो पहले। चलो दोनों जने भी चाय पी लो।'

'सब्बे कोठियाँ वाली में आप ही सबसे नीक हो दीदी। सुनो, कोई पुराना-उराना कंबल-सूटर, साल-वाल हमारे वास्ते भी पड़ी हो तो।'

चाय सुड़कते मुझे हँसी आ गई।

'बस हो गया तुम्हारा माँगना शुरू! पुरानी चीजें हम रखते ही कहाँ है बता तो। और इस समय तो तुम्हें पैसे भी नहीं दे पाएँगे...।'

'अरे क्कोनो बात नाही। जाड़ा कट ही जाई जाईसे तैसे। असल में एक रजाई तो बा हमरे पासे। पार साल तक बिट्टी, हम, ई और मुन्ना तो ओमे ही दुबक जाइत थे। परे बट्टी अब न आ पहिये। ऊपर से गाँव से रिश्ते के चाचा आई के चाह रहे हैं न कछु काम ढून्ढहे खातिर, तो हम सोचे रहे।'

'तो अब क्या करेगी?'

'अरे ऊ च्चाचा आपन बिस्तर उस्तर भी तो लाइ न। इत्तना जाडा म्में का ऐसे ही आ जाई? सो ई बिटिया को हम ओके साथ ही पौढा देब। ठीक बा न बिटिया?'

'दीदी?...दीदी...दीदी...का हुआ? भैयाजी जल्दी इधर आओ तो जल्दी देखो दीदी को का हुई गवा!' राधा बौखलाई सी जोर से चिल्ला रही थी।

मैं लिहाफ फेंक लंबे डग भरता रसोई की तरफ दौड़ पड़ा और भौचक्का रह गया। ये रीना ही थी या कोई और? उसकी तो पूरी-की-पूरी भाव-भंगिमा ही बदल गई थी। चेहरा बुरी तरह तमतमाया हुआ व होंठ काँप रहे थे। तना हुआ बदन अजीब तरह से थरथरा रहा था। आँखों में आँसू छलक आए थे।

'क्या हुआ रीना?' मैंने बेहद घबराते हुए पूछा। पर उसने मेरा हाथ झटक दिया।

'जाइए, वो जो नया लिहाफ बनकर आया है, उसे ले आइए।'

इतनी सर्द आवाज थी उसकी कि क्यों, किसलिए वगैरह पूछने की हिम्मत नहीं हुई मेरी। चुपचाप लाकर उसके सामने रख दिया।

'ले राधा, ले जा इसे। ये सिर्फ तेरी बिटिया के लिए है। हमेशा वह इसी में सोएगी और अकेले। और तुम जो दिन-भर मुन्ना-मुन्ना करती रहती हो, ध्यान इसका भी रखा करो। ये कुछ न भी कह पाए, तो भी इसके इशारे समझो और खबरदार! जो इसे कब्भी किसी मामा, दादा चाचा के साथ...।'

और कटे तने-सी रीना कुर्सी पर ढह गई...अब वह अवश-सी हिचकियों से रोए जा रही थी। कभी उसकी पीठ, तो कभी सर सहलाते हुए मैं सोच रहा था। इस समय दिल का भारी बोझ उतर जाने से कौन ज्यादा सुकून महसूस कर रहा है राधा, रीना या मैं?

723-ब्लॉक 15, कैलाश धाम सोसाइटी
सेक्टर 50, नोएडा-201301

रामकुमार आत्रेय

दूसरा जल्लाद

'आओ मेरे पास लेटो...मैं कबसे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।' काम निपटाकर कपड़े से हाथ पोंछती औरत को देखकर मर्द ने बिस्तर पर उसके लेटने के लिए जगह बनाते हुए कहा।

मर्द के स्वर में मनुहार थी। आज वह बेहद तनाव में था। औरत उसके लिए तनाव हल्का करने की एक रामबाण दवा थी।

'नहीं जी, आज मैं बच्चों के साथ दूसरी कोठरी में सोऊँगी।' औरत ने हाथ पोंछनेवाला मैला कपड़ा बराबर की खूँटी पर टाँगते हुए उत्तर दिया।

'क्यों? क्या तुम्हें मेरे पास लेटना अच्छा नहीं लगता?' मर्द अधलेटा होने की स्थिति में आ गया था, उसकी नजरें औरत के चेहरे पर टिकी हुई थीं।

'बच्चे कुछ डरे हुए है।' औरत के स्वर में कुछ झिझक थी।

'डरे हुए हैं? किससे और क्यों?'

'आज जब आप घर में घुसे थे, बच्चे टी॰वी॰ देख रहे थे। तब आपने उन्हें टोका था। टोका तो प्यार से ही था, फिर भी वे आपको देखकर ही डर गए थे। इसलिए दूसरी कोठरी में जाकर लेट गए थे। अब तो वे वहाँ सोए पड़े हैं। वे दोनों रात में फिर से डरकर उठ सकते हैं।' औरत ने मर्द के साथ न सो पाने के कारण की व्याख्या कर डाली।

'मैं समझा नहीं। ऐसा मैंने क्या कह दिया? क्या कर दिया?' मर्द नहीं उसकी चिंता बोल रही थी।

'बुरा मत मानना जी, एक बात कहूँ?'

'कहो, जो भी कहना चाहती हो।'

'सच कहूँ जी, डर तो आज मैं भी रही हूँ। पीते तो कभी-कभी आप पहले से ही हैं, पर आज आपकी मूँछें खून के प्यासे किसी खांडे जैसी लग रही हैं। चेहरा भी कुछ बदल-सा गया है, एकदम पत्थर जैसा। आँखें भी बड़ी-बड़ी और चौड़ी-सी लग रही हैं, किसी खौफ से भरी हुई-सी। आवाज में प्यार की नरमाई की जगह, गुस्से की उबाल जैसी कोई चीज भरी हुई है जी। बच्चे डरते-डरते मुझसे कह रहे थे कि आज आपका चेहरा किसी जल्लाद जैसा लग रहा है। हालाँकि जल्लाद न तो कभी उन्होंने देखा है और न ही मैंने। फिर भी टी॰वी॰ देख-देखकर वे सब-कुछ समझने लगे हैं।' औरत के कदम दूसरी कोठरी में जाने के लिए घूम चुके थे, पर उसकी निगाहें अब भी अपने पति के चेहरे पर टिकी हुई थीं, भयभीत हिरणी-जैसी।

मर्द हड़बड़ाकर बिस्तर से नीचे कूदा और लगभग दौड़ता हुआ-सा शीशे के पास जा पहुँचा। वह शीशे में अपने चेहरे पर आए बदलाव को जाँचने की कोशिश कर रहा था। वास्तविकता यह थी कि आज दिन में उसने अपनी खाप की एक महत्त्वपूर्ण सभा की प्रधानता की थी। खाप की एक युवती ने एक अन्य जाति के युवक के साथ चुपचाप शादी कर ली थी। उस मर्द की प्रधानता में खाप की सभा ने उस युवक-युवती को कत्ल कर दिए जाने का फरमान जारी कर दिया था। वैसे मर्द ने यह बात अभी तक औरत को नहीं बतलाई थी।

औरत सहमी हुई-सी मर्द को शीशे के सामने खड़ा देख रही थी।

ए 864-**ए**/12 **आजाद नगर**
कुरुक्षेत्र 136119 **(हरियाणा)**

श्यामसुंदर 'दीप्ति'

सजा

बेटा अपने पापा के पास बैठा स्कूल का पाठ याद कर रहा था। कुछ देर बाद उसने पापा से कहा, 'लो, सुनो मुझसे।' और फिर किताब पापा के सामने रखकर कहने लगा, 'यह ऊपर मंदिर है, यह मस्जिद है, यह है...यह है...गिरजा और यह गुरुद्वारा। क्यों ठीक बताया ना।'

पापा बेटे के चेहरे की तरफ देखने लगे और फिर थोड़ा-सा रुककर बोले, 'बेटे, तुमने इनमें अंतर कैसे ढूँढा? मुझे तो यह सभी एक जैसे ही लगते हैं।'

किताब पर छपी तस्वीरें वैसे भी एक जैसी ही लग रहीं थीं।

'मुझे नहीं पता फर्क, मैडम ने यूँ ही याद करने को कहा है। किताब में भी तो ऐसे ही लिखा है', कहते हुए बेटे ने वह पृष्ठ दिखाया, जहाँ तस्वीरों के साथ नाम भी लिखे थे।

पापा के दिमाग में पता नहीं क्या आया, उन्होंने बेटे से एक प्रश्न कर दिया, 'देखो बेटे, अगर ऊपर वाले को मस्जिद और नीचे वाले को मंदिर कह दें तो क्या कोई फर्क पड़ जाएगा।'

'गर उलट-पुलट कर दिया ना, मैडम मारेंगी भी, पापा।' बेटे के चेहरे पर एक डर-सा आ गया था।

97, **गुरुनानक एवेन्यू, मजीठा रोड**
अमृतसर 143004

राधेश्याम भारतीय

दूरी

घर में देवरानी-जेठानी की कलह यहाँ तक बढ़ा कि बड़े भाई ने न चाहते हुए भी छोटे के लिए अलग मकान खरीदना पड़ा। उसे डर था कि कहीं रोज-रोज की कलह से कोई बड़ा हादसा न हो जाए।

माँ-बाप की मृत्यु के बाद बड़े भाई का छोटे के प्रति दायित्व और बढ़ गया था।

जेठानी ने पति से पूछा, 'कहाँ लिया मकान?'

'...बहूत दूर है...उसका मकान...' इतना कहते हुए उसकी आवाज भर्रा गई और आगे वह कुछ न कह सका।

अगले दिन उसकी पत्नी ने न जाने कहाँ से पता लगवा लिया उस खरीदे गए मकान का।

पति के घर आते ही उस पर बरसते हुई बोली, 'ये दो गली छोड़कर ही खरीद लिया मकान...हाँ...हाँ...हमारी छाती पर दलवानी थी, मूँग...' वह अनाप-शनाप बके जा रही थी।

बड़ा भाई चुप था, क्योंकि उसे तो यह दूरी भी मीलों जैसी लग रही थी।

नसीब विहार कालोनी, घरौंडा
करनाल (हरियाणा) 132114
मो॰ 09315382236

माला झा

दीवार

बरसों पहले बँटवारा हुआ। परिणामस्वरूप घर के आँगन के साथ-साथ दोनों भाइयों के मन के आँगन में भी दीवार खड़ी हो गई। आज दोपहर जब भूकंप आया। सोहन अपने परिवार और गाँववालों के साथ खुले मैदान की तरफ भागा। अचानक उसे अपने लकवाग्रस्त भाई का ध्यान हो आया। भाभी और बच्चे तो खेत में होंगे। सोचते हुए उलटे पाँव घर की तरफ लपका। भाई के पास पहुँचकर उसे कसकर बाँहों में भर लिया।

आँसुओं के जलजले में दिल की दीवार ढह गई। काँधे पर भाई को लिए बाहर निकल ही रहा था कि अचानक आँगन से कुछ भरभराकर गिरने की आवाज आई-धड़ाम!

द्वारा दिलीप झा, क्वाटर न 86, **टाइप**-2 **ए**
एस॰जी॰पी॰जी॰आई॰ कैंपस, लखनऊ 226014 **(उ॰प्र॰)**

कमल कपूर

दुनिया का सबसे सुंदर गुलाब

'बीबीजी! चार नंबरवाली बीबीजी बोल रही थीं कि आज दोस्तों का दिन है। वो क्या कहते हैं उसे...' 'फ्रेंडशिप-डे।' बेला ने मुस्कुराते हुए फुलवा की बात पूरी की तो उसकी जिज्ञासा जाग उठी जैसे-'इसमें क्या होता है बीबीजी?'

'अपनी सच्ची-पक्की सहेली को 'हैप्पी फ्रेंडशिप डे' कहा जाता है और कोई भेंट दी जाती है।', बेला ने खुलासा किया तो फुलवा ने एक प्रश्न दागा-'भेंट में क्या देते हैं बीबीजी?'

'ज्यादा नहीं। कोई कार्ड या कुछ फूल...सच्चे मन से एक गुलाब भी दे दो तो चलेगा।'

'सच्ची सहेली कैसी होती है बीबीजी?' फुलवा जैसे सब-कुछ जान लेना चाहती थी।

'जो तुमसे प्यार करे, मीठा बोले, तुम्हारी खुशी में खुश हो और मुश्किल वक्त में तुम्हारी मदद करे और हाँ बेटा! दोस्ती में अमीरी-गरीबी और उम्र का फर्क नहीं देखा जाता।'

'जी बीवी!' कहकर फुलवा वहाँ से चली गई और दो पल बाद ही लौट आई और सरल स्वर में बोली, 'बीबीजी! आपने सच्ची सहेली के जो गुन बताए, वो तो बस आपमें ही हैं जी। लो जी आज के दिन की भेंट', कहते हुए फुलवा ने बेला के हाथ में उसी के बगीचे का एक पूरा खिला गुलाब थमा दिया।

बेला ने भाव-विभोर होकर उसे सीने से लगा लिया और तरल स्वर में बोली-'फुलवा! अब तक यह फूल मेरे बाग के पौधे पर लगा एक साधारण गुलाब था, पर अब यह दुनिया का सबसे सुंदर गुलाब है।'

2144, **सेक्टर** 9, **फरीदाबाद (हरियाणा)** 121006

मंजूषा दोशी

साड़ी

मालती मेरे घर पिछले तीन सालों से काम कर रही है। मैं हर साल दीवाली में उसे इनाम के तौर पर साड़ी देती हूँ। इस बार भी खरीददारी करने बाजार में निकली तो दिमाग में पूरी योजना और बजट तैयार था। सब सामान और परिवार में सभी सदस्यों के कपड़े खरीद लिए थे। बजट के हिसाब से 1000 की अपनी साड़ी खरीदनी थी और 200 की मालती के लिए। मैं साड़ी की दुकान पर जा बैठी और साड़ी देखना शुरू कर दिया। साड़ियाँ देखते-देखते अचानक ही मन में पिछले बरस के वे पल याद आ गए, जब मैने मालती को साड़ी दी थी। अपना सारा सामान उसे दिखाया, अपनी साड़ी भी दिखाई और उसे साड़ी दी। वह बहुत खुश हो गई साड़ी पाकर। मुझे बार-बार धन्यवाद कह रही थी। मैंने देखा कि साड़ी पाकर बहुत खुश हो गई थी, पर बार-बार उसकी नजर मेरी साड़ी की तरफ ही जा रही थी। हम दोनों की साड़ियों में कीमत के कारण सुंदरता में भी अंतर था।

उसका उस पल का चेहरा मेरी आँखों में आ गया। मैंने मन-ही-मन सोचा–इस बार ऐसा नहीं करूँगी। और मैंने इस बार मैं दोनों साड़ियाँ एक ही कीमत की 600-600 रुपएवाली खरीद लीं।

मैं इंतजार कर रही थी कि कब मालती आए।

मालती आई, तो मैंने कहा–'मालती चाय बनाकर ले आ, बाकी काम बाद में कर लेना।'

मैं साड़ी के पैकेट लेकर बैठ गई।

मालती चाय के कप लेकर आई, तो मैंने कहा–'बैठ, तू भी यहीं चाय पी ले।'

वह पास में ही बैठ गई।

मैंने पैकेट उसके हाथ मैं देते हुए कहा-'देख, ये साड़ियाँ लाई हूँ। बता कैसी लग रही हैं?'

उसने पैकेट खोलकर साड़ियाँ निकालीं। दोनों साड़ियाँ लगभग एक जैसी ही थीं।

उसने कहा–'दीदी दोनों साड़ियाँ बहुत सुंदर हैं।' और वापस पैकेट में डालकर मुझे देने लगी। मुझे लगा–वह समझ नहीं पाई कि एक साड़ी उसके लिए है। शायद समानता के चलते। उसकी आँखों में सूनापन झलक गया। उसे लगा शायद इस बार उसके लिए मैंने साड़ी नहीं ली।

मैंने कहा–'मालती, इनमें से तुझे जो पसंद है, रख ले। एक तेरे लिए है, एक मेरे लिए।' उसकी आँखें छलछला आईं।

वह बोली 'दीदी इतनी महँगी साड़ी...मेरे लिए...आपकी साड़ी भी मेरी साड़ी जैसी ही है। आपने इतना खर्च मेरे लिए क्यों किया? आप अपने लिए अच्छी साड़ी ले लेतीं। मेरे लिए तो कोई भी चल जाती।'

मैं उस समय उसकी आँखों की खुशी देख रही थी। वह खुशी साड़ी पाने की नहीं थी; बल्कि सम्मान पाने की थी, अपनापन पाने की थी।

एक खुशी मेरी आँखों में भी थी। उसे खुश देख कर। आखिर वह भी तो मेरा परिवार बन गई है।

प्रोजेक्ट ऑफिस अंबुजा सीमेंट, फाउंडेशन
रवान (Rawan) **(छत्तीसगढ)** 493331

अर्चना चतुर्वेदी

कुंभ का मेला

रमुआ सुबह खेत में पानी देने गया, तो खेत में कुछ हलचल सुनकर ठिठक गया, जंगली जानवर समझ मारने की कोशिश की तो देखा कि ये तो उसके पड़ोसी गजोधर की माई थी, पर यहाँ खेत में क्या कर रही है? गजोधर और उसका परिवार तो रातभर से उसे खोज रहा है? 'अम्मा तुम यहाँ क्या कर रही हो?' रमुआ ने उन्हें पकड़कर एक ओर बिठाया और पानी पिलाया। 'छोरा मैं यहाँ दुबकी हूँ।' अम्मा कुछ सहमी-सी बोली।

'पर क्यों अम्मा?' रमुआ ने पूछा।

'अरे बू गजोधर मुझे कुंभ नहलाने लेकर जा रहा है ना'–अम्मा ने फुसफुसाते हुए बताया।

'पर अम्मा ये तौ अच्छी बात है।'

'छोरा! पांडे को छोरा भी तो कुंभ लेके गयो ना अपने बापू कू? आज तक ना आए पांडे जी लौटके और शुक्ल जी भी तौ ना लौटे। ना, ना मैं न जाऊँगी जा कुंभ में बड़े बूढ़े खो जाएँ।'

सुनकर रमुआ सुन्न हो गया! क्या जबाब दे अम्मा की बात का।

ई-1104 marpali Zodiac Plot, GH-03
सेक्टर 120 **नोएडा (उ०प्र०)** 201307

बी॰एल॰ आच्छा

अस्तित्व

मालूम नहीं किस अवस्था में वह रेल के प्लेटफार्म पर आया था। अभी वह अपनी मौज में प्लेटफार्म पर ही कूदता-फाँदता रहता है। कभी फटे पायजामे में, कभी उधड़ी हुई मैली-कुचैली पेंट में। हाथ में पेड़ की लंबी-पतली डाल में कपड़ा लगाए ऐसे दौड़ता है, जैसे किसी जुलूस का नेतृत्व कर रहा हो। कोई दया-माया से बचा-खुचा बासी दे देता है, तो उसका चेहरा खिल जाता है। पर मन न हो तो अनेदखा कर इधर-उधर भटकता रहता है। कभी सूने आसमान में हाथों से इशारे करता किसी 'रहस्यवादी' से आई॰एस॰डी॰/एस॰टी॰डी॰ करता रहता है।

न जाने उसके लिए नल कब आए थे? न जाने कब उसे साबुन मिली थी? या कि उसने किसी के उतरे हुए कपड़े पहनकर कभी साबुन-पानी लगाया या कि नहीं। न जाने अपने रिश्तों के लिए अंतिम बार कब रोया? वह न गरीबी-रेखा में है, न अमीरी-रेखा के ऊपर। न परिचय-पत्र, न कूपन। सरकारी प्लेटफार्म नापनेवाला वह, किसी दस्तावेज में भी नहीं। मनोचिकित्सकों को धता बताते हुए वह अपने भीतर ही मुस्कुराता, खाता-पीता, कभी भूख-प्यास को भी अँगूठा दिखाता, भागता फिरता है। कभी कोई सैलून, कभी कोई दुलारा-सा हाथ, कभी कोई दया-माया उसके बालों को सँवार नहीं पाई। न कभी अखबार की सुर्खी बना, न जनता की जबान। अलबत्ता किसी को छेड़ता नहीं। खाना खाते मुसाफिरों के सामने खड़ा नहीं होता। पता नहीं, इतनी समझ में भी वह समझदार नहीं है। इसी समाज की सृष्टि, इसी समाज से इतना दूर।

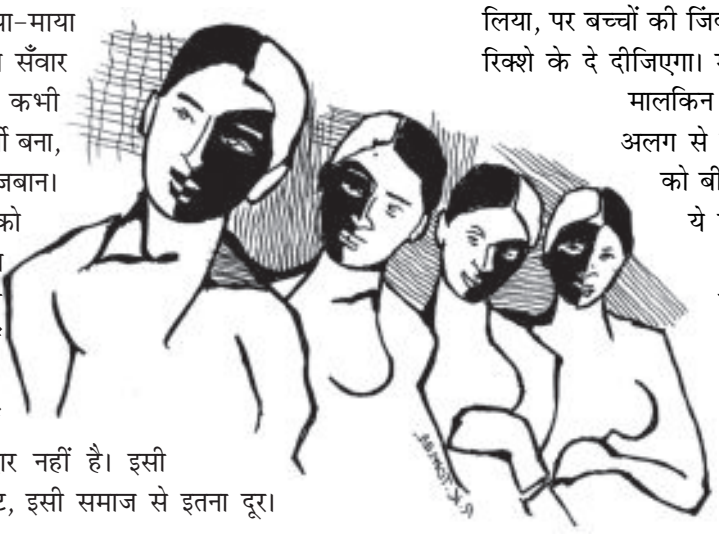

36 A, Clemens Road
Behind Sarvana Stores
Purushwalkam, Chennai-600007

पूर्णिमा राय

कर्जदार

आज शन्नो बेहद खुश थी। उसे नए घर में जाना था। उसने सुना था, वहाँ का मालिक बहुत रहमदिल है। उसकी लाडो का ध्यान रखने के लिए उसे नौकरी पर रखा था। दसवीं पास शन्नो आज मान महसूस कर रही थी। वह सोच रही थी कि अब वह मालकिन से भी बढ़कर बच्चे का ध्यान रखेगी। कोई शिकायत का मौका न देगी।

मालकिन से जब शन्नो ने बात की तो उसने धीरे से कहा–'मेम साहब! मेरे भी बच्चे हैं। सारे गाँव को पता है कि मैंने कितने अनुशासन और साफ-सफाई से बच्चे बड़े किए हैं। कभी खाँसी, छींक तक न हुई बच्चों को! हाँ। इसे तो अपने बच्चे से भी अधिक लाड से रखूँगी।' शन्नो ने बताया–'मैं तो बड़ी-बड़ी हवेलियों में बड़े-बड़े प्रोग्राम में रोटियाँ बनाने का काम मिनटों में कर लेती हूँ। फिर यहाँ तो एक बच्चे की बात है। आप बेफिक्र रहें। निश्चिंत रहें। जब आँखों में आई नमी समेटती शन्नो ने कहा–'मेम साहब, सर्दियों में रोटियाँ बनाने जाना अच्छा लगता है। बच्चों को खूब अच्छे पकवान खाने को मिल जाते हैं, चार पैसे भी बन जाते हैं, घर में खाने का खर्चा बच जाता है। जानती हो मैडम जी, मेरे पति फौज में थे, नशे की लत ने नौकरी छुड़वा दी, मेरी जिंदगी खराब हुई, तो झेल लिया, पर बच्चों की जिंदगी भी नरक बन गई। आज बीस रुपये रिक्शे के दे दीजिएगा। मेरे पास खुल्ले नही हैं।' वह बोली।

मालकिन के मन में आया–ये रोज रिक्शे के पैसे अलग से ऐंठना चाहती है। चुपचाप उसने शन्नो को बीस रुपये यह सोचकर दे दिए कि कहीं ये नौकरी छोड़कर चली न जाए।

आज महीने का अंतिम दिन था। शन्नो के काम, लाडो के प्रति अपनत्व और प्यार की भावना से सराबोर मालकिन ने जैसे ही पूरे महीने के पैसे शन्नो के हाथ में दिए, वह बीस रुपये लौटाते हुए बोली, 'मेम साहब! बीस रुपये की कर्जदार हूँ।'

ग्रीन एवेन्यू, घुमान रोड
तहसील बाबा बकाला
मेहता चौक 143114 **अमृतसर (पंजाब)**

मीना अग्रवाल

दंगा युग

दरोगा मलखानसिंह ने एक ऐसी घटना सुनाई, जिससे मेरा मन पीड़ा से भर गया, पर साथ ही मैं अपनी हँसी पर नियंत्रण नहीं रख सकी। ठहाका मारकर हँस पड़ी। आप आश्चर्य कर रहे होंगे कि क्या कोई ऐसी घटना भी हो सकती है, जो सुननेवाले को दुखी भी करे और हँसाए भी।

मलखानसिंह बोले–'बड़ी मुश्किल से हाथ आया 'हराम' का, सारे क्षेत्र में जाल बिछा रखा था, पर पकड़ में नहीं आ रहा पुलिस की।'

पूछा–'कौन?'

'अरे था एक, नए युग का मनचला।' दरोगा मलखानसिंह ने घटना का विवरण देते हुए कहा–'तेज़ाब डालकर फरार हो गया था, एक छोकरी के चेहरे पर।'

'गुंडागर्दी की हद हो गई इस युग में।' मैंने समर्थन करते हुए कहा।

मलखानसिंह बोला–'अरे वह उसका प्रेमी था, जी-जान से प्यार करनेवाला। पकड़ा गया तो हमने पूछा–क्यों बे! तू उससे प्यार करता था।'

उत्तर दिया–'हाँ, जी।'

'वह भी तुझे चाहती थी!'

बोला–'हाँ, जी।'

पूछा–'तू उसके लिए जान दे सकता था।'

बोला–'हाँ, जी।'

पूछा–'यदि कोई उसको क्षति पहुँचाता, तो तू क्या करता?'

बोला–'मैं उसकी जान ले सकता था, साब!'

'फिर तूने उस पर तेज़ाब क्यों फेंका?' उससे पूछा।

बोला–'उसकी शादी किसी और से होने वाली थी, जी।'

उससे फिर पूछा–'तुझे उससे अगाध प्रेम था तो क्या तुझे ऐसा करना चाहिए था, बे!'

बोला–'जब वह मेरी नहीं रही थी तो...। पहले राँझा युग हुआ करता था, अब राँझा युग नहीं है, दंगायुग है। यदि दंगे-फ़साद नहीं करोगे तो कुछ नहीं मिलेगा। न राजनीति में, न प्रेम में।'

'समझती हो यह दंगा-युग क्या है?' दरोगा मलखानसिंह ने पूछा। एक मोटी-सी गाली देने के लिए उसने अपने अधर खोले पर सामने एक महिला को देखकर वह चुप हो गया। आधी गाली मुँह से निकली, आधी गाली मुँह में रह गई। और मैं ज़ोर से हँस पड़ी।

16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०)
मो० 07838090237

रणजीत टाडा

बीमार आदमी

पहला आदमी प्रतिदिन बस स्टॉपेज पर स्कूल के लिए बेटी को छोड़ने आता। दूसरा आदमी भी अपने बेटे को बस स्टॉपेज पर छोड़ने आता। दूसरा आदमी पहले आदमी को अदब से नमस्ते कहता। अन्य व्यक्ति जो अपने-अपने बच्चों को बस स्टॉपेज पर छोड़ने आते, वे भी उस व्यक्ति को विशिष्ट आदमी समझकर नमस्ते करने लग गए। पहला आदमी किसी सरकारी महकमे में अफसर था तथा दूसरा आदमी उसे जानता था। दूसरे आदमी ने अन्य व्यक्तियों को पहले आदमी के बारे में बताया था।

पहला आदमी आता, सब उसे नमस्ते करते और वह विशिष्ट व्यक्तित्व की मुद्रा धारण कर खामोश खड़ा रहता। उसकी बच्ची भी चुपचाप गुमसुम-सी खड़ी दूसरे बच्चों को हसरत-भरी नजरों से देखती रहती। उसके चेहरे से बचपना प्रायः गायब रहता। दूसरे बच्चे आपस में बतियाते, चुहलबाजी करते रहते।

एक दिन पहला आदमी नहीं आया। अन्य व्यक्तियों में से किसी ने दूसरे से पूछा, 'आपके वो जनाब नहीं आए, आज?'

तो दूसरे आदमी ने अनमने भाव से कहा, 'नहीं आए होंगे।'

'ज्यादा घुलते-मिलते भी नहीं किसी से?' किसी अन्य ने पूछा तो दूसरे आदमी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'बस ऐसे ही हैं।'

अगले दिन पहला आदमी आया। सभी व्यक्तियों ने एक-दूसरे को निहारा। किसी ने उस व्यक्ति को नमस्ते नहीं की। दूसरे आदमी ने भी नहीं। पहला आदमी शून्य में ताकता रहा, उसका चेहरा अहं और गुस्से से तमतमा गया। दूसरे दिन भी किसी व्यक्ति ने उसे नमस्ते नहीं की।

अब कई दिनों से पहला आदमी नहीं आ रहा था। बच्ची को उसका दादा छोड़ने आता।

एक व्यक्ति ने बच्ची के दादा से पूछा, 'गुड़िया के पापा आजकल नहीं आ रहे?'

'वह बीमार है–कई डॉक्टरों से इलाज करवा लिया, कोई सुधार नहीं है।' बुजुर्ग ने लंबा श्वास खींचकर कहा।

'बीमार तो वह पहले ही था।' एक व्यक्ति ने धीरे से कहा।

'उसे किसी मनोचिकित्सक को दिखाया क्या?' दूसरे आदमी ने पूछा।

'हमें भी लगता है उसे मनोचिकित्सक को दिखाना होगा। वह बहकी-बहकी बातें करता है। कहता रहता है कि मैं सबको देख लूँगा, वो मेरी पावर नहीं जानते।' बुदबुदाते हुए बुजुर्ग के चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ नजर आ रही थीं। बच्ची की आँखों में अन्य बच्चों से बतियाने की इच्छा झलक रही थी।

दूरदर्शन केंद्र
सेक्टर 13, हिसार 125005

सुदर्शन रत्नाकर

खुशबू

टिकट लेने के लिए जैसे ही मैंने अपने हैंडबैग में हाथ डाला, मेरा पैसोंवाला पर्स उसमें से गायब था। सारा बैग अच्छी तरह से देख लिया; वहाँ था ही नहीं तो मिलता कहाँ से! घर से चलते हुए इसमें रखा ही नहीं था या फिर बस में चढ़ते समय किसी ने निकाल लिया होगा। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। एक तो सीट पर गाँव का कोई आदमी बैठा था, उसके मोटे कपड़ों से पसीने की गंध मेरे नथुनों में घुसकर सिर को चकरा रही थी, उस पर यह मुसीबत। स्वयं पर कोफ्त हो रही थी—लंबा सफर और उस पर पैसे नहीं। सोचा, बस रुकवाकर उतर जाना ही मुनासिब होगा। एक बार फिर बैग में हाथ डाला। कुछ सिक्के खनकने लगे। उसमें झाँककर देखा कागजों के साथ एक-दो नोट भी नज़र आए। थोड़ी-सी आशा बँधी। तभी देखा सहयात्री मेरी हर हरकत पर नजर रख रहा है। मैंने उसकी ओर क्रोध से देखा, तो वह अटपटा गया और खिड़की से बाहर देखने लगा।

मैंने बैग में से नोट और सिक्के निकालकर देखे, उनतालीस रुपये थे। संयोग था कि मेरी टिकट भी इतने की थी। मैं इत्मीनान से कंडक्डर का इंतजार करने लगी। सोचा, बस से उतरकर रिक्शा कर लूँगी और किराया घर जाकर दे दूँगी। सुबह ही पता चला था कि माँ ठीक नहीं है। जल्दी-जल्दी चलने के कारण सब-कुछ गड़बड़ा गया था। इधर यात्री के पसीने की गंध मुझे और परेशान कर रही थी। एक हथेली में पैसे रखकर दूसरे हाथ से अपना रूमाल नाक पर रख लिया था, कितने जाहिल हैं ये लोग। न अच्छी तरह नहाते-धोते हैं, न कपड़े बदलते हैं। सफर में दूसरे यात्री का ध्यान तो रख लेना चाहिए। मैं मन-ही-मन कुनमुना रही रही थी। कंडक्टर पीछे से टिकट देकर मेरी सीट तक आ पहुँचा था। मैंने उनतालीस रुपये देकर टिकट माँगा।

'कहाँ का टिकट चाहिए, मैडम।'

'उनतालीस रुपये तो पानीपत तक के लगते हैं। वहीं का दीजिए न।' मैंने तल्खी से कहा।

'मैडम सात रुपये और दें।'

'सात रुपए और कैसे! उनतालीस ही तो लगते हैं। पिछली बार इतने ही दिए थे।'

'वह पिछली बार की बात है, मैडम। अब छियालीस लगेंगे। किराया बढ़ गया है।' कंडक्टर ने कहा। मेरी आवाज सुनकर सभी यात्री मेरी ओर देखने लगे।

'पर मेरे पास तो इतने ही पैसे हैं।' मैंने रुआँसी-सी होकर कहा।

'तो ऐसा कीजिए मैडम उनतालीस रुपये की टिकट दे देता हूँ। वहाँ तक चली जाएँ, बाकी रास्ता पैदल चली जाएँ।'

सभी यात्री हँसने लगे, पर कोई सहायता के लिए आगे नहीं आ रहा था। मैं शर्मिंदगी से सिर झुकाए खड़ी थी। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। तभी मेरे साथ बैठे यात्री ने अपनी जेब से दस रुपये का नोट निकालकर कंडक्टर को देते हुए कहा, 'ईब चुप भी हो जा, ले बाकी के पीसे और मैडम को टिकट काटकर दे दे।'

मैं उसे मना करने ही जा रही थी कि उसने हाथ के इशारे से रोकते हुए कहा, 'कोनो बात नहीं बैन जी, मानस ही तो एक-दूसरे के काम आवे है।'

कंडक्टर ने टिकिट और तीन रुपये मेरे हाथ में थमा दिए। मैं कृतज्ञता से सहयात्री को देख रही थी। मुझे अब उसके कपड़ों से पसीने की बदबू नहीं, खुशबू आ रही थी।

ई-29, नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद 121001

वाणी दवे

पापा के मजबूत कंधे

बात इसी दशहरे की है, रावण दहन के लिए मैं और मेरा परिवार दशहरा मैदान गए थे, जहाँ विशालकाय रावण के पुतले को देखने के लिए पूरा शहर इकट्ठा हुआ था। नन्हे बच्चे अपने पापा के कंधों पर और हाथों पर चढ़कर आतिशबाजी देखकर आनंदित हो रहे थे। अपने बचपन के दिनों की यादें ताजा कर मुझे भी बड़ा आनंद आ रहा था, लेकिन तभी न जाने कब इस पूरे जमघट में एक परिवार हमारे सामने आकर खड़ा हो गया। अपने तीन छोटे-छोटे बच्चों के साथ उनकी माँ, जो कि पहनावे से गरीब और साधारण शक्लो-सूरतवाली थी, अपनी गोद में सालभर के बच्चे को उठाए थी एवं अन्य बच्चा, जो पापा की उँगली पकड़े हुए था, रो रहा था, क्योंकि वह आतिशबाजी देखना चाहता था। उसके पापा ने उसे गोद में उठा लिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि एक बौने से कद-काठी का वह आदमी जिसे खुद कुछ नजर नहीं आ रहा है, वह अपने नन्हे-से बच्चे को कंधों पर चढ़ाकर आसमान दिखा रहा है और वह चमक दिखा रहा है, जिसे वह खुद देख पाने में असमर्थ है।

पापा ऐसे ही होते हैं मजबूत कंधों वाले।

26, **निर्माणनगर (रवींद्रनगर के पास)**
उज्जैन 456010

सुधा गुप्ता

मल्लिका के फूल

ग्रीष्मावकाश। हर वर्ष की तरह भतीजी एक सप्ताह के लिए आई हुई है, अपनी छहवर्षीय बिटिया उदिता के साथ चंचल, बातूनी, मासूम, एक पल भी टिककर बैठती नहीं, सो मामा लोग लाड में 'उड़ी' कहकर पुकारते है। मेरे पास उसका खूब मन लगता है, बार-बार ठेलकर कहती हूँ, 'जाओ, उदि कुछ देर को मामा के कमरे में सो लो, फिर आना, मगर वह आँख बचाकर भाग आती है, फिर फिर गर्म दोपहरी-भीषण तपन-बिजली गुल। बरामदे में आ बैठी हूँ।

फाटक खुलने की चरमराहट। ऐसी विकट बेला में कौन हो सकता है? कोरियरवाले भी सुबह ग्यारह बजे तक या शाम पाँच बजे आते हैं।

एक नारी कंकाल बाईं बाह में चिथड़ों की पोटली-सी। पास आ गई, 'माँ जी, थारे पैरो लागूँ, दो घूँट ठंडा पानी प्यादो किरपा होगी। भौचक्की-सी उठी, एक खाली बिस्लिरी की बोतल में थोड़ा सादा, थोड़ा ठंडा पानी भरा इस ख्याल से कि इतनी गर्मी में तेज ठंडा पानी नुकसान करेगा—जाकर उसे दिया तो लिया नहीं, पोटली नीचे रखकर, ओक बना दी। पोटली में सरसराहट हुई, अरे! यह तो जीता जागता बच्चा है! देखकर रूह काँप गई—हड्डी पर खाल चिपकी हो जैसे! कोटल धँसी आँखें! इतनी तेज धूप और तपन में यह माँ-बेटा सड़कों पर धक्के खाते घूम रहे हैं हा! हत्बुद्धि होकर जाने क्या सोच, भीतर जाने को मुड़ी कि अचकचा गई। उदि खड़ी हुई देख रही थी। मेरा आँचल पकड़कर बड़ी मासूमियत से बोली, 'नानी, आप कहते हो, खाली पानी नुकसान करता है, इन्हें कुछ खाने को दो न! और नानी शरबत रूह आफजा बना दो नानी। उस छोटे बेबी को फ्रूटी दे दो न!' अपनी बुद्धिहीनता पर क्रोध आया—यह बात पहले मेरे दिमाग में क्यों नहीं आई? और यदि यह मेरा सहज कर्त्तव्य था, तो लज्जा के सागर में धकेल नरमी से उदि को सहलाया—'उन्हें रोक लो, नाश्ता निकाल ले लेती हूँ।' एक पेपर प्लेट में कुछ खाने का सामान रखकर फिर गिलास में ठंडा दूध भरा और फिर उदि से कहा, 'तुम यह प्लेट पकड़ो' उसने तुरंत प्रतिवाद किया, 'नहीं, बेबी के लिए मिल्क लेकर जाऊँगी।'

बाहर बैठी महिला को एहतियात से दूध का गिलास पकड़ाती हुई बोली, 'बेबी को दूध पिला दीजिए।' उस महिला की वह दृष्टि मेरे जहन में ऐसी गहरी उतर गई कि आजीवन नहीं भूलूँगी। गहरी तपन, गर्म हवा के थपेड़े जाने कहाँ गुम हो गए, अचानक जाने कैसे शीतल बयार का झोंका आया और मल्लिका के फूल बरसा गया!

'काकली' 120 **बी/2 साकेत, मेरठ** 250003

वंदना सहाय

भूख के जींस

अम्मा स्वदेश आए अपने प्रवासी बेटे के सामने खाने की मेज पर रखे तरह-तरह के पकवानों में से एक-एक कर बेटे की थाली में परोसती जा रही थी।

'बेटा, यह लो गाजर का हलवा, जो तुम्हें बहुत पसंद है और यह मालपुए, मेवे और मावे से भरपूर। यह गाढ़ी मलाईदार खीर और साथ में हींग की मोयनदार कचौरी।'

पर, जैसे ही उन्हें दरवाजे पर बैठा काम वाली बाई का पाँच साल का बेटा अंकित याद आया, उनकी आवाज थोड़ी देर के लिए ठिठकी और आरोह अवरोह में बदल गया—'ओह! मुझे याद ही नहीं रहा कि अंकितवा दरवाजे पर ही बैठा है। अगर गलती से भी इन पकवानों की सुगंध उसे लग गई, तो वह किसी न किसी बहाने घर के भीतर दौड़ा चला आएगा। पता नहीं, कैसे सूँघ लेता है, वह पकवानों की सुगंध। दिन-भर खाने के लिए नाक में दम किए रहता है। अरे, तुम लोग भी तो बच्चे थे, कहाँ कभी खाने के लिए ऐसे दम किया करते थे। उल्टा, मुझे ही तुम लोगों के पीछे दौड़ना पड़ता था, खिलाने के लिए।'

बेटा, जो अनुवांशिकता पर शोध कर रहा था, अपने हलक में अटक-से गए निवाले को निगलने की कोशिश करता हुआ बोला—'अम्मा, शिशु जब अपनी माँ के गर्भ में पल रहा होता है और गर्भकाल के नौ महीनों में शिशु की माँ ज्यादातर समय भूखी रहती है; तो शिशु को भी गर्भ में भूखा ही रहना पड़ता है। काम करनेवाली गरीब औरतों के केस में तो मुझे लगता है कि यही भूखी माँ की भूख के 'जीन्स' उसके शिशु में भी 'ट्रांसमिट' हो जाते हैं, जो उसके पैदा होने के बाद उसमें खाने की ललक को सदा बनाए रखते हैं। मैं वैज्ञानिक तौर पर गलत भी हो सकता हूँ, पर काश! मैं अपनी थीसिस में इसे साबित कर पाता।'

613, **सुंदरम-2 सी**
रहेजा कॉम्प्लेक्स
टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग के निकट
मलाड (ईस्ट) मुंबई 400097 **(महाराष्ट्र)**

लगातार घटता गया, जब मन का आकार।
प्रेमभाव में बन गई, खुदरी दुष्ट दरार।

रोचिका शर्मा

ए. टी. एम.

आज रिया को लड़केवाले देखने आए थे। उसे देखने से पहले ही उन्होंने उसके पिताजी से पूछ-ताछ शुरू कर दी और बात ही बात में पूछा–'कितने का सालाना पैकेज है, रिया का?'

उसके पिताजी ने झिझकते हुए कहा–'जी कुछ पाँच लाख का।'

'ओह फिर तो ठीक है हमारे बेटे के बराबर ही है। अब तो रिश्ता तय करने में कोई परेशानी नहीं। चलिए, आगे की बात करते हैं। शादी की तारीख, खर्च आदि।' तभी रिया अंदर से आई और बोली, 'माफ कीजिए आंटी, आपने सिर्फ मेरा फोटो देखा और सैलैरी पैकेज पूछने लगीं। मेरे पापा ने आपको बायो-डेटा में मेरी शिक्षा व नौकरी का पूरा ब्योरा दिया था, लेकिन फिर भी आपको मेरी काबिलियत से नहीं, मेरी तनख्वाह से मतलब है। और तो और आपने मुझसे मिलना भी जरूरी नहीं समझा। क्या मैं आपसे आपकी पुश्तैनी जमीन-जायदाद के बारे में जान सकती हूँ और यह पूछ सकती हूँ कि आप मुझे कितने डायमंड सेट देंगे शादी में? पर हाँ, यदि मैं ऐसा पूछूँ तो मैं एक बिगड़ैल और लालची लड़की कहलाऊँगी और आप मुझे जगह-जगह संस्कारहीन के नाम से बदनाम भी करेंगे; क्योंकि आप लड़केवाले हैं। आपने यह नहीं सोचा कि मेरे पापा ने मुझे पढ़ाने में उतने ही रुपये खर्च किए होंगे, जितने आपने अपने बेटे को पढ़ाने में किए। कितनी शामें चिंता में गुजारी होंगी, जब मैं समय पर घर न पहुँची थी। और मेरी माँ ने मुझे रसोई के काम-काज में न लगाकर अपने पैरों पर खड़ा किया; ताकि कल मैं किसी की मोहताज न रहूँ। फिर भी आप मेरा सैलैरी पैकेज पूछ रहे हैं।

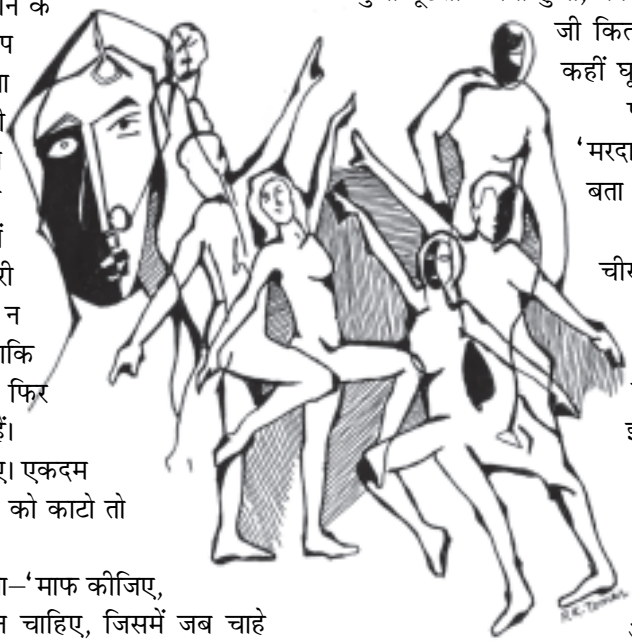

रिया के पिताजी अवाक् रह गए। एकदम सन्नाटा छा गया। लड़के के पिताजी को काटो तो खून नहीं।

रिया का स्वर और कठोर हो गया–'माफ कीजिए, आपको बहू नहीं, ए॰टी॰एम॰ मशीन चाहिए, जिसमें जब चाहे कार्ड डालो और पैसे बाहर आएँ। मैं स्वयं इस रिश्ते को अस्वीकार करती हूँ।

F-206 CeebrosBelvedere
Model School Road
Kumarsamy Nagar Opp. Nilgiris,
Shollingnallore (Chennai) 600119

सत्या शर्मा 'कीर्ति'

फटी चुन्नी

सीमा जो मात्र 14 साल की रही थी, बैठकर सिल रही है अपनी इज्जत की चुन्नी को आँसुओं की धागा और बेबसी की सुई से।

कल ही लौटी थी बुआ के घर से। वहाँ जाते वक्त सुरमई-सा कौमार्य ओढ़कर गई थी, पर आते वक्त सब-कुछ बिखर गया था।

बड़े मान से बुआ ने बुलाया था। प्रसव के दिन नजदीक आ रहे थे। बुआ फिर से माँ बननेवाली थी। पहले से वह इक प्यारी-सी तीन साल की बिटिया की माँ थी।

वहाँ वह हँसती-खिलखिलाती बुआ का सारा काम करती, फूफा जी भी बात-बेबात उसे प्यार करते रहते।

सीमा खुश हो जाती। पिता-तुल्य वात्सल्य से भरा प्यार! पर कभी-कभी चौंक जाती, पापा तो ऐसे प्यार नहीं करते। ऐसे नहीं छूते।

धीरे-धीरे हँसी खोने लगी, उदासी की परत चढ़ने लगी उसकी मासूमियत पर।

बुआ पूछती–'क्या हुआ, मन नहीं लग रहा है? देखो फूफा जी कितना मानते हैं! जाओ साथ में कहीं घूमके आ जाओ।'

पर सीमा बुआ को कभी उस 'मरदाना प्यार' के बारे में नहीं बता पाई।

कभी-कभी सोचती, चीख-चीखकर बता दे सबको, पर बुआ की गृहस्थी का क्या होगा, जो फिर एक और बेटी माँ बन लोगों के ताने झेल रही है।

कौन उठाएगा बुआ और उनके दोनों बेटियों का बोझ।

माँ तो अनाथ बुआ को देखना नहीं चाहती।

और वह बहुत शिद्दत से सिलने लगती है अपनी फटी चुन्नी।

डी-2, सेकेंड फ्लोर
महाराणा अपार्टमेंट
पी॰पी॰ कंपाउंड
राँची 834001 **(झारखंड)**

शशि पाधा

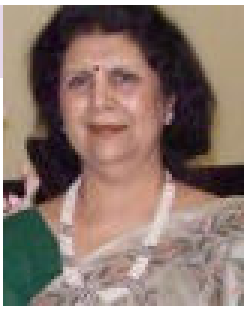

अपनी-अपनी सोच

सीमा के पति हर रात उसे बादाम भिगोने की याद दिलाते थे। यह सीमा का रोज का नियम था। वास्तव में सीमा के पति रमेश अपनी और अपने परिवार की सेहत का बहुत ध्यान रखते थे। फ्रिज सदैव ताजा फलों से भरा रहता था। आधुनिक मान्यताओं के अनुसार दूध-दही भी फैट फ्री ही खरीदा जाता था। सलाद के लिए हर तरह की सब्जियाँ उपलब्ध थीं। यानी, इस परिवार का खाना-पीना हैल्थ मैगजीन के पन्नों के अनुसार था।

उस रात सीमा बादाम नहीं भिगो सकी। पति के पूछने पर उसने बताया कि पैकेट में बादाम कम रह गए हैं। सभी के लिए पूरे नहीं हैं। जब तक नया पैकेट नहीं आएगा, वो नहीं भिगो सकती। या तो सभी के लिए हों, या कोई ना खाए, यह उसकी सोच थी।

रात जब वो रसोई में अपना काम निपटा रही थी, उसने देखा कि उनकी बहू ने बादाम का पैकेट खोला, गिने, शायद दस-बारह ही थे और उन्हें भिगो दिया। सीमा ने सोचा, 'चलो जितने हैं, उतने ही सही। सब दो-दो ही खा लेंगे।'

सुबह जब वो रसोई में आई तो उसने देखा कि बहू ने आधे बादाम अपने लंच बॉक्स में और आधे अपने पति के लंच बॉक्स में डाल दिए। सीमा ने मन ही मन कहा, कोई बात नहीं, अभी बच्ची है, जल्दी ही इस घर के कायदे सीख जाएगी।

174/3 **त्रिकुटा नगर, जम्मू** 180003

रश्मि तरीका

भूख

'देखो साब, 18 साल से कोई भी कम उम्र की लड़की या लड़का घर पर काम करने को चाहिए तो उसकी सलाना पगार और कमीशन मिला कर 45 हजार होगा।'

'45 हजार! लूट मचा रखी है क्या? इतने पिद्दी से लड़के की इतनी पगार और कमीशन। हमारे भी तो इन पर ऊपर के खर्चे, इनका खाना पीना, कपड़े-लत्ते लगते हैं। रेट कम करो कुछ।'

'अरे सेठ! बड़ा लड़का या लड़की लोगे तो रेट डबल। ऊपर से वो कामचोर और जुबानखोर होते हैं। छोटे बच्चे लोगे तो जैसे मर्जी काम सिखा लो। मारो, समझाओ, चूँ भी न करेंगे। सेठ, कम उम्र के बच्चों को काम पर लगवाने का जोखिम तो हमें उठानी पड़ती है। वो क्या नए बालश्रम कानून बन गए हैं। पकड़े जाओ तो जुर्माना भरो, जेल जाओ। कहाँ-कहाँ पैसे नहीं देने पड़ते इन पचड़ों से बचने के लिए। अब जल्दी फैसला करो। मेरी और भी पार्टियाँ खड़ी हैं बाहर और बच्चे कम हैं इस बार'–डायरी निकाल कर अगली पार्टी को आवाज दी सेंटर के कर्ताधर्ता दिनेश ने।

'ठीक है। सौदा पक्का करो; पर यह बताओ कि फैक्टरी में ओवर टाइम करना पड़ेगा, तो कहीं यह पिद्दी-सा लड़का मर तो न जाएगा काम करते-करते? कहीं लेने के देने न पड़ जाएँ भई।'

'अरे साऽऽ ब! ओवर टाइम क्या, चौबीस घंटे काम करवा लो। भूख के मारे लोग हैं। ये, काम से नहीं मरते!'

12-ए, टॉवर-बी, रतनांश अपार्टमेंट
नीयर धीरज संस, जी॰डी॰ गोयनका रोड
वेसू, सूरत 395007

शब्द और दृश्य
रेडियो रूपक
नीलम चतुर्वेदी
मूल्य
तीन सौ रुपए
हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

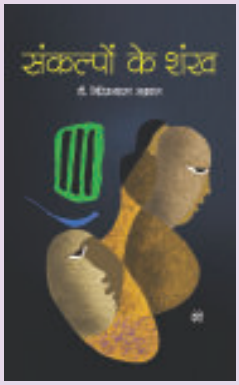

संकल्पों के शंख
दोहा-संग्रह
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मूल्य
दो सौ रुपए
हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

प्रेम जनमेजय

आदमी के बच्चे

'तुम कौन हो?'

'रामू।'

'रामू, तुम्हारा भी नाम होता है क्या? पापा तो तुम लोगों को सिर्फ गरीब कहते हैं। मेरे पापा कहते हैं गरीब लोग गंदे रहते हैं। तुमने इतने गंदे कपड़े क्यों पहने हैं?'

'पैसे नहीं हैं।'

'तुम नहाते भी नहीं हो क्या? हमारा तो टामी भी रोज नहाता है, उसे हमारी आया नहलाती है, मुझे भी वही नहलाती है। तुम्हारी आया नहीं नहलाती?'

'आया! आया कौन?'

'वो जो घर का सारा काम करती है, नौकरानी! तुम्हारे यहाँ नौकरानी नहीं है क्या?'

'है, मेरी माँ नौकरानी है। वो ही घर का सारा काम करती है। दूसरों के घर में भी काम करती है।'

'तुम सारा दिन कैसे खेलते हो? तुम्हारे यहाँ ट्यूटर नहीं आता है क्या? होमवर्क नहीं करना पड़ता क्या?'

'नहीं, बापू के पास स्कूल भेजने के लिए पैसे नहीं हैं। टोली, कालू, गोली, रमती कोई भी स्कूल नहीं जाता है। बड़े होकर हमें मजूर जो बनना है। बापू कहते हैं, मजूर बनने के लिए पढ़ना नहीं होता है। बस बड़ा होना होता है।'

'पापा मुझे तुम्हारे साथ खेलने को सख्त मना करते हैं। कहते हैं, तुम लोग गटर में पलनेवाले कीड़े हो। पर तुम तो मेरे जैसे लगते हो। बस, गंदे कपड़े पहनते हो। हमारी टीचर कहती हैं, आदमी का खून लाल होता है, तुम्हारा भी है क्या?'

'हाँ, देखो।' और उसने अभी-अभी खेल में लगी चोट से रिसता खून का रंग दिखा दिया।

'अरे! तुम्हें तो चोट लगी है, जल्दी डिटॉल से साफ कर लो, डॉक्टर से टिटनेस का टीका लगवा लो, नहीं तो सैप्टिक हो जाएगा।'

'कुछ नहीं होगा, ऐसे तो रोज लगती रहती है।'

'तुम तो बहुत बहादुर हो। मुझे पापा से बहुत डर लगता है। वो मुझे हरदम पढ़ने को कहते हैं, घर के अंदर खेलने को कहते हैं। बाहर नहीं जाने देते हैं। पापा जितना बड़ा होकर मैं तुम्हारे साथ खेलने बाहर आ सकूँगा।'

'नहीं, तब भी तुम नहीं आ सकोगे।'

'क्यों?'

'तब तुम पापा बन जाओगे।'

71 **साक्षर अपार्टमेंट्स, ए-3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली** 110063
मो॰ 9811154440

रामनिवास 'मानव'

शादी का शगुन

गंदी-सी पोटली उठाकर वह अंदर तक चला आया, तो एक साथ कई जनों ने उसे दुरदुरा दिया-'कमजात, अंदर कहाँ चला आ रहा है! चल, बाहर बैठ।'

'इसकी यह मजाल कि शादी के मंडप तक चला आए। कमीन है, तो बाहर बैठे। जो सबको मिलेगा, इसको भी मिल जाएगा।' एक ने कहा।

'माँजी ने सिर चढ़ा रखा है इसको। इसकी औरत यहाँ नौकरानी है, तो इसका मतलब यह नहीं कि सरभंग ही हो जाने दें।' क्रुद्ध होते हुए किसी दूसरे ने कहा।

शादी के शुभ अवसर पर मुझे यह आक्रोश अच्छा नहीं लगा। अत: सबको शांत करते हुए, समझाने के स्वर में, कहा, 'अरे अंदर आ गया है, तो क्या हो गया! यह क्या कह रहा है, जरा सुन तो लो।'

फिर विनम्रता और प्रेम से मैंने उससे पूछा, 'क्यों, क्या बात है भाई? किससे मिलना है?'

'दादी सा नै।' अपमान से आहत स्वर में उसने कहा।

'वह तो नहीं हैं, बाजार गई हैं।' मैंने बताया, 'कब तक लौटेंगी, कुछ कहा नहीं जा सकता।'

'फेर थे यो सामान दादी सा नै दे दीज्यो।' अपनी पोटली मेरी ओर बढ़ाते हुए उसने कहा, 'कह दीज्यो, रामेसर देर गयो ला, भागवंती नै भूवा सा के खातर भेज्यो ला।'

दूसरों को यह बात बुरी लगी। कमीन को दें या उससे लें! पर मैंने उसका मन रखने के लिए, पोटली रखवा ली।

थोड़ी देर बाद माँजी आ गईं, तो पोटली खोली गई। उसमें सौ-डेढ़ सौ रुपयों की एक सूती साड़ी थी, एक पैकेट चूड़ियाँ थीं, 'मेकअप' का कुछ सामान, जो गाँव में मिल सकता था, वह भी था और साथ में थे शगुन के इक्कीस रुपये।

शगुन का सामान देखकर सबको साँप सूँघ गया था।

अनुकृति, 706, **सैक्टर**-13
हिसार 125005 **हरियाणा**
मो॰ 8053545632

धरती का जो स्वर्ग था, आज बन रहा नर्क।
रौंद दिए सपने सभी, समझ न आया फ़र्क़।

प्रियंका गुप्ता

भूकंप

अभी वह ऑफिस जाने की तैयारी में लगा ही था कि सहसा बदहवास सी पत्नी कमरे में आई, 'जल्दी बाहर निकलिए...। बिलकुल भी अहसास नहीं हो रहा क्या...भूकंप आ रहा। चलिए तुरंत...।' वो उसकी बाँह पकड़कर लगभग खींचती हुई उसे घर से बाहर ले गई।

पत्नी को यूँ रुआँसा देखकर जाने क्यों ऐसी मुसीबत की घड़ी में भी उसे हँसी आ गई। बाहर लगभग सारा मोहल्ला इकट्ठा हो गया था। अफरा-तफरी का माहौल था। कई लोग घबराए नजर आ रहे थे। कुछ छोटे बच्चे तो बिना कुछ समझे ही रोने लगे थे।

सहसा उसे बाऊजी की याद आई। वे तो चल भी नहीं सकते खुद से और इस हड़बड़-तड़बड़ में वह उनको तो बिलकुल ही भूल गया। वह जैसे ही अंदर जाने लगा कि उसके पाँव मानो जमीन से चिपक गए। बाऊजी की ज़िंदगी की अहमियत अब रह ही कितनी गई है। वैसे भी उनका गू-मूत करते-करते थक चुका था वो, और उसकी पत्नी भी। ऐसे में अगर भूकंप में वह खुद ही भगवान को प्यारे हो जाएँ तो उस पर कोई इलजाम भी नहीं आएगा।

अभी कुछ पल ही बीते थे कि सहसा पत्नी की चीख से वह काँप उठा। उनका दुधमुँहा बच्चा अपने पालने में ही रह गया था।

अंदर की ओर भागते उसके कदम वहीं थम गए। वह गिरते-गिरते बच गया था। एक हाथ से व्हील चेयर चलाते बाहर आ चुके पिता की गोद में उसका लाल था।

जाने भूकंप का दूसरा तेज झटका था या कुछ और, पर वह गिरते-गिरते बच गया था।

एम॰आई॰जी॰ 292 **कैलाश विहार आवास विकास योजना संख्या एक कल्याणपुर, कानपुर** 208017

बहुत सुना फिर-फिर गुना, इस जीवन का सार।
अपनेपन से जीत लूँ, ये सारा संसार।

नीलिमा शर्मा

किन्नर ही तो था

ठाकुर साहेब! आपको हमारी कसम मत ले जाए इसे, मैंने नौ महीने कोख में पाला इस जीव को, आप कैसे किसी और को दे सकते। हाय री किस्मत! ब्याह के 10 बरस बाद दिया तो वोह भी ठूँठ! मेरे लिए तो मेरी संतान, मैं कही जंगल में रहकर पाल लूँगी। कम से कम माँ तो कहेगा मुझे, अभी तक बाँझ कहलाती थी, अब तो ना जाने क्या-क्या कहेंगे लोग।' बिलखती ठकुराइन की गोद से चंद घंटे की संतान को जबरदस्ती ले जाते हुए ठाकुर भी फूट-फूटकर रो दिए।

'हम बाप बनकर भी ना बन सके। कैसे रखें इस गोल मटोल प्यारे से बच्चे को अपने पास, तुम इसे पढ़ाना। अच्छा इंसान बनाना। तुमको पैसे की कभी कमी न होगी।' कहकर रजनी किन्नर को सौंप आए। आज 28 बरस बाद वह ठूँठ अपने शहर का मेयर बना हुआ है। पुराने सब लोग जानते हैं—किसका बेटा हैं। आखिर ऊँचा माथा सुतवाँ नाक खानदानी रुआबवाला चेहरा चुगली कर रहा था, टी॰वी॰ पर शपथ कार्यक्रम देखते हुए दो जोड़ी बूढ़ी आँखें एक-दूसरे का हाथ थामे जार-जार रो रही थीं और कोस रही थीं समाज को।

सी/2-133, **जनकपुरी**
नई दिल्ली 110058

लघुकथाएँ
जीवनमूल्यों की

संपादक
सुकेश साहनी
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

मूल्य : सजिल्द 150 रुपए
हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

दीपक मशाल

सूद समेत

विदाई के दिन मंच पर बैठा वह सोच रहा था कि वह ताउम्र कभी पत्नी तो कभी दोस्तों से अपने मातहतों की यही शिकायत करता रहा–अजीब लोग हैं, मैं इनके साथ शराफत से पेश आता हूँ, तो मुझे कुछ समझते ही नहीं।

–हुआ क्या?

सुननेवाला जानते हुए भी पूछ बैठता और वह हल्के गुस्से में कहता–ऑफिस में जिसे देखो, वही अपनी जरूरत का रोना रोकर मुझसे पैसे उधार माँगने आ पहुँचता है।

–आप देते ही क्यों हैं उन्हें? आदत तो आपने बिगाड़ रखी है।

–गलती तो मेरी है पर क्या करूँ? ये 'सारे' बहाने ऐसे बनाते हैं कि किसी की माँ बीमार, तो किसी के बीवी-बच्चे।

'–...'

अक्सर ही इस बात का श्रोता के पास कोई जवाब न होता।

–कोई भी ऐरा-गैरा नत्थूखैरा मेरी कार का दरवाजा खोलकर ऐसे आ बैठता है, जैसे सरकारी गाड़ी नहीं, उसके बाप की कार हो।

–हुम्म...

कोई दिलचस्पी न ले, तब भी वह अपनी रौ में बह जाता।

–उस खन्ना को देखो, मुझसे जूनियर अफसर है, तब भी मजाल किसी की जो कोई उससे नजर मिलाकर बात भी कर ले, ऐसा टेरर है उसका। मुझे तो कई बार सलाम तक नहीं ठोकते ये एहसान-फरामोश। बगल से निकल जाता हूँ और ये अपने साथियों के साथ खी-खी करते रहते हैं।

–अरे तो आप ही तो इतना मुँह लगाए घूमते हैं उन्हें कि दिहाड़ी मजूर से लेकर आपका जूनियर अफसर तक सब अपना यार समझते हैं।

कभी-कभी सच में अपने पर ही झल्ला उठता था वह।

आज नौकरी के अंतिम दिन लोग उसके लिए जितनी मालाएँ और उपहार लेकर आए थे, उतने शायद कभी किसी के विदाई-समारोह में नहीं आए होंगे। उसने महसूस किया कि ऑफिस कैंपस के उसके अंतिम क्षणों में हर शख्स की पलकें भीगी थीं, मानो उनका कोई अपना उनसे दूर हो रहा हो। मंच पर आनेवाला हर कर्मचारी उसके बारे में जब कुछ कहता, तो उसे लगता कि आज इतना प्यार देख वह भी रो देगा। काफी देर वह किसी तरह वह खुद को सम्हाले रहा; मगर आखिर में बाँध टूट गया, जब कुछ मजदूरों ने आकर बिलखते हुए कहा–

'साहब' जिन्नगी निकर गई, आप-सा अफसर नईं देखा। इस परदेस में आप माई-बाप थे हमारे।

उसे लगा कि इस सूद के ढेर के पीछे मूल की छोटी-सी गठरी कहीं गुम गई है।

द्वारा श्री रामबिहारी चौरसिया
मालवीयनगर, बजरिया
कोंच, जालौन 285205 **(उ०प्र०)**
584 Stinchcomb Dr Apartment 2
Columbus-Ohio 43202 **(U.S.)**

डॉ० शील कौशिक

बाहर वाला कमरा

'माँ, अब मैं तुम्हें इस कमरे में अकेले नहीं रहने दूँगा। यह कमरा बाहर की तरफ पड़ जाता है। आपको रात को कोई दुख-तकलीफ हो सकती है। आपके पुकारने पर आवाज अंदर सुनाई नहीं देती। जब तक पिता जी थे, तब और बात थी।' रोहित ने माँ के कंधे पर सिर टिकाकर कहा।

'कहते तो तुम ठीक हो, बेटा। पर इतने समय मैं तुम्हारे पिता जी के साथ इस कमरे में रही। मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे उनकी आत्मा इस कमरे में बसती है। इसलिए।'

'नहीं माँ, अब तुम हमारे साथ वाले कमरे में ही चलो।' इतना कह रोहित सहारा देकर माँ को अंदरवाले कमरे में ले आया।

माँ की आँखें नम हो गईं। सोचने लगी–'बेटे को उसका कितना ख्याल है।'

अगले दिन माँ को अपने बाहरवाले कमरे से अपरिचित आवाजें सुनाई पड़ीं तो वह चौंकी, 'बेटा, वहाँ मेरे कमरे में कौन है?'

'माँ, वह कमरा हमने किराए पर दे दिया है।' रोहित ने थोड़ा झिझकते हुए बताया।

माँ के नेत्र एक बार फिर सजल हो उठे।

मेजर हाउस-17, **सेक्टर** 20
सिरसा (हरियाणा) 125055

नीरज सुधांशु

अप्रत्याशित

'दीदी जी! ओ दीदी जी!' जोर-जोर से आवाजें लगा रहे थे वे घर के गेट पर।

उनकी तीखी आवाजें कानों में सीसा-सा घोल रही थीं उसके, 'इन्हें क्या फर्क पड़ता है, कोई जिए या मरे, इन्हें तो बस अपनी ही चिंता है।' बड़बड़ाती हुई अपना ही जी जला रही थी महिमा।

यूँ तो माँ की हर सीख विदाई के साथ ही चुनरी की गाँठ में बाँधकर लाई थी वह। बचपन से ही माँ के दिए संस्कार समस्याओं पर अचूक तीर से साबित होते।

माँ की कही बात रह-रहकर गूँजने लगी थी कानों में, 'बिटिया! घर के दरवाजे से कोई खाली हाथ न जाए, अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ-न-कुछ अवश्य देना चाहिए।'

'दीदी जी! ओ दीदी जी!' आवाजें लगातार धावा बोल रही थीं।

'अरे भाई, दे-दो इनका दीपावली का ईनाम, वही लेने आए होंगे, हम तो दीपावली नहीं मनाएँगे, पर ये तो हर होली, दिवाली की बाट जोहते हैं न! इन्हें क्यों निराश करना!' पति ने आवाज पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा।

'दी-दी-जी!' अबकी बार स्वर और तेज था।

उनका स्वर व उसका गुस्सा आपस में मानो प्रतिस्पर्धा पर उतर आए थे।

'आ रही हूँ।' अलमारी में से पैसे निकालकर भुनभुनाती हुई चल दी वो गेट खोलने।

'दीदी जी, हम तो आपका दु:ख बाँटने आए हैं। दिल तो हमारे पास भी है, माँ से जुदा होने का दु:ख हमसे बेहतर कौन जानता है। बस आपको देख लिया, जी को तसल्ली हो गई, भगवान आपका भला करे।' आशीर्वादों की बौछार करते व ताली बजाते हुए, चल दिए वो, अगले घर की ओर।

महिमा की मुट्ठी में नोट व जले-कटे शब्द जबान में ही उलझकर रह गए।

सरल कुटीर
आर्यनगर, नई बस्ती
बिजनौर 246701
मो॰ 9412713640

सविता मिश्रा

ब्रेकिंग न्यूज

मेरी गुड़िया, मेरी बच्ची, कह-कह शर्माइन बेहोश हुई जा रहीं थीं।

विधायक शर्मा जी फोन-पर-फोन किए जा रहे थे, पर अभी तक कुछ पता ना चला था।

ब्रेकिंग न्यूज के नाम से घर-घर न्यूज दिख रही थी कि कद्दावर नेता की कुतिया किसी दुश्मन ने गायब की।

'कुतिया नहीं कहो, वर्ना चढ़ बैठेंगे।' किसी ने फुसफुसाकर कहा।

'विधायक की गुड़िया को किसी ने किया गायब।' सँभलते हुए पत्रकार बोला, 'कई टीमें हुईं रवाना, खुद विधायक एक टीम को लीड कर रहे हैं।'

तभी कैमरे के सामने एक लाचार बुड्ढा आ गया।

'अरे बुड्ढे, कहाँ बीच में घुसे आ रहे हो?' धक्का मारते हुए पत्रकार बोला।

'बेटा, मेरी भी सोलह साल की गुड़िया खो गई है। उसे भी खोजने में मदद कर दो।'

'अब्बे बुड्ढा जाके खोज, होगी कहीं मुँह काला कर रही होगी। देख नहीं रहा, हम ब्रेकिंग न्यूज चला रहे।'

'बेटा ऐसा न कहो, मुझे शक है विधायक साहब ने ही गायब किया है। वह इन्हीं के यहाँ काम करती थी। महीने से यहीं भूखा-प्यासा बैठा हूँ, पर कोई नहीं सुन रहा।'

तुरंत फिर ब्रेकिंग न्यूज तैयार–कामवाली ने किया विधायक की 'गुड़िया का अपहरण' अभी फरार बताई जा रही है। जल्दी ही खोज निकाला जाएगा उसे।

कैमरामैन बूढ़े को एक कुर्सी पर बैठा, पानी-समोसा आफर कर, मुस्कराते हुए बोला–'बाबा चिंता ना करो। विधायक की कुतिया यानी 'गुड़िया' की खोज में, तुम्हारी मिल ही जाएगी अब।'

गुड़िया

द्वारा देवेंद्रनाथ मिश्रा (पुलिस निरीक्षक)
फ्लैट नंबर 302
हिल हॉउस, खंदारी अपार्टमेंट
खंदारी (आगरा) 282002

सारिका भूषण

नशा

'अब बस भी करो बेटा, पिछले तीन घंटों से लगातार मोबाइल पर गेम खेल रहे हो। आँखें तो खराब होंगी ही रिजल्ट भी खराब होगा।'

'कल मैथ्स के पेपर्स हैं और तुम्हारी यही पढ़ाई चल रही है?' रीमा ने झुँझलाते हुए रचित से कहा।

'मम्मी! आप तो बस मुझे ही बोलती हैं। दीदी को तो बिलकुल नहीं डाँटतीं। वो भी तो कितनी देर से यू ट्यूब पर मूवी देख रही है। हाँ आप क्यों बोलेंगी? वो लाडली जो ठहरी।' बोलते-बोलते दसवर्षीय रचित की आँखों से आँसू निकलने लगे। रचित को अच्छी तरह पता था कि मम्मी किसी की आँखों में आँसू नहीं देख सकतीं।

रचित के आँसू के इतिहास-भूगोल सभी से वाकिफ थी रीमा। रचित ही क्यों, घर के सभी सदस्यों के आँसुओं से परिचित थी, फिर भी सबके लिए एक पैर पर खड़ी रहती थी। ऋषिका की दसवीं की परीक्षा सर पर थी और उसका फिल्में देखने का शौक बढ़ता ही जा रहा था। दो-चार बार रीमा ने प्यार से समझाया; पर ऋषिका से हर बार यही सुनने को मिलता, 'मम्मी, आप कुछ समझती ही नहीं हैं। मैं लगातार नहीं पढ़ सकती और मेरे लिए रिलैक्स करना बहुत जरूरी है।'

सख्ती से पेश आना रीमा के स्वभाव में ही न था। उसका मानना था कि हम कभी भी कोई काम किसी से जबरन नहीं करवा सकते, जब तक कि वह खुद उसे करने की इच्छा या जुनून न पाले। यही धारणा रखते हुए रीमा अपने बच्चों को थोड़े समय के लिए छोड़ देना ही उचित समझ रही थी।

रात के बारह बजे तक अम्मा जी का टी॰वी॰ देखना भी रीमा को उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं लगता था; मगर अम्मा भी कहाँ मानने को तैयार रहती थी-'बस बेटा थोड़ी देर और देखूँगी, नींद भी तो नहीं आती है और कौनसा मुझे सुबह स्कूल जाना है।' रीमा के हाथों से दवा खाने के बाद अक्सर अम्मा जी बोल पड़तीं।

दिन-भर के सारे काम खत्म करके जब रीमा बिस्तर पर जाती, तो अक्सर रोहित के मुँह से आती शराब की बदबू उसे सोने नहीं देती। हफ्ते में कम-से-कम चार दिन तो ऐसा जरूर होता था। खुद को रोकने की कोशिश जब नाकाम हो जाती, तो यदि कभी रीमा शराब का जिक्र भी करती, तो रोहित तुरंत बोल पड़ता, 'रीमा प्लीज, अब तुम मुझे लेक्चर देने मत बैठ जाना। ऑफिशियल पार्टीज में कितना जरूरी होता है यह सब, तुम क्या जानो? वैसे भी तुम पता नहीं दूसरों की ज़िंदगी में दखल देने का क्या नशा पाल रखी हो?'

रीमा सोचती रह जाती कि वाकई में वह नशे में है या बाकी सब। और जिस दिन उसका नशा उतर जाएगा; तो क्या यह घर, घर रह पाएगा?

द्वारा श्री दीपक रौशन
अधिवक्ता, सी-258, **रोड** 1 **सी**
अशोकनगर, राँची-834002 **(झारखंड)**

पवित्रा अग्रवाल

बयार

बेटे के घर पुत्री पैदा हुई थी। बेटे-बहू कुछ उदास थे। उसी शहर में अपने पति के साथ अलग रह रही माँ को पता चला तो वह मिठाई का डिब्बा लेकर अस्पताल पहुँची और दादी बनने की खुशी में नर्सों, मिलने आनेवालों को मिठाई खिलाई।

माँ की इस हरकत पर बेटे-बहू को बहुत गुस्सा आया।

'माँ हमारे बेटा नहीं, बेटी हुई है!'

'हाँ, मुझे मालूम है लक्ष्मी आई है।'

'माँ, माता-पिता से अधिक दादा-दादी को पोते की चाह होती है और तुम पोती के आने की खुशी में लड्डू बाँट रही हो?'

'बेटा, पहली बात तो मुझे बेटियाँ भी उतनी ही प्यारी हैं, जितने बेटे। वैसे भी मैंने बेटी का सुख कहाँ जाना है! भगवान ने बेटी दी ही नहीं और तू भी उदास मत हो। समय बदल रहा है, आज बेटियाँ भी किसी से कम नहीं हैं।'

'फिर भी!'

'फिर भी क्या बेटा? आजकल बहुत से घरों में बेटे के घर माता-पिता को प्रवेश नहीं मिलता, बेटी के घर में फिर भी थोड़ी पूछ हो जाती है। अपनी आंटी को ही देख लो, उनको जितनी इज्जत उनके बेटी-दामाद देते हैं, उनके बेटे-बहू कहाँ देते हैं?...तो बेटा, जैसी चले बयार पीठ तब तैसी दीजे।'

घरौंदा, 4-7-126 **ग्राउंड फ्लोर**
इसामियाँ बाज़ार, हैदराबाद 500027

श्याम बाबू

स्वर्ग के एजेंट

'चलताऊ काम नहीं कराता पूरे विधि-विधान से सब कुछ कराऊँगा। ऐसे ही इक्कीस सौ रुपये नहीं माँग रहा हूँ। काम देखि लिया जाय, गारंटी।'

संगम में माँ के अस्थिफूल विसर्जन के लिए गए प्रेमशंकर को एक पंडा जी अपना भाव बता रहे थे और अन्य घेरे खड़े थे तथा अपना-अपना विज्ञापन अपनी तरह से कर रहे थे। माँ का अचानक स्वर्गवास होने से प्रेमशंकर से कुछ बोलते नहीं बन पा रहा था। साथ में पत्नी और एक नजदीकी रिश्तेदार भी थे।

पवित्र कर्म-कांड के बिना आत्मा मुक्ति नहीं पाती। शास्त्र कहता है कि वैतरणी में नाना मगरमच्छ, साँप, कछुआ...। इनसे छुटकारा? दान-दक्षिणा और कोई मार्ग नहीं। नरक में कोटि कल्पवास करेगी आत्मा।'

आध्यात्मिक, सामाजिक और वैधानिक कायदों में कसा इंसान इनसे निकल ही नहीं पाता। यहाँ जो हुआ, हुआ; वहाँ तो बनी रहे। मिथ्याचार कूट-कूट कर रुधिर में इंजेक्ट कर दिए गए हैं। धर्म का भय सबसे भयानक!

काफी मोल-तोल के पश्चात् एक नाववाला जाने को तैयार हुआ।

'अपने पंडाजी हैं, जिनका आफॅर सिस्टम चलता है। एक तगड़ी पार्टी सुबह पाँच हजार गिनकर गई है। पूरे घंटा-भर मंत्र-जाप चला था। भाई, जैसी आत्मा वैसा विधान। ...पातकी था। माताजी तो देवी...'

'ई गंगा...ई जमुना...सरस्वती का दर्शन भाव से करें। माताजी का ध्यान करते हुए उनके भोजन, वस्त्र, नित्य नैमित्यिक आवश्यकताओं का संकल्प...। अस्थि फूल यहाँ डाल दें।' सजल नेत्रों से प्रेम और पत्नी ने माँ को प्रणाम करते क्रिया की।

'बड़ा विधिवत कराए हैं महाराज जी भाई वाह।' केवट प्रायोजित प्रशंसा किए जा रहा था। 'जजमान इनको ग्यारह सौ...'

क्यों भाई? तुम तो कह रहे थे कि खाली नाव का देना है। कर्मकांड के लिए जो खुशी हो। कुछ आफॅर-वाफर बता रहे थे न तुम।'

'हम कोई ऐरा-गैरा नहीं हैं। हमसे बचकर जाइएगा। यह देखिए लाइसेंस है हमारे पास...पंडा हूँ। बात करते हैं। जाइए माथा मत खराब करिए, कुछ मत दीजिए...घाट तक पहुँचिए! नावें डूबी हैं...मझधार में। सिंपल समझ रखा है, हम लोग को...। खाली डंड-कमंडल करनेवाले बाप-दादा चले गए।

प्रेम पत्नी से कह रहे थे, 'ये लोग अम्मा को बैकुंठ दिलाएँगे?'

85/1, **अंजलि कांपलेक्स**
शिलाँग (मेघालय) 793001

सतीश दुबे

जन्म 12 नवंबर 1940;
देहावसान 25 दिसंबर, 2016

श्रद्धांजलि

पिता की मौत हुए चार दिन हो चुके थे। वह घुटनों पर चेहरा नीचे किए बैठा था। तभी छोटे भाई ने कान में बुदबुदाया, 'पिता के दफ्तर से एकाउंटेंट आए हैं।'

उसने सिर उठाकर, सामने बिछे जूट के बोरे पर गमगीन मुद्रा बनाए आलथी-पालथी मारकर बैठे व्यक्ति की ओर देखा। पाँचेक मिनट बाद वह बोरे सहित उसकी ओर खिसका, 'मौत के तीसरे दिन बाद मिलनेवाला एक्सग्रेशिया पेमेंट ले आया हूँ—सरकार की जी॰सी॰ पर यही बड़ी मेहरबानी है। लो, ए॰आर॰ पर दस्तखत कर दो।'

उसने दस्तखत कर दिए।

उन्होंने नोटों की गड्डियाँ उसकी ओर खिसका दीं।

'गिन लो! तुमसे क्या बताएँ, पटेलबाबू बड़े अच्छे आदमी थे। सज्जन इतने कि बेजा लफ्ज कभी जबान पर नहीं लाए किफायतपसंद बहुत थे; कहते थे—एक पैसा भी इधर-उधर खर्च करना संतान का पेट काटना है।'

उसकी निगाहें उनकी ओर उठ गईं।

'हा...हा...ऐसा ही सुझाव था उनका। शायद तुम्हें नहीं मालूम वो पीने के शौकीन थे, पर पीना नहीं चाहते थे इसलिए कि...'

'यह आप गलत बोल रहे हैं, उन्होंने ताज़िंदगी...।'

'तुम बच्चे हो, क्या जानो! वे इसलिए नहीं पीते थे कि पैसा खर्च होगा।' उसने पिता की याद में आँसू पोंछ लिये। 'अच्छा, मैं चलता हूँ...।'

'जी, अच्छा...।'

'सुनो! ऐसा करो, इसमें से सौ-दो-सौ रुपये दे दो...हम एक-दो लोग कहीं बैठ लेंगे...इससे उनकी आत्मा को शांति मिलेगी।'

'आप लोगों के शराब पीने से उनकी आत्मा को शांति मिलेगी?'

'हाँ, तनखा के अलावा जो भी पेमेंट मिलता था, उसमें से वे जरूर कुछ-न-कुछ देते थे, और कहते थे, इसकी दारू पी लेना...अपने पैसे से हमको पीते देख वे खुश होते थे।' उसने उनकी ओर घृणा की दृष्टि से देखा तथा नोट उनके सामने रख दिए, 'ले लीजिए।'

उन्होंने सौ के दो नोट उठा लिये तथा 'अच्छा, मैं चलता हूँ' की मुद्रा में उठ खड़े हुए।

कृष्णा वर्मा

मज़हब

बारिश ऐसी मूसलाधार कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही। लगता था जैसे आकाश फट गया हो। देखते-देखते बाढ़ का रूप ले लिया। पूरे गाँव में अफरा-तफरी मच गई। जाएँ तो कहाँ, कुछ समझ नहीं आ रहा था। बहुत से ढोर-डंगर भी बह गए थे। नसीब से कुछ बैलगाड़ियाँ बच गई थीं सो बड़े-बूढ़ों और बच्चों को उनमें लाद पीछे-पीछे मर्दों-औरतों का हुजूम चल पड़ा। एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे गाँव घूमते लोग परेशान हो गए। सभी गाँवों का बुरा हाल था। कहीं ठौर नहीं, हारकर सब शहर की ओर चल पड़े। गाँव और शहर की सीमा के मध्य कई एकड़ खाली जमीन पड़ी थी और दूर से कहीं काला धुआँ उठता दिख रहा था। परिवारों को वहीं बिठा डरे-डरे सारे गवँई मर्द भौचक्के से उस ओर खोजने चल दिए कि आखिर वहाँ क्या हो रहा है। वह क्या जानें कि कुछ वर्ष पूर्व ही यहाँ कई फैक्टरियाँ और ईंटों के भट्ठे लगे थे और यह धुआँ उन्हीं फैक्टरियों से निकल रहा है।

वहीं पास के भट्ठे के मालिक बलराम ने आवाज लगाई– अरे तुम सब मुँह उठाए यहाँ क्या रहे हो, काम की तलाश में हो क्या?

धनीराम बोल उठा, 'हाँ कोई काम मिलेगा क्या?'

'हाँ। क्या ईंटें बनाने का काम आता है?'

'सीख लेंगे।'

'ठीक है, आ जाओ।'

गँवैयों कि खुशी का ठिकाना ना था। दो जून की रोटी का जुगाड़ तो हो गया, जो जरूरी था, बाकी जीवन तो कैसे भी कट जाएगा।

बलराम ने एक-एक से उसका मजहब बताने को कहा ताकि अलग-अलग तरफ को झोंपड़ियाँ बनवा दे, कहीं कल को जाँति-पाँति मज़हब का कोई झगड़ा ना हो।

उनमें से एक बोला, 'बाबूजी, ईंटों की तरह मजदूर की न कोई जाति होती है, न कोई मजहब होता है। ईंट को जहाँ लगा दो, उसी की हो जाएगी। मजदूर को जो भी दो जून की रोटी दे, वही उसका खुदा।'

62 Hillhurst Drive, Richmond Hill, ON L4B 2V3

शैल चंद्रा

चक्कर

वह राशन कार्ड के लिए तीन महीने से ऑफिस का चक्कर लगा रहा था। जब वह सोमवार को जाता तो पता चलता कि बाबू 'अ' आज शिव मंदिर गए हुए हैं। मंगलवार को जाने पर बाबू 'ब' हनुमान मंदिर जाने के कारण नहीं मिलते। प्रत्येक बुधवार को समाज सेवा को अपना धर्म माननेवाले बाबू 'स' की कॉलोनी में बैठकें होती थीं, सो वह ऑफिस में नहीं मिलते। गुरुवार को तो ऑफिस के आधे लोग 'उपवास' रखते थे, इस कारण घर में ही धरम-करम में लगे रहते। शुक्रवार को बाबू 'द' नमाज़ पढ़ने के बहाने ऑफिस से निकल जाते। फिर शनिवार आ जाता। शनिवार को बाबू 'इ' और 'ई' पास के बजरंग बली के मंदिर में हनुमान चालीसा पढ़ने में लीन रहते।

वह सोमवार से शनिवार तक के दिन और इन दिनों में कौन बाबू कहाँ जाता है, को कई बार उँगलियों पर गिन चुका था। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने सोचा कि हो सकता है, दफ्तर के बाबू अपने बचे काम को रविवार को करते हों। यह सोचकर वह खुश होने लगा। वह रविवार को निगम कार्यालय में उपस्थित हुआ। उसकी सोच के अनुरूप सारे बाबू वहाँ उपस्थित मिले। आज उसे उम्मीद थी कि उसका राशन कार्ड बन जाएगा।

उसे देखते ही बाबू 'इ' ने रौबदार आवाज में कहा, 'आज रविवार है। छुट्टी का दिन। आज इधर कैसे आ गए?' बाबू उसे ऐसे देख रहा था, जैसे किसी अपराधी को देख रहा हो। उसे नहीं मालूम था कि उन लोगों ने रविवार का दिन दारू-मुर्गा के लिए तय कर रखा था। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ।

दूसरे दिन से उसने ऑफिस का चक्कर लगाना छोड़ उन मंदिरों और मस्जिदों में चक्कर लगाना शुरू कर दिया।

रावणभाँठा नगरी
धमतरी (छ॰ग॰) 493778

कविता वर्मा

दस्तूर

छोटे से गाँव में पहली पोस्टिंग पर जब वह आया तो उसके मन में कई सपने थे, कुछ करने की चाहत थी, लेकिन साथ ही विभाग में फैले भ्रष्टाचार से लड़ने की चुनौती भी थी। सालों से सुविधा-शुल्क लिए बिना काम न करने वाले कर्मचारी उसकी इस ईमानदारी पर हँसते, ताने मारते और कभी भुनभुनाते भी थे; लेकिन वह अपने इरादों पर अडिग था।

उस दिन एक फटेहाल व्यक्ति अपनी गुहार लेकर उसके पास आया। साथ में उसका 5-6 साल का बच्चा भी था, जो ठंड में ठिठुर रहा था। उसने उसकी बात सुनी, कागज देखे और कार्यवाही का आश्वासन देते हुए कहा, 'काम हो जाएगा।' उसने अपनी फटी धोती की अंटी से मुड़े-तुड़े सौ-सौ के दो नोट निकालकर उसकी और बढ़ाए और हाथ जोड़कर बोला–'साब मेरे पास इतने ही हैं, ले लो।'

उस व्यक्ति की फटेहाल अवस्था में भी काम के लिए पैसे देना और वो भी बिना माँगे! वह सकपका गया–'नहीं, नहीं! इसकी जरूरत नहीं है। तुम्हारे कागज मैंने देख लिये हैं। तुम्हारा काम हो जाएगा।'

वह व्यक्ति असमंजस में उसकी और देखता रहा। फिर गिड़गिड़ाकर बोला–'साब, सच में मेरे पास और नहीं हैं। ये काम कर दो साब! बड़ी मुसीबत में हूँ।'

उसने कहा–'हाँ, कहा न, तुम्हारा काम हो जाएगा, इन पैसों की जरूरत नहीं है।'

बिना पैसे दिए काम नहीं हो सकता उस व्यक्ति का ये विश्वास इतना पुख़्ता था कि उसे उसके पैसे न लेने की बात का विश्वास ही नहीं हुआ।

उसके बार-बार के आश्वासन के बावजूद वह बहुत देर तक उससे पैसे ले लेने के लिए विनती करता रहा। आखिर उसने उससे पैसे लेकर उसके बेटे के हाथ में पकड़ाए और कहा–'इन पैसों से अपने बेटे के लिए कपड़े खरीद देना, तुम्हारा काम हो जाएगा।'

उसके जाने के बाद वह देर तक यही सोचता रहा–उसे कौनसा दस्तूर बदलने के लिए काम करना है? पैसे लेकर काम करने का या पैसे दिए बिना काम करवाने का?

542 **ए, तुलसीनगर**
बोंबे हॉस्पिटल के पास
इंदौर 452010

सुधा भार्गव

टकराती रेत

शहरी बाबू को उसके अपने गाँव की मिट्टी पुकारती तो चल देता कंधे पर झोला लटकाए, साल में एक बार। दो-तीन दिन पुरखों की कच्ची-पक्की हवेली में रहता, बालसाथियों से मिलता और गुदगुदाती-सी खुशी समेटे लौट आता।

इस बार भी गाँव की सौंधी-सौंधी खुशबू से वहाँ खिंचा चला गया। दोस्त अमरूद अपने दरवाजे पर ही बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। उसको देखते ही शहरी बाबू चहकने लगा–अकेला कैसे? बच्चे कहाँ हैं रे अमरूद!

अरे शहरी! आ-आ। पढ़ने कू गए हैं। आते ही होंगे मंदिर से।

–क्या बोल रहा है? गए हैं स्कूल और आएँगे मंदिर से!

–अरे भैया, मंदिर के आँगन में ही क्लास चलत है।

–फिर स्कूल?

–उस पर दो साल से ताला जड़ा है।

–तब तो बच्चों को बड़ा कष्ट होता होगा!

–काहे का कष्ट! हमकू तो मौसम के मिजाजी तूफान और पंचायती तूफान सहने की आदत है।

–यह सहने की आदत ही तो बुरी है। विरोध में आवाज तो उठानी ही पड़ेगी।

–न बाबा न! ऐसी भूल मत करियो। तेरा क्या, ऊधम मचाकर भाग जाएगा शहर। साथ में भाग जाएँगे ये मास्टर भी। बड़ी मुश्किल से रोक रखा है इनकू। रोटी-पानी सब घरों से जात है, फीस अलग।

बाबू की हिम्मत न हुई फिर इस विषय पर बात करने की। गाँव से वह इस बार भी लौटा, पर आँखों में रेत-सी उदासी लिए, जो महीनों उससे टकराती रही।

703 **springfield**
apartments
Sarjapaura Road
Bangalore 560102
Karnataka
Mo. 9731552847

विनोद ध्रब्याल राही

बाबा का चरणामृत

वहाँ मेरी नियुक्ति हुए दूसरा दिन था। शाम को शिव मंदिर के प्रांगण में जाकर बैठ गया। लोग बारी-बारी से घंटियाँ, शंख और नगाड़े बजा रहे थे। एक थक जाता तो दूसरा बजाने लगता। उसके थकने पर तीसरा। पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठा था। यह क्रम लगातार हर वाद्य पर चलता रहा। लोग बजाते चले जा रहे थे।

दो आदमी मेरे पास आकर बैठ गए। वे जानते थे कि यहाँ के विद्यालय में मेरी नियुक्ति हुई है। दोनों ने अपने नाम जयचंद और शाम बताए। मैं जानने के लिए उत्सुक तो था ही इसलिए जयचंद से घंटियाँ, शंख और नगाड़े बजाने का कारण पूछ लिया।

'गुरुजी, बहुत समय से यहाँ बारिश नहीं हो रही। हम रोज इसी तरह घंटियाँ, शंख और नगाड़े बजाकर शिवजी और इंद्रदेव की पूजा करते हैं। आप देखना हमारी भक्ति से खुश होकर शिवजी और इंद्रदेव बारिश जरूर करेंगे।' जयचंद ने उत्तर दिया।

'तुम दोनों आज क्यों नहीं बजा रहे?' मैंने उससे पूछा।

'गुरुजी, अभी तक हमने बाबा का चरणामृत नहीं पिया है। चरणामृत पीकर हम बजाना शुरू करेंगे तो पूरी श्रद्धा से आधी रात तक डटे रहेंगे।' शाम बोल पड़ा।

वे दोनों उठकर चले गए। संगीत बजता रहा, बिना रुके। करीब आधे घंटे के बाद वे फिर लौटे।

शाम मेरे पास आकर मुस्कुराते हुए बोला, 'गुरुजी, हम बाबा का चरणामृत पी आए। अब देखना हमारा कमाल। ऐसा नगाड़ा पीटेंगे कि शिवजी और इंद्रदेव को कृपा करनी ही पड़ेगी। हम बारिश करवाकर ही दम लेंगे।' उसके इन शब्दों के साथ निकली शराब की तीखी गंध मेरे नथुनों में समा गई।

रा॰मा॰पा॰ अनूही (कोटला)
काँगड़ा (हि॰प्र॰) 176205

चंद्रेशकुमार छतलानी

तीन संकल्प

वह दौड़ते हुए पहुँचता, उससे पहले ही उसके परिवार के एक सदस्य के सामने उसकी वही तलवार आ गई, जिसे हाथ में लेते ही उसने पहला संकल्प तोड़ा था कि वह कभी किसी की भी बुराई नहीं सुनेगा। वह पीछे से चिल्लाया, 'रुक जाओ! तुम्हें तो दूसरे धर्मों के लोगों को मारना है।' लेकिन तलवार के कान कहाँ होते हैं, उसने उसके परिवार के उस सदस्य की गर्दन काट दी।

वह फिर दूसरी तरफ दौड़ा, वहाँ भी उससे पहले उसी की एक बंदूक पहुँच गई थी, जिसे हाथ में लेकर उसने दूसरा संकल्प तोड़ा था कि वह कभी भी बुराई की तरफ नहीं देखेगा। बंदूक के सामने आकर उसने कहा, 'मेरी बात मानो, देखो मैं तुम्हारा मालिक हूँ।' लेकिन बंदूक को कुछ कहाँ दिखाई देता है, और उसने उसके परिवार के दूसरे सदस्य के ऊपर गोलियाँ दाग दीं।

वह फिर तीसरी दिशा में दौड़ा, लेकिन उसी का आग उगलनेवाला वही हथियार पहले से पहुँच चुका था, जिसके आने पर उसने अपना तीसरा संकल्प तोड़ा था कि वह कभी किसी को बुरा नहीं कहेगा। वह कुछ कहता उससे पहले ही हथियार चला और उसने उसके परिवार के तीसरे सदस्य को जला दिया।

वह स्वयं चौथी दिशा में गिर पड़ा। उसने गिरे हुए ही देखा कि एक बूढ़ा आदमी दूर से धीरे-धीरे लाठी के सहारे चलता हुआ आ रहा था, गोल चश्मा पहने, वह कृशकाय बूढ़ा उसका वही गुरु था, जिसने उसे मुक्ति दिलाकर ये तीनों संकल्प दिलाए थे।

उस गुरु के साथ तीन वानर थे, जिन्हें देखते ही सारे हथियार लुप्त हो गए।

उसने देखा कि उसके गुरु उसे आशा-भरी नजरों से देख रहे हैं और उनकी लाठी में उसी का चेहरा झाँक रहा है, उसके मुँह से बरबस निकल गया 'हे राम!' कहते ही वह नींद से जाग गया।

3 **प** 46, **प्रभातनगर, सेक्टर**-5
हिरणमगरी, उदयपुर (राजस्थान) 313002

विभा रश्मि

अवमूल्यन

अचानक उस नगर की भीड़-भरी सड़क पर एक शाही हाथी गिरकर बेहोश हो गया। चारों ओर भगदड़ और अफरा-तफरी मच गई। समाचार आग की लपटों की तरह फैला और शाह तक जा पहुँचा।

शाही हाथी के नीचे पूरे आधा दर्जन राहगीर दबे होने की आशंका जताई गई। कुछ राहगीरों को गंभीर रूप से चोटें भी आईं। नगर के चिकित्सकों का दल गजराज की नब्ज टटोलता रहा, पर बीमारी का कुछ पता न चला। दोपहर तक हाथी की अंतिम अटकी साँस भी निकल गई और वह मृत घोषित कर दिया गया।

राज्य-भर में तहलका मच गया। दूर-दूर से जनसमुदाय शाही हाथी के दर्शनार्थ आए और पुष्प-मालाएँ अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

मृत गजराज का दाह-संस्कार करने के लिए उसकी विशाल काया को जब हटाया गया तो कुछ मृत राहगीरों के क्षत-विक्षत शव निकाले गए, परंतु उनकी शिनाख्त नहीं हो सकी।

तीन दिनों तक प्रजा, गजराज की आकस्मिक मृत्यु का शोक मनाती रही। तत्पश्चात् सभी अपने-अपने नित्य कार्यों में जुट गए।

मुर्दाघर से अनपहचाने शवों को निकाला गया और उनका सामूहिक दाह-संस्कार चुपचाप कर दिया गया।

एस-1/303, **लाइफ स्टाइल होम्स**
होम्स एवेन्यू, वाटिका इंडिया नेक्स्ट
सेक्टर 83, **गुड़गाँव** 122004 **(हरियाणा)**

पद्मजा शर्मा

फूल

एक किशोर अक्सर हमारे बगीचे से फूल चुनकर ले जाता था। जब वो फूल चुनता था, तब उसकी नजरें सिर्फ फूलों पर होती थीं। इधर-उधर और कहीं भी नहीं देखता था। उसकी नजरें फूलों के सिवाय कुछ देखती नहीं थीं। कान कुछ और सुनते नहीं थे। मैं कई बार उसके पास आकर निकल जाती। वह मनोयोग से फूल चुनता रहता था। देखता तब न, जब सुनता।

एक दिन वह अपनी टोकरी भर फूल लेकर मुड़ रहा था। मैंने पूछ लिया, 'खिले फूल से चेहरेवाले बच्चे से–'क्यों और किसके लिए चुनते हो तुम फूल?'

वह चौंका और मासूमियत से बोला–'ये फूल मैं अपने लिए नहीं, माँ के लिए चुनता हूँ। वह इन्हें धागे में पिरोती है, माला बनाती है। फिर भगवान को चढ़ाती है, इसलिए कि भगवान की कृपादृष्टि मुझ पर बनी रहे। बाकी मालाएँ बेचती है कि मेरी पढ़ाई जारी रहे।'

'तुम्हारी माँ क्यों नहीं आती? पापा क्यों नहीं आते? तुम्हें स्कूल नहीं जाना होता इस समय?'

'मेरे पापा इस दुनिया में नहीं हैं। माँ फूल बेचकर घर चलाती है। मुझे पढ़ाती है। माँ मेरे लिए इतना करती है। क्या मैं स्कूल जाने से पहले माँ के लिए इतना भी नहीं कर सकता?'

बच्चा तेज-तेज कदमों से जा रहा था। सुबह हँस रही थी। फूल मुस्करा रहे थे। पत्तियाँ तालियाँ बजा रही थीं।

मैंने तय किया कि बगीचे में इस बार फूलवाले पौधे और लगाने हैं।

15-**बी, पंचवटी कॉलोनी, सेनापति भवन के पास**
जोधपुर 342011 **(राजस्थान)**

लरजते पेड़

रामकुमार घोटड़

'ओ गोलू के पापा!' वो अर्द्धमूर्च्छा में बड़बड़ा रही थी, 'मुझे अपने घर ले चलो, मैं यहाँ नहीं रहूँगी, यहाँ मेरा दम-सा घुटता है।'

'अब अपना यही घर है...और कहाँ चलें।' बूढ़ा उसके नजदीक आकर बैठ गया।

'नहीं! यह तो वृद्धाश्रम है, अपना घर नहीं। अपना घर तो शहर के बीचोंबीच बड़ा-सा है, जिसकी जमीन के लिए तुमने अपनी नौकरी की जमा-पूँजी लगा दी थी। और उसे बनाने के लिए तुमने अपनी तनख्वाह पर बैंक से कर्ज लिया था। मुझे उस घर में ले चलो...गोलू के पापा! मैं वहीं बेटे, बहू के साथ रहूँगी।'

'होश में आने की कोशिश करो गोलू की मम्मी, अपने आपको सँभालो। अब अपना यही घर है और अंतिम साँस तक यही घर रहेगा। उस घर से लाकर बेटा-बहू ही तो यहाँ छोड़कर गए हैं।'

बुढ़िया को धीरज बँधाते-बँधाते बूढ़े को यों लगा कि वो भी अंदर से कुछ टूटने लगा है। अपना दर्द छुपाने की कोशिश में वह बुढ़िया के चेहरे पर आए आँसुओं को हाथ से पोंछने लगा।

सादुलपुर, चुरू 331023
(राजस्थान)

रश्मि शर्मा

सम्मोहन

लड़की उस दिन जरा उदास-सी थी। लड़का भाँप गया इस बात को। मगर वजह से अनजान था। वे दोनों छत पर बैठे थे। लड़की गाल पर हाथ टिकाए खाली आँखों ने आकाश देख रही थी। लड़का कभी उसका चेहरा देखता, तो कभी आस-पास के लोगों को।

वह साधारण छत नहीं थी। एक आलीशान महल की छत थी, जिसके कंगूरे पर जरा ओट लेकर दोनों बैठे थे। चुप-चुप। लड़का बोलता जाता, लड़की बस हाँ-हूँ। अचानक वो लड़की उठी और बोली, 'चलो अंदर, जरा घूम आएँ।' लड़का यंत्रवत पीछे-पीछे। वे दोनों लोगों का चेहरा देखते, भीड़ देखते और महल की नक्काशी भी। चलते-चलते थक-से गए।

सबसे ऊपरी मंजिल की सीढ़ियों पर लड़की ने अजीब से भाव से लड़के को देखा। अब शायद वह समझ गया। कोई चीज है, जो उसका ध्यान भटका रही है। उसे कुछ चाहिए; मगर क्या, वह शायद लड़की को भी नहीं पता। लड़के को खूब पता था कि कैसे उसे इन सबसे बाहर लाना है। बाहर खूब भीड़ थी। दोनों भीड़ में धक्के खाते हुए चल रहे थे।

अचानक लड़की के कानों के पास आकर वह दुहराने लगा...आई लव यू, आई लव यू...। वो लगातार फुसफुसाता रहा। शब्दों में जैसे आत्मा उतार दी हो। शब्द लड़की के कान से उतरकर उसके जिस्म में फैलने लगे। वह खो-सी गई। बस उसे सुनते हुए। जब लड़के के होंठ बंद हुए, तो उसने कहा, 'तुम जब यूँ बोलते हो, तो मैं ध्यान में चली जाती हूँ। तन से लेकर आत्मा का हर बंद खुलता है। मुझे लगता है मैं मरती रहूँ और तुम इस तरह मेरे कान में आकर फुसफुसाओगे, तो यमराज के पाश खोलकर वापस आ जाऊँगी।'

जो कोहरा था, छँट चुका था। अब दोनों हँस रहे थे। नीले आसमान तले, प्रेम में सम्मोहन होता है।

द्वारा आदर्श फर्मा, रमा नर्सिंग होम
मेन रोड, राँची 834001
(झारखंड)

सुधीर मौर्य 'सुधीर'

ऑनलाइन बॉयफ्रेंड

शानू के लेपटाप की स्क्रीन पर चेट बाक्स में लिखकर आता है, 'जानू वेट, 15 मिनेट में आता हूँ, जरा लंच कर लूँ।'

शानू भी तेजी से टाइप करती है–'ओ॰के॰'

आज संडे है सो शानू घर पर है, वो पढ़ाई के लिए अपने मामा के घर लखनऊ आई है।

शानू के पास 15 मिनेट है; क्योंकि उसका ऑनलाइन बॉयफ्रेंड लंच करने गया है। वो भी फ्रेश होने के लिए बाथरूम जाती है। उसके मामा का लड़का राहुल लंच कर रहा है, उससे दो या तीन साल छोटा यही कोई 17-18 का।

शानू ने राहुल से कोई बुक माँगी है।

राहुल बोला है–दीदी रूम में टेबल पर है, ले लीजिए।

शानू राहुल के कमरे में जाकर टेबल पर बुक खोजने लगी। राहुल का लेपटॉप चालू है शायद टर्न ऑफ करना भूल गया है। शानू ऐसे ही देखती है–

फेसबुक पर अफरोज़ नाम की आई डी ओपन है। अभी-अभी चेट्बॉक्स में मेसेज पोस्ट है–जानू वेट, 15 मिनेट में आता हूँ। जरा लंच कर लूँ।

उसके नीचे रिप्लाई है–शिवानी नाम की आईडी से ओ॰के॰।

शानू को चक्कर-सा आ गया। राहुल के कमरे से तेजी से निकली। पीछे से राहुल की आवाज आई–'दीदी! बुक मिली क्या?'

'...' शानू ने कोई जवाब नहीं दिया।

शानू अपने लेपटॉप पर उलझी है और तेजी से अपनी फेक आई डी शिवानी को डिलीट कर रही है।

गंज जलालाबाद
उन्नाव 209869 **(उ॰प्र॰)**

रीता गुप्ता

मुखौटे

'तुम्हारी तस्वीर बहुत प्यारी है, ख़ास कर वो छोटी लाल ड्रेस वाली। क्या तुम्हारे घरवाले तुम्हें ऐसे कपड़े पहनने से मना नहीं करते?' निशा ने यामिनी से पूछा।

'धन्यवाद, दरअसल, मैं अकेली हूँ, मेरे घर में कोई नहीं है। मैं यहाँ एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सेक्रेटरी हूँ। वैसे तुम भी कम प्यारी नहीं हो। उस पार्टीवाले पिंक में तो गज़ब ही ढा रही हो। आज अपनी एक अकेली पिंक लगाओ ना!' यामिनी ने इसरार किया।

हाय-हेल्लो से शुरू हुई निशा और यामिनी की दोस्ती दिनों-दिन गहराने लगी थी। दोनों एक-दूसरे से अपनी दिल की बातें शेयर करतीं, सुख-दुख साझा करतीं। उन्हीं दिनों बातों-बातों में मालूम हुआ कि निशा के पापा का देहांत हो गया है और वह बिलकुल अकेली हो गई है। उसे यामिनी की कंधे की बेहद जरूरत थी, जहाँ वह सर रख अपना दु:ख हल्का करती। यामिनी भी अपनी सखी से मिलने को बेचैन थी। आभासी दुनिया से निकलकर असलियत का जामा पहनाने को दोनों दोस्त बेचैन हो उठीं।

एक पार्क में, एक खास पेड़ के नीचे मिलने की जगह और समय निश्चित किए गए। चित्र से तो दोनों ही एक-दूसरे को पहचानती ही थीं। नियत समय पर दोनों पूर्व निर्धारित स्थल पर गईं। पर न निशा को यामिनी मिली और न यामिनी को निशा। अलबत्ता दो लड़के बड़ी देर तक उस पेड़ के आस-पास मँडराते रहे और यहाँ-वहाँ बिखरे कुछ मुखौटों के राज बेनकाब होते रहे।

द्वारा श्री बी॰के॰ गुप्ता
फ्लैट नं॰ 5, **मंजूषा बिल्डिंग**
नियर इंडियन स्कूल, एस॰ई॰सी॰एल॰ रोड
छोटे अतरमुडा, रायगढ़ 496001 **(छत्तीसगढ़)**

कृष्णकुमार यादव

योग्यता

सत्ता बदलते ही उनकी चाँदी हो गई। मुख्यमंत्री जी की जाति का होने के चलते उन्हें उस आयोग के अध्यक्ष की कुर्सी मिल गई, जो प्रदेश में भर्तियों व चयन का काम करता। अचानक वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन गए थे। उनके पास सिफारिशों की भरमार होती गई, पर वह योग्यता मात्र को महत्त्व देते।

अचानक मुख्यमंत्री सचिवालय से अध्यक्ष जी को अभ्यर्थियों की एक सूची मिली। साथ ही यह निर्देश भी कि इन सभी को फाइनल मेरिट में चयनित करना है। अध्यक्ष महोदय ने लिस्ट देखी तो कोई भी उस पद योग्य नहीं दिखा। स्वभावानुसार उन्होंने उस सूची को दरकिनार कर दिया।

बात पता चली, तो मुख्यमंत्री जी ने उन्हें तलब किया– 'अध्यक्ष जी! मेरे द्वारा भिजवाई गई सूची का क्या हुआ? सुना है आपने सभी को दरकिनार कर दिया।'

'जी! ऐसा नहीं है।'

'फिर उनका चयन क्यों नहीं हुआ?'

'जी! दरअसल उनसे अच्छी योग्यता वाले तमाम अभ्यर्थियों थे और परीक्षा में भी उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया है।'

'योग्यता! तुम्हारी योग्यता क्या है? सिर्फ यही न कि तुम मेरी जाति के हो। वरना अध्यक्ष पद के लिए एक-से-एक योग्य लोग लार टपकाए बैठे हैं। तुम्हें इस कुर्सी पर इसलिए बिठाया था कि अपनी जाति के लोगों का भला करोगे न कि मुझे योग्यता का पैमाना समझाओगे।'

'अभी जाइए और तुरंत उस सूची में शामिल लोगों के चयन की घोषणा कर मुझे बताइए अन्यथा अध्यक्ष पद और तुम्हारी योग्यता भी खतरे में है।'

मुख्यमंत्री कार्यालय से बाहर निकलते अध्यक्ष जी अब अपनी ही योग्यता और ईमानदारी को लेकर असमंजस में थे।

निदेशक डाक सेवाएँ
राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र, जोधपुर 342001
मो॰ 8004928599

सुधीर द्विवेदी

चूहे

ओफ! कितने चूहे हैं उसके इर्द-गिर्द? कोई इधर कुछ कुतर रहा है, तो कोई उधर। कोई नीचे से भागता हुआ अलमारी के ऊपर जा चढ़ा है। लो अपने नुकीले दाँतों से एक चूहा उसकी बचपन की फोटो ही कुतरने लगा है।

'हश...हश...!' की आवाज करते हुए उसने चूहों को भगाने के लिए ढेरों जतन किए, पर सब बेकार। तब-तक एक अन्य चूहे ने उसके घर की दीवार में एक बड़ा सुराख कर दिया है।

चारों ओर से कुट-कुट की आवाज आ रही है। एक मरियल-सा चूहा उसके हाथ को छूता हुआ निकल गया। लिजलिजे स्पर्श से वह घृणा से भर उठा। उसने झुँझलाते हुए हाथ झटक दिया। वह उठा। चारों ओर से उसे कुट-कुट की तेज आवाज सुनाई दे रही है।

वह अचकचाकर जोर से चिल्ला पड़ा, 'सब बर्बाद कर देंगे...।'

'क्या हुआ...?' पास बैठे सहकर्मी ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए पूछा।

'कुछ नहीं...शायद बुरा सपना था।' पसीने से लथ-पथ उसने झेंपते हुए उत्तर दिया। थकान से उसकी आँख लग गई थी। थोड़ी देर वह कुर्सी पर ही बैठा रहा। लेकिन कुट-कुट की मद्धिम ध्वनि उसे अब भी सुनाई दे रही थी। घबराकर वह वाशरूम में जा घुसा।

चेहरे पर पानीं के छींटे मारे। चेहरा पोंछते हुए उसने शीशे में अपना चेहरा देखा। उसे लगा, उसकी ठुड्डी सिकुड़ रही है। उसके क्लीन-शेव चेहरे पर चूहों की लंबी-लंबी नुकीली मूँछें उग आई हैं। उसकी घबराहट और बढ़ गई। पस्त कदमों से वापस वह अपनी कुर्सी पर आ बैठा। कुट-कुट की कर्कश ध्वनि अब भी उसके कानों में गूँज रही थी।

परिचित ठेकेदारों के टेंडर स्वीकृत करने की सुविधा-राशि उसे मिल चुकी है, पर कुट-कुट की कर्कश ध्वनि से ध्यान बँटाने के लिए वह उन फाइलों को दोबारा उलटने-पलटने लगा।

धीरे-धीरे फाइलों के कई पन्नों में उसकी कलम की लाल स्याही ने अपने निशान छोड़ दिए। टेंडर, अब अस्वीकृत हो गए थे।

उसके माथे की टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें थककर सीधी हो गई थीं। उसने शांत-भाव से दूसरे टेंडर की फाइल खोल ली। कुट-कुट की ध्वनि अब बिलकुल भी नहीं सुनाई दे रही थी।

128/809 **वाई ब्लॉक**
किदवई नगर कानपुर 208011

सुबोध श्रीवास्तव

परंपरा

त्रिपाठीजी के घर में कोहराम मचा हुआ था। हर कोई गुस्से से उबल रहा था। घर के सभी सदस्य बैठक में गहन चिंता की मुद्रा में बैठे थे। बीच-बीच में सभी एक-दूसरे का मुँह ताक लेते थे। बड़ी लड़की द्वारा अपने सहपाठी के साथ प्रेमविवाह करने का फैसला लेने की घोषणा-भर से मानो भूचाल आ गया था।

आक्रोश में त्रिपाठीजी बार-बार उबल रहे थे, 'चाहे मेरी जान चली जाए, यह शादी नहीं होने दूँगा। इस घर की भी मर्यादाएँ हैं, परंपराएँ हैं। आखिर समाज को क्या मुँह दिखाऊँगा?'

बड़की की माँ को भी कोई कम गुस्सा नहीं आ रहा था। घर के बाकी सदस्यों का भी यही हाल था। माँ ने तो बड़की को उसकी इस करतूत पर ठोक-पीट भी दिया था। स्थिति विस्फोटक देख चारों लड़कियाँ दूसरे कमरे में चली गईं। इस डर से कि जाने क्या हो अब!

काफी देर की चुप्पी के बाद पंडिताइन ने हिम्मत बटोरकर सन्नाटा तोड़ा और गंभीर स्वर में त्रिपाठीजी को समझाया-'देखो जी, लड़की सयानी है। ब्याह की उमर भी है। चार-चार बैठी हैं घर में, पैसा पास-पल्ले है नहीं। कहाँ से लाओगे चारों के ब्याह के लिए इतना पैसा। यूँ ही कुँवारी बैठाए रखोगे क्या? बड़की कहती थी कि लड़का ऊँचे खानदान का है। कई-कई फैक्टरियाँ हैं उसके पिता की और, उसने खुद ही ब्याह का प्रस्ताव रखा है बिटिया के सामने। इसलिए दान-दहेज का झंझट भी न होगा।' वह एक ही साँस में सारी बात कह गई। उनके स्वर में विवशता साफ झलक रही थी।

'तो क्या मनमानी होने दें? एक को देख दूसरी बिगड़ेगी।' त्रिपाठीजी भड़क गए-'जैसी हैसियत है, उसके हिसाब से सबके हाथ पीले करूँगा...।'

'मनमानी काहे की पंडितजी? जरा ठंडे दिमाग से सोचो। बिटिया सयानी है। यही क्या कम है कि उसने हम लोगों को अपना मन पहले से बता दिया। वरना, ब्याह करके लड़के के संग कहीं चली जाती, तो हम कहीं के न रहते।' कहते-कहते आँखें भर आईं पंडिताइन की।

'तुम शायद ठीक कहती हो बड़की की माँ। मैं सोचता हूँ कि जब बात इतनी बढ़ गई है, तो जरा सोच-विचार के बाद लड़के के घरवालों से बात कर लेंगे चलकर। घर-बार और रिश्ता ठीक है, तो हर्ज ही क्या है।' रुँधे गले से त्रिपाठीजी ने कहा; और तनाव से घिरे घर में एक बार फिर से खुशनुमा माहौल हो गया।

माडर्न विला, 10/518 **खलासी लाइंस**
कानपुर (उ०प्र०) 208001

शोभना दरबारी

जबान का रस

आषाढ़ की क्रुद्ध वृष्टि अपने पूरे वेग पर थी। मानो पूरी सृष्टि को ही निगल जाना चाहती हो। सामने चारों ओर बिखरी हिमालय की चोटियाँ दिन में भी घने अँधेरे में डूब गई थीं।

आँधी में झूमते देवदार के वृक्ष, अपने तूफानी मस्तानी अंदाज में बहते पवन देव, घटाटोप अंधकार, 'उफ्फ!' आज क्या कोई प्रलय आने को थी।

ऐसी तूफानी बारिश में भी कोई घर से निकलता है क्या? पर साईंचरण के पास दूसरा कोई उपाय नहीं था। आज काम पर पहुँचने में पहले ही देर हो गई थी। उस पर बारिश के कारण तेज चलना भी कठिन हो रहा था। सामने की पगडंडी पर जैसे थोड़ी दूर से आगे कुछ भी नहीं था।

'क्या करे! आज तो काम पर पहुँचना नामुमकिन-सा ही लगता है। उस पर जोरों की भूख भी लग आई है।' साईचरण ने जैसे अपने आपसे कहा। बारिश थोड़ी देर के लिए रुक गई थी। शायद प्रकृति को उस पर दया आ गई थी।

तभी सामने एक झोंपड़ी दिखाई दी। कदम अचानक से तेज हो गए। खटखटाने की जरूरत ही नहीं थी। बिना द्वार की उस झोंपड़ी पर एक चिथड़ा-सा अधखुला पर्दा जैसा था। आगंतुक को देख एक बुढ़िया बाहर निकली।

थकान व भूख से साईंचरण का बुरा हाल था। 'अम्मा रोटी मिलेगी?' साईंचरण ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'मेरे पास आटा है। बस तुम मेरे लिए रोटी बना दो।'

बिना कुछ कहे बुढ़िया ने उसके हाथ से आटे की गीली थैली ले ली और एक टूटी-फूटी परात में आता गूँथने लगी। गरीबी को इतना नजदीक से साईंचरण ने पहले कभी नहीं देखा था। 'अगर मेरे पास आटा नहीं होता, तो क्या तब भी मुझे रोटी मिल पाती?' यही सोच रहा था साईंचरण। 'अम्मा अकेली रहती हो यहाँ? डर नहीं लगता?'

'नहीं बेटा।' बुढ़िया का स्वर ममता से भरा था। 'मेरा बेटा- बहू और पोता रहते हैं यहाँ। बच्चा बीमार है, उसी को लेकर पास के गाँव में वैद्यजी को दिखाने गए हैं दोनों। बड़े भले हैं वैद्यजी बेटा। मुफ़्त में इलाज करते हैं, वरना हम गरीबों के पास तो देने के लिए कुछ भी नहीं। बरसात के कारण कहीं रुक गए होंगे।' बुढ़िया ने खुले दरवाजे की ओर देखते हुए कहा।

'सोचो अम्मा अगर वे लोग कभी लौटें ही नहीं तो!'

इतना सुनते ही बुढ़िया का गुस्सा सातवें आसमान पर था– 'इस हालत में भी बुरा सोचने और बुरा बोलने से बाज नहीं आया। निकल अब्भी।' गुँथा आटा साईंचरण के मुँह पर फेंकते हुए बोली।

हल्की-हल्की बूँदाबाँदी फिर चालू हो रही थी। बर्फीली हवा साईंचरण की हड्डियों को रेत रही थी।

'भाईजी, आपकी थैली से कुछ टपक रहा है?' पास से गुजरते एक राहगीर ने उसे चेताया।

साईंचरण की नज़रें एकटक पन्नी के अधगुँथे आटे में टपक रहे पानी पर टिकी थीं। एक गहरी साँस भरते हुए उसने कहा, 'कुछ नहीं है भाई, थैली में से जबान का रस टपक रहा है।

ए 1301, **पार्क व्यू सिटी**-2, **सोहना रोड, गुड़गाँव**
मो॰ 8130741112

जानकी बिष्ट वाही

छू लिया

सुहासिनी ने दूर से सरसतिया को देखते ही मुँह में कपड़ा लपेटा। उसे लगता है, सरसतिया जब भी कोई भी सड़क से गुजरता है तो जानबूझ जोर-जोर से झाड़ू मारकर धूल उड़ाती है।

'पर इन लोगों के मुँह कौन लगे, कुछ कहा नहीं कि सात पुश्तें तार देंगे।'

बड़बड़ाती हुई सुहासिनी ने कदम तेज किए। रोज हर सुबह स्कूल जाते समय दोनों की भेंट होती है। एक के मुँह पर जातिगत दर्प और खीझ झलकती तो दूसरे के चेहरे से गुस्सा और नफरत। गनीमत थी दोनों अपने-अपने म्यान में सिमटी रहतीं। हाँ कभी-कभी सरसतिया की बड़बड़ाहट उस तक जरूर पहुँचती।

'हमसे परे-परे जाएँगे? हम तो छूत की बीमारी हैं ना?'

जल्दी-जल्दी सरसतिया से दूर जाने की हड़बड़ी में सुहासिनी का पाँव जो मुड़ा तो दर्द से दोहरी हो वहीं गिर गई। ये देख सरसतिया ने हाथ का झाड़ू फेंक सुहासिनी को थाम लिया, और खींच-तान के पाँव की नस ठीक कर सहारा दे खड़ा कर दिया।

फिर मुस्कुराकर बोली–'हमने छू लिया तुमको।'

'सच कहा, तुमने तो हमारे मन को भी छू लिया।' सुहासिनी ने सरसतिया के धूल भरे हाथों को प्यार से पकड़ लिया। लगा एक अभेद्य दुर्ग ढह गया।

द्वारा श्री सुभाषचंद्र वाही
बी-150, **प्रथम तल**
सेक्टर-15, **नोएडा** 201301

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

एजेण्डा

'आप इस देश की नींव हैं। नींव मजबूत होगी तो भवन मजबूत होगा। भवन की कई-कई मंजिलें मजबूती से टिकी रहेंगी।' पहले अफसर ने रूमाल फेरकर जबड़ों से निकला थूक पोंछा। सबने अपने कंधों की तरफ गर्व से देखा, कई-कई मंजिलों के बोझ से दबे कंधों की तरफ।

अब दूसरा अफसर खड़ा हुआ, 'आप हमारे समाज की रीढ़ हैं। रीढ़ मजबूत नहीं होगी, तो समाज धराशायी हो जाएगा।' सबने तुरंत अपनी अपनी रीढ़ टटोली। रीढ़ नदारद थी। गर्व से उनके चेहरे तन गए। समाज की सेवा करते-करते उनकी रीढ़ की हड्डी ही घिस गई। स्टेज पर बैठे अफसरों की तरफ ध्यान गया। सब झुककर बैठे हुए थे। लगता है—उनकी भी रीढ़ घिस गई है।

'उपस्थित बुद्धिजीवी वर्ग' तीसरे बड़े अफसर ने कुछ सोचते हुए कहा, 'हाँ, तो मैं क्या कह रहा था', उसने कनपटी पर हाथ फेरा, 'आप समाज के पीड़ित वर्ग पर विशेष ध्यान दीजिए।'

पंडाल में सन्नाटा छा गया। बुद्धिजीवी वर्ग! यह कौनसा वर्ग है? सब सोच में पड़ गए। दिमाग पर जोर दिया। कुछ याद नहीं आया। सिर हवा-भरे गुब्बारे जैसा लगा। इसमें तो कुछ भी नहीं बचा। उन्होंने गर्व से एक-दूसरे की ओर देखा। समाज-हित में योजनाएँ बनाते-बनाते सारी बुद्धि खर्च हो भी गई तो क्या!

अफसर बारी-बारी से कुछ-न-कुछ बोलते जा रहे थे। लगता था, सब लोग बड़े ध्यान से सुन रहे हैं। घंटों बैठे रहने पर भी न किसी को प्यास लगी, न चाय की जरूरत महसूस हुई, न किसी प्रकार की हाजत।

बैठक खत्म हो गई। सब एक-दूसरे से पूछ रहे थे, 'आज की बैठक का एजेंडा क्या था?'

भोजन का समय हो गया। साहब ने पंडाल की तरफ उँगली से चारों दिशाओं में इशारा किया। चार लोग उठकर पास आ गए। फिर हाथ से इशारा किया, पाँचवाँ दौड़ता हुआ पास में आया, 'सर...?'

'इस भीड़ को भोजन के लिए हाल में हाँककर लेते जाओ, इधर कोई न आ पाए।' साहब ने तनकर खड़ा होने की व्यर्थ कोशिश की।

पाँचवाँ भीड़ को लेकर हाल की तरफ चला गया।

'तुम लोग हमारे साथ चलो।' साहब ने आदेश दिया।

चारों लोग अफसरों के पीछे-पीछे सुसज्जित हाल में चले गए। चारों का ध्यान सेंटरवाले सोफे की तरफ गया, वहाँ चीफ साहब बैठे सॉफ्ट ड्रिंक ले रहे थे। साहब ने चीफ साहब से उनका परिचय कराया, 'ये बहुत काम के आदमी हैं। बाढ़, सूखा, भूकंप आदि जब भी कोई त्रासदी आती है, ये बहुत काम आते हैं।'

चीफ साहब के चेहरे पर कोई भाव नहीं आया।

'चलिए भोजन कर लीजिए।' उन्होंने चीफ साहब से कहा। हर प्रकार के नॉनवेज का इंतजाम है।'

'नानसेंस।' चीफ साहब गुर्राए, 'मैं परहेजी खाना लेता हूँ। किसी ने बताया नहीं आपको?'

'सॉरी सर!' छोटा अफसर मिनमिनाया, 'उसका भी इंतजाम है, सर! आप सामने वाले रूम में चलिए।'

वहाँ पहुँचकर चारों को साहब ने इशारे से बुलाया। धीरे से बोले, 'निकालो।'

धीरे से चारों ने बड़े नोटों की एक-एक गड्डी साहब को दे दी। साहब ने एक गड्डी अपनी जेब में रख ली तथा बाकी तीनों चीफ साहब की जेबों में धकेल दीं।

चीफ साहब इस सबसे निर्विकार सॉफ्ट ड्रिंक की चुश्कियाँ लेते रहे, फिर बोले, 'जाने से पहले इन्हें अगली बैठक के एजेंडे के बारे में बता दीजिएगा।'

जी-902, **जे एम अरोमा**
सेक्टर-75, **नोएडा** 201301 **(उ०प्र०)**
मो० 7827467931
rdkamboj49@gmail.com

समकालीन महिला ग़ज़लकार
हरेराम 'समीप'

मूल्य
तीन सौ रुपए

हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

माला वर्मा

गहना

माँ का गहना उनकी बेटियों को भी मिलना चाहिए। शादी के बाद उनका हक नैहर से खत्म तो नहीं हो जाता! माँ को गुजरे वर्ष भर ही हुए थे कि बात उनके गहनों तक पहुँच गई। अभी तक तो सब जगह शांति थी, पर अब किसी-न-किसी को मुँह खोलना ही था-माँ के गहने कितने थे! क्या-क्या था, अपने हिस्से क्या आएगा आदि-आदि कई तरह की अटकलबाजियाँ चल रही थीं। बहनों में छोटकी कुसुम ही ज्यादा परेशान थी। जहाँ चार-चार भौजाइयाँ पहले से मौजूद हों, वहाँ तो ननदों को गहने मिलने से रहे, पर पूछताछ तो करनी ही होगी। कुछ भी मिले। मिले तो सही, फिर उसकी कीमत आँकी जाएगी। अभी तो वैसे ही सोने के भाव आसमान छू रहे हैं, फायदा तो होगा ही। घर-परिवार में शादी-ब्याह के मौके पर सोना-चाँदी खरीदना ही पड़ता है, इसी में नैहर से कुछ मिल जाए तो नुकसान क्या है?

अगली बार किसी भौजाई से बात होगी तो घुमा-फिराकर पूछना ही होगा, माँ के जेवर कहाँ रखे हुए हैं? घर में हैं या लॉकर में? आप सबने क्या सोचा, आदि कई-कई प्रश्न दिमाग में घूम रहे थे। देखा जाए, उधर से क्या जवाब मिलता है। इसी बीच में एक पड़ोसन ने टोक दिया, 'माँ के गहना-गुरिया में से कुछ हिस्सा मिला क्या?' अब कुसुम को कुछ मिले या ना मिले, उससे पड़ोसिन को क्या लाभ!

एकाध महीना निकल गया, न कुसुम ने फोन पर कुछ पूछा, न उधर से किसी भौजाई ने कुछ कहने की जरूरत समझी। कई-कई बातें होतीं, पर उसमें 'गहनों' की चर्चा नहीं हुई। बाकी बहनों को कोई मतलब नहीं, वैसे इतना तो तय था कि बँटवारा होगा तो उन्हें उनका हिस्सा मिल ही जाएगा, लेकिन इसके लिए बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधेगा? तो छोटकी कुसुम थी ही...और एक दिन कुसुम ने साहस किया। अब तो पूछना ही होगा, बेकार की माथापच्ची वो अकेले क्यों सहे! दोपहर का वक्त था, कुसुम इत्मीनान से फोन के करीब पहुँची ही थी कि फोन खुद बज उठा। जाने किसका फोन। पर उधर से बड़की भौजाई थी, आश्चर्य! इस टेलीपैथी को क्या कहा जाए।

कुशल-मंगल के बाद बात आगे बढ़ती, कुसुम दिल कड़ा करके 'कुछ' पूछती, तब तक उधर से बड़की भौजाई बोल उठी, 'छोटकी बबुनी, एक जरूरी बात करनी थी। माँजी का गहना लॉकर में पड़ा था। आज निकालकर घर लाए। जो भी गहना है, उसका लिस्ट भी रखा है। आप सब जब भी यहाँ जुटेंगी, जो पसंद आए गहना ले लेंगी। संकोच जरा भी नहीं करना। आखिर उनके गहने पर उनकी बेटियों का भी हक है। गहना घर में रखा है, चिंता भी हो रही है। किसी बहाने आप सब आ जातीं, तो अच्छा था। बड़की बबुनी को पहले फोन मिलाया था, पर वो घर में नहीं थीं। आसानी से आपका नंबर लग गया तो सोचे, पहले आपसे से ही कह दें।'

इस अप्रत्याशित स्नेह-वार से कुसुम हतप्रभ थी। उसके दिल-दिमाग ने तो कुछ दूसरा ही 'बातचीत' का खाका खींच रखा था...पर यह असमंजस थोड़ी देर ही बना रहा। उसके बाद तो सब-कुछ काँच की तरह साफ था।

'अरे नहीं...बड़की भाभी, माँ के गहने हमें नहीं चाहिए। हमारे खुद के गहने इतने हैं कि उसे ही पहनना नहीं होता। सबके सब लॉकर में पड़े हैं। आप तो बस्स माँ के गहने उनके सभी पोता-पोती में बाँट दें। उनकी शादी के वक्त दादी की तरफ से आशीर्वाद भी हो जाएगा। गहने किसी के पास रहें, उससे क्या फर्क पड़ता है। भाभी, आपने इतना ही पूछा, हमारे लिए वही बहुत है...'

'नहीं-नहीं बबुनी, ऐसा कैसे होगा! कुछ निशानी सबको लेना ही होगा। आप सब आइए तो सही। मैं सबको खबर कर रही हूँ।'

'नहीं भाभी! मैं तो न लूँगी। मेरी निशानी मैं आपको सौंप रही हूँ। ननद-भौजाई का ये प्रेम बना रहे और अब तो आप ही हमारी माँ समान हैं...प्लीज कुछ न कहें।'

कुसुम की आँखें डबडबा आईं। इधर बबुनी ने चुप्पी साधी तो भौजाई भी रो रही थी, क्या कुसुम ने यही चाहा था! यह हृदय-परिवर्तन हुआ कैसे?

हुकुमचंद जूट मिल
पो॰ हाजीनगर, जि॰ चौबीस परगना
पं॰ बंगाल 743135

आदमी और कुत्ते की नाक
व्यंग्य-संग्रह
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मूल्य
150 रुपए
हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

हिन्दी साहित्य निकेतन

16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०)
फ़ोन : 01342-263232, 07838090732

ई-मेल :
giriraj3100@gmail.com
hindisahityaniketan@gmail.com
वेबसाइट :
www.hindisahityaniketan.com

महत्त्वपूर्ण कोश एवं संदर्भ ग्रंथ

निश्तर ख़ानक़ाही एवं डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
ग़ज़ल और उसका व्याकरण 150.00

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल एवं डॉ० मीना अग्रवाल
बृहत् हिंदी साहित्यकार संदर्भ कोश 1500.00
हिंदी शोध के नए प्रतिमान 800.00
हिंदी शोध : नई दृष्टि 800.00
हिंदी तुलनात्मक शोधसंदर्भ 995.00
शोधसंदर्भ-भाग-1 500.00
शोधसंदर्भ-भाग-2 550.00
शोधसंदर्भ-भाग-3 525.00
शोधसंदर्भ-भाग-4 595.00
शोधसंदर्भ-भाग-5 895.00
शोधसंदर्भ-भाग-6 1500.00
हिंदी तुकांत कोश 300.00

रचनावली

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-1 (कविता खंड एक) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-2 (कविता खंड दो) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-3 (कविता खंड तीन) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-4 (कविता खंड चार) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-5 (निबंध खंड) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-6 (उपन्यास खंड-1) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-7 (उपन्यास खंड-2) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-8 (उपन्यास खंड-3) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-9 (उप०-नाटक खंड) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-10 (कहानी खंड) 1000.00
राजेन्द्र मिश्र रचनावली-11 (निबंध-डायरी खंड) 1000.00

डॉ० आदित्य प्रचंडिया
डॉ० महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (एक) 700.00
डॉ० महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (दो) 700.00
डॉ० महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (तीन) 700.00
डॉ० महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (चार) 700.00
डॉ० महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (पाँच) 700.00
डॉ० महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (छह) 700.00
डॉ० महेंद्रसागर प्रचंडिया समग्र (सात) 700.00

डॉ० कमलकिशोर गोयनका/डॉ मीना अग्रवाल
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (एक) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (दो) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (तीन) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (चार) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (पाँच) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (छह) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (सात) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (आठ) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (नौ) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (दस) 995.00
गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली (ग्यारह) 500.00

समीक्षा एवं समालोचना

डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
सवाल साहित्य के 200.00

डॉ० चंद्रकात मिसाल
हिंदी सिनेमा और दांपत्य संबंध 500.00
सिनेमा और साहित्य का अंत:संबंध 200.00

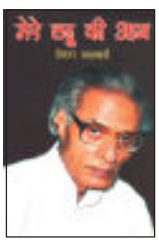

पुस्तकें ही पुस्तकें

शोध दिशा

नवलकिशोर शर्मा
सिनेमा, साहित्य और संस्कृति 150.00
धर्मेन्द्र उपाध्याय
आमिर खान : हिंदी सिनेमा के सेवक 300.00
डॉ॰ अंजू भटनागर
डॉ॰ कुँअर बेचैन के साहित्य में प्रतीक विधान 500.00
डॉ॰ योगेश गोकुल पाटिल
अमरकांत का कथासाहित्य 400.00
डॉ॰ अनुभूति
नारी-समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन 450.00
डॉ॰ सुषमा सिंह
राजस्थानी चित्रशैली में आखेट दृश्य 250.00
भोपाल के संग्रहालयों की चित्रकला 250.00
डॉ॰ ज्योति सिंह
मृदुला गर्ग कृत अनित्य : इतिहास और आख्यान का संबंध 150.00
मृदुला गर्ग और नारी-अस्मिता का प्रश्न 300.00
डॉ॰ मिथिलेश माहेश्वरी
काका हाथरसी : एक समीक्षा-यात्रा 300.00
डॉ॰ मनोज कुमार
सांप्रदायिकता और हिंदी कथासाहित्य 250.00
डॉ॰ दीपा के॰
अपनी कविताओं में अशोक चक्रधर 250.00
डॉ॰ मीना अग्रवाल
आधुनिक हिंदी गीतिकाव्य में संगीत (पुरस्कृत) 450.00
डॉ॰ हरीशकुमार सिंह
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल : व्यक्ति और साहित्य 350.00
डॉ॰ अनिलकुमार शर्मा
साठोत्तरी हिंदी-ग़ज़ल : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान 350.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का व्यंग्य-साहित्य : कथ्य एवं भाषा/डॉ॰ वी॰ जयलक्ष्मी 450.00
डॉ॰ पूनम अग्रवाल
हिंदी ग़ज़ल और डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 350.00
लोकरंगमंच के आयाम/डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा 200.00
लोकनाट्य साँग : कल और आज/डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा 700.00
हरियाणा के लोकगायक/डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा 400.00
हरियाणा के लोककवि/डॉ॰ पूर्णचंद शर्मा 300.00
देवबंद की स्वांग-परंपरा/डॉ॰ सुरेंद्र शर्मा 200.00
डॉ॰ शंकर क्षेम
एक साक्षात्कार : पं॰ अमृतलाल नागर के साथ 150.00
ग़ज़ल : सौंदर्य और यथार्थ/ अनिरुद्ध सिन्हा 150.00
डॉ॰ ज्योति व्यास
समय के हस्ताक्षर (हिंदी के आधुनिक कवि) 150.00
डॉ॰ लालबहादुर रावल
कालिदास के साहित्य में भौगोलिक तत्त्व 300.00
डॉ॰ अशोककुमार
जनपद बिजनौर के आधुनिककालीन साहित्यकार 350.00
डॉ॰ ओमदत्त आर्य
बिजनौर क्षेत्र की ग्रामोद्योग-संबंधी शब्दावली का अध्ययन 500.00
डॉ॰ मिथिलेश दीक्षित
आस्थावाद एवं अन्य निबंध 300.00
साहित्य और संस्कृति 300.00
डॉ॰ आशा रावत
हास्य-निबंध : स्वतंत्रता के पश्चात् 350.00
डॉ॰ प्रेम जनमेजय
आज़ादी के बाद का हिंदी गद्य व्यंग्य 500.00
विनोदचंद्र पांडेय
हिंदी बालकाव्य के विविध पक्ष 300.00
डॉ॰ स्वाति शर्मा
हिंदी बालसाहित्य : डॉ॰ सुरेंद्र विक्रम का योगदान 450.00
डॉ॰ पी॰आर॰ वासुदेवन
भीष्म साहनी का कथासाहित्य : सांप्रदायिक सद्भाव 300.00
अविनाश वाचस्पति/रवींद्र प्रभात
हिंदी ब्लॉगिंग : अभिव्यक्ति की नई क्रांति 495.00
हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास/रवींद्र प्रभात 300.00
सूरदास का सौंदर्यचित्रण/डॉ॰ विजय इंदु 250.00
हरिऔध का सौंदर्यचित्रण/डॉ॰ विजय इंदु 500.00
डॉ॰ मीनल रश्मि
साठोत्तरी हिंदी रेखाचित्र : शैलीवैज्ञानिक अध्ययन 495.00
समकालीन हिंदी कविता सामाजिक चेतना के संदर्भ में
डॉ॰ शीला गहलोत 500.00

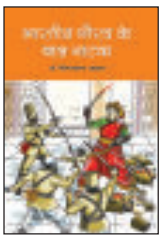

संत रविदास/डॉ॰ सुदेश कुमारी 300.00
हरिवंश राय बच्चन के काव्य में स्वच्छंदतावादी प्रवृत्तियाँ
डॉ॰ राजकुमार जमदग्नि 400.00
डॉ॰ आदित्य प्रचंडिया
साहित्य और संस्कृति का अंत:संबंध 400.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल, डॉ॰ मीना अग्रवाल
वादविवाद प्रतियोगिता : पक्ष और विपक्ष 200.00
फिजी में प्रवासी भारतीय/डॉ॰ शुचि गुप्ता 300.00
मुक्तिबोध का रचना-संसार/डॉ॰ शिवशंकर लधवे 200.00
डॉ॰ अशोक उपाध्याय
नाटककार पंडित राधेश्याम कथावाचक/ 200.00
डॉ॰ अनिता रानी
यशपाल के उपन्यासों में सामाजिक चेतना 400.00
सृजन और साहित्य/डॉ॰ राजेन्द्र मिश्र 400.00
समालोचना के फलक/डॉ॰ बागेश्री चक्रधर 300.00
शिक्षा की समस्याएँ और हिंदी कथासाहित्य/डॉ॰ शशिप्रभा 500.00
डॉ॰ शिवाजी एन॰ देवरे
ललित निबंध : परंपरा और चिंतन 300.00
ललित निबंधकार डॉ॰ श्यामसुंदर दूबे 300.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल की ग़ज़लदृष्टि 300.00
रुहेलखंड के परंपरागत लोकगीत/श्रीमती नीरजा द्विवेदी 200.00
हिंदी कहानी के नए प्रतिमान/डॉ॰ अभयकुमार खैरनार 500.00
जनसंख्या अवधारणा एवं लैंगिक संरचना/डॉ॰ विश्वनाथ 500.00
भारत में सांप्रदायिक सद्भाव/डॉ॰ गीता यादव 500.00
साठोत्तर व्यंग्य और श्रीलाल शुक्ल/डॉ॰ रमेश तिवारी 400.00
हिंदी ग़ज़ल और डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल/
डॉ॰ पूनम अग्रवाल 595.00
कुछ व्यंग्य की कुछ व्यंग्यकारों की/डॉ॰ हरीश नवल 300.00

हास्य-व्यंग्य

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएँ 150.00
मेरे इक्यावन व्यंग्य 300.00
चुनी हुई हास्य कविताएँ 250.00
बाबू झोलानाथ 60.00
राजनीति में गिरगिटवाद 100.00
आदमी और कुत्ते की नाक 150.00
आओ भ्रष्टाचार करें 200.00
दूध का धुला लोकतंत्र/गोपाल चतुर्वेदी 150.00
आधुनिक बैताल कथाएँ/गिरीश पंकज 200.00
भज्जी का जूता/महेशचंद्र द्विवेदी 150.00
क्लियर फंडा/महेशचंद्र द्विवेदी 120.00
प्रिय-अप्रिय प्रशासकीय प्रसंग/महेशचंद्र द्विवेदी 170.00
वीरप्पन की मूँछें/महेशचंद्र द्विवेदी 200.00
पं॰ सूर्यनारायण व्यास, सं॰ राजशेखर व्यास
वसीयतनामा 300.00
नो टेंशन/डॉ॰ सुरेश अवस्थी 170.00
काका की विशिष्ट रचनाएँ/काका हाथरसी 300.00
काका के व्यंग्य-बाण/काका हाथरसी 300.00
कक्के के छक्के/काका हाथरसी 200.00
लूटनीति मंथन करी/काका हाथरसी 200.00
खिलखिलाहट/काका हाथरसी 200.00
पैसे कहाँ से दें/डॉ॰ आशा रावत 200.00
चाहिए एक और भगतसिंह/डॉ॰ आशा रावत 100.00
नमस्कार प्रजातंत्र/महेश राजा 150.00
ए जी सुनिए/अशोक चक्रधर 100.00
इसलिए बौड़म जी इसलिए/अशोक चक्रधर 200.00
नमस्ते जी/डॉ॰ बलजीत सिंह 150.00
अब हँसने की बारी है/डॉ॰ बलजीत सिंह 200.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
1997 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00
1998 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 100.00
1999 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 120.00
2002 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 150.00
2003 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 150.00
2004 **की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ** 170.00
शिवशर्मा के चुने हुए व्यंग्य/डॉ॰ शिव शर्मा 250.00
बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास)/डॉ॰ शिव शर्मा 150.00
अपने-अपने भस्मासुर/डॉ॰ शिव शर्मा 150.00
प्रतिनिधि व्यंग्य/दामोदरदत्त दीक्षित 100.00
हास्य-व्यंग्य : मधुप पांडेय के संग/ मधुप पांडेय 200.00
धमकीबाज़ी के युग में/निश्तर ख़ानक़ाही 200.00
ला ख़र्चा निकाल/गजेंद्र तिवारी 200.00

पुस्तकें ही पुस्तकें

शोध दिशा

जलनेवाले जला करें/गजेंद्र तिवारी	200.00
कवयित्री सम्मेलन/ सुरेंद्रमोहन मिश्र	100.00
पेट में दाढ़ियाँ हैं/सूर्यकुमार पांडेय	100.00
ये है इंडिया/डॉ॰ हरीशकुमार सिंह	120.00
आँखों देखा हाल/डॉ॰ हरीशकुमार सिंह	150.00
सच का सामना/डॉ॰ हरीशकुमार सिंह	150.00
लिफ़्ट करा दे/डॉ॰ हरीशकुमार सिंह	200.00
देवेंद्र के कार्टून/देवेंद्र शर्मा	80.00
कार्टून कौतुक/देवेंद्र शर्मा	120.00
लिफ़ाफ़े का अर्थशास्त्र/डॉ॰ पिलकेंद्र अरोरा	120.00
अजगर करे न चाकरी/बाबूसिंह चौहान	150.00
हँसते-हँसते कट जाएँ रस्ते/ मधुप पांडेय	200.00
ज़िंदगी तेरे नाम डार्लिंग/ लालित्य ललित	200.00
नो कमेंट/ सुमित प्रताप सिंह	200.00

कहानी

एक सपना मेरा भी था/डॉ॰ आशा रावत	200.0
एक थी माया/विजयकुमार	200.00
सरहदों के पार/सुरेशचंद्र शुक्ल	200.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल	
जिज्ञासा और अन्य कहानियाँ	200.00
छोटे-छोटे सुख	200.00
कथा जारी है/बाबूसिंह चौहान	150.00
इक्कीस कहानियाँ/ सत्यराज	100.00
डॉ॰ मीना अग्रवाल	
अंदर धूप बाहर धूप (नारी-मन की कहानियाँ)	150.00
कुत्तेवाले पापा	150.00
डॉ॰ दिनेशचंद्र बलूनी	
उत्तराखंड की लोकगाथाएँ	200.00
एक बौना मानव/महेशचंद्र द्विवेदी	100.00
लव जिहाद/महेशचंद्र द्विवेदी	200.00
इमराना हाज़िर हो/महेशचंद्र द्विवेदी	150.00
हैं आस्माँ कई और भी/नीरजा द्विवेदी	200.00
कौन कितना निकट/रेणु राजवंशी गुप्ता	120.00
लघु कथाएँ/डॉ॰ हरिशरण वर्मा	150.00
कमरा नं॰ 103/डॉ॰ सुधा ओम ढींगरा	150.00
कहानियाँ अमरीका से/डॉ॰ इला प्रसाद	150.00
अंतराल/संगीता	200.00
डॉ॰ कमलकिशोर गोयनका (सं॰)	
प्रेमचंद की कालजयी कहानियाँ	150.00
सुकेश साहनी, रामेश्वर काम्बोज हिमांशु (सं॰)	
लघुकथाएँ जीवनमूल्यों की	150.00
पंद्रह सिंधी कहानियाँ/देवी नागरानी	200.00
दर्द की एक गाथा/देवी नागरानी	300.00
भाँत-भाँत की मानुसी/अंशु त्रिपाठी	300.00
लड़की हँस रही है/राजेन्द्र मिश्र	300.00

उपन्यास

इतिहास की आवाज़/डॉ॰ राजेन्द्र मिश्र	450.00
अनोखा उपहार/सुषमा अग्रवाल	200.00
आसरा/सुषमा अग्रवाल	100.00
तीन बीघा ज़मीन/सुषमा अग्रवाल	200.00
मन के जीते जीत/सुषमा अग्रवाल	200.00
कुल का चिराग/सुषमा अग्रवाल	200.00
नया सबेरा/सुषमा अग्रवाल	200.00
कालचक्र से परे/नीरजा द्विवेदी	200.00
भीगे पंख/महेशचंद्र द्विवेदी	200.00
मानिला की योगिनी/महेशचंद्र द्विवेदी	200.00
डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध	
और लहरें उफनती रहीं	200.00
बजरंगा (व्यंग्य-उपन्यास)/डॉ॰ शिव शर्मा	150.00
अराज-राज/डॉ॰ मोहन गुप्त	200.00
सुराज-राज/डॉ॰ मोहन गुप्त	350.00
एक गुमनाम फौजी की डायरी/डॉ॰ आशा रावत	150.00
एक चेहरे की कहानी/डॉ॰ आशा रावत	150.00
गुरुदक्षिणा (व्यंग्य-उपन्यास)	100.00
एक फ़रिश्ता ऐसा देखा/प्रेमसागर तिवारी	250.00
रोशनी का पहरा/डॉ॰ आरती लोकेश	300.00

एकांकी-नाटक

डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

मंचीय हास्य-व्यंग्य एकांकी	200.00
मंचीय सामाजिक एकांकी	200.00
बच्चों के हास्य नाटक	200.00

बच्चों के रोचक नाटक 200.00
बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक 200.00
बच्चों के अनुपम नाटक 200.00
बच्चों के उत्तम नाटक 200.00
भारतीय गौरव के बाल नाटक 200.00
प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित नाटक 300.00
ग्यारह नुक्कड़ नाटक 200.00
बच्चों के अनोखे नाटक/प्रकाश मनु 250.00
हास्य-विनोद के नाटक/प्रकाश मनु 250.00
संसार : एक नाट्यशाला/बाबूसिंह चौहान 150.00
ग्यारह एकांकी/डॉ॰ हरिशरण वर्मा 200.00
संस्कार एवं अन्य नाटक/डॉ॰ हरिशरण वर्मा 300.00
दमन/रामाश्रय दीक्षित 100.00
स्वप्न पुरुष/उर्मिला अग्रवाल 150.00
अफलातून की अकादमी/डॉ॰ शिव शर्मा 150.00
औरत की जंग/राजेंद्र मिश्र 200.00
प्रजापथ/राजेंद्र मिश्र 200.00

ललित निबंध एवं रेखाचित्र

कैसे-कैसे लोग मिले/निश्तर ख़ानक़ाही 125.00
यादों का मधुबन/कृष्ण राघव 150.00
समय के चाक पर/डॉ॰ लालबहादुर रावल 125.00
समय एक नाटक/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 200.00
दर्पण झूठ बोलता है/बाबूसिंह चौहान 60.00
मकड़जाल में आदमी/बाबूसिंह चौहान 80.00
उफनती नदियों के सामने/बाबूसिंह चौहान 100.00
अनुभव के पंख/चंद्रवीरसिंह गहलौत 250.00
मेरे साक्षात्कार/डॉ॰ बालशौरि रेड्डी 250.00
आधी हकीकत आधा फ़साना/डॉ॰ बलजीत सिंह 200.00
फूलों की महक/डॉ॰ ओमदत्त आर्य 200.00
डॉ॰ गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
संवाद : साहित्यकारों से 200.00
एक फ़रिश्ता ऐसा देखा/प्रेमसागर तिवारी 250.00

गीत-ग़ज़ल

निश्तर ख़ानक़ाही
निश्तर ख़ानक़ाही समग्र (प्रकाशनाधीन) 500.00
मोम की बैसाखियाँ (ग़ज़ल-संग्रह) 50.00
ग़ज़ल मैंने छेड़ी (ग़ज़ल-संग्रह) 80.00
ग़ज़लों के शहर में (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
मेरे लहू की आग (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
कोई आवाज़ देता है/डॉ॰ कुँअर बेचैन 150.00
दिन दिवंगत हुए/डॉ॰ कुँअर बेचैन 150.00
कुँअर बेचैन के नवगीत/डॉ॰ कुँअर बेचैन 200.00
कुँअर बेचैन के प्रेमगीत/डॉ॰ कुँअर बेचैन 150.00
पर्स पर तितली (हाइकु)/डॉ॰ कुँअर बेचैन 200.00
मातृभूमि के लिए/रमेश पोखरियाल 'निशंक' 200.00
संघर्ष जारी है/रमेश पोखरियाल 'निशंक' 170.00
जीवन-पथ में/रमेश पोखरियाल 'निशंक' 150.00
देश हम जलने न देंगे/रमेश पोखरियाल 'निशंक' 150.00
तुम भी मेरे साथ चलो/रमेश पोखरियाल 'निशंक' 150.00
कटे हाथों के हस्ताक्षर/डॉ॰ कमल मुसद्दी 150.00
झरनों का तराना है/लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' 200.00
असाबिया/राजेन्द्र मिश्र 200.00
समय के भूगोल में/राजेन्द्र मिश्र 200.00
आठवाँ राग/राजेन्द्र मिश्र 200.00
हवाएँ ख़ामोश हैं/राजेन्द्र मिश्र 200.00
सदियाँ गुजर रही हैं/राजेन्द्र मिश्र 300.00
शमा हर रंग में जलती है/रामेश्वरप्रसाद 150.00
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
अक्षर हूँ मैं (कविताएँ) 150.00
सन्नाटे में गूँज (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
भीतर शोर बहुत है (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
मौसम बदल गया कितना (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
रोशनी बनकर जिओ (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
शिकायत न करो तुम (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
आदमी है कहाँ (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
प्रतिनिधि ग़ज़लें (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
बूँद के अंदर समंदर (मुक्तक संग्रह) 200.00
मान भी जा छुटकी (कविताएँ)/गीतिका गोयल 150.00
रामगोपाल भारतीय
आदमी के हक़ में (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
यहाँ तक वहाँ से (कविताएँ)/रमेश कौशिक 200.00
हास्य नहीं व्यंग्य (कविताएँ)/रमेश कौशिक 150.00
गांधारी का सच (खंडकाव्य)/आर्यभूषण गर्ग 200.00

पुस्तकें ही पुस्तकें

शोध दिशा

डॉ॰ आकुल

राधेय (खंडकाव्य) 120.00
असित चंद्र : अवदात चंद्रिका (काव्य-नाटक) 120.00
जिंदगी गाती तो है/(ग़ज़ल-संग्रह) 120.00
आसमान मेरा भी है (ग़ज़लें)/किशनस्वरूप 100.00
बूँद-बूँद सागर मैं (ग़ज़लें)/किशनस्वरूप 100.00

कर्नल तिलकराज

आँचल-आँचल खुशबू (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
ज़ख़्म खिलने को हैं (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
अग्निसुता/राजेंद्र शर्मा 150.00
सीतायनी/डॉ॰ शंकर क्षेम 150.00
गंगापुत्र भीष्म : शर-शैया से/डॉ॰ शंकर क्षेम 200.00
हिरना लौट चलें (गीत-संग्रह)/शचींद्र भटनागर 150.00
तिराहे पर (ग़ज़ल-संग्रह)/ शचींद्र भटनागर 150.00
ढाई आखर प्रेम के (गीत-संग्रह)/ शचींद्र भटनागर 200.00
अखंडित अस्मिता (मुक्तक)/ शचींद्र भटनागर 200.00
कुछ भी सहज नहीं (नवगीत)/शचींद्र भटनागर 200.00
त्रिवर्णी (नवगीत)/शचींद्र भटनागर 200.00

मनोज अबोध

गुलमुहर की छाँव में (ग़ज़ल-संग्रह) 100.00
मेरे भीतर महक रहा है (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
तारा प्रकाश समग्र/तारा प्रकाश 500.00
उजियारा आशाओं का/तारा प्रकाश 150.00
बुलंदी इरादों की/तारा प्रकाश 150.00
चलने से मंज़िल मिलती है/तारा प्रकाश 200.00
इंद्रधनुष/तारा प्रकाश 200.00
संवेदनाओं के रंग/तारा प्रकाश 200.00
सुरों के ख़त/अश्विनीकुमार 'विष्णु' 100.00
सुनहरे मंत्र का जादू/अश्विनीकुमार 'विष्णु' 100.00
सुनते हुए ऋतुगीत/अश्विनीकुमार 'विष्णु' 150.00
सुबह की अंगूठी/अश्विनीकुमार 'विष्णु 150.00

डॉ॰ मीना अग्रवाल

सफ़र में साथ-साथ (मुक्तक-संग्रह) 150.00
जो सच कहे (हाइकु-संग्रह) 150.00
यादें बोलती हैं (कविताएँ) 200.00
एक मुट्ठी धूप/नीरजा सिंह 100.00

डॉ॰ बलजीत सिंह

फ़ासले मिट जाएँगे (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
शब्द-शब्द संदेश (दोहे) 150.00
जीवन है मुस्कान (दोहे) 150.00
भीतर का संगीत (दोहे) 200.00
सुख के बिरवे रोप (दोहे) 200.00
इंद्रधनुष के रंग (दोहे) 200.00
प्यार के गुलाल से (हाइकु) 200.00
हारना हिम्मत नहीं (मुक्तक) 200.00
मानव तू जग में सुंदरतम 200.00
रिश्ते नए अब जोड़िए (ग़ज़लें) 200.00

डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण'

बहती नदी हो जाइए (ग़ज़ल-संग्रह) 150.00
अँधियारों से लड़ना सीखें (ग़ज़ल-संग्रह) 200.00
जीवन-अमृत : पर्यावरण चेतना (दोहा-संग्रह) 200.00
अक्षर-अक्षर हो अमर (दोहा-संग्रह) 200.00
वैदुष्यमणि विद्योत्तमा (खंडकाव्य) 200.00
अनजाने आकाश में/महेशचंद्र द्विवेदी 170.00
बातें कुछ अनकही/सत्येंद्र गुप्ता 200.00
मैंने देखा है/सत्येंद्र गुप्ता 200.00
हौसला तो है/सत्येंद्र गुप्ता 200.00
ज़िंदगी रुकती नहीं/सत्येंद्र गुप्ता 200.00
जज़्बात की धूप/धूप धौलपुरी 250.00

नवलकिशोर शर्मा

आड़ी-तिरछी यादों-सा कुछ 180.00
जब चाँद डूब रहा था 200.00
एड्स शतक/पूरणसिंह सैनी 150.00
श्री गोगाचरित (महाकाव्य)/पूरणसिंह सैनी 300.00
श्रीकृष्णचरित (महाकाव्य)/पूरणसिंह सैनी 800.00
खोजें जीवन सत्य (दोहे)/डॉ॰ ओमदत्त आर्य 150.00
अपनी एक लकीर (दोहे)/डॉ॰ ओमदत्त आर्य 200.00
राष्ट्र-शक्ति/सलेकचंद संगल 150.00
माँ तुझे प्रणाम/सलेकचंद संगल 150.00
लहरों के विरुद्ध/डॉ॰ रामप्रकाश 200.00
हर वृक्ष महाबोधि नहीं होता/महेंद्र कुमार 200.00
पीड़ा का राजमहल/डॉ॰ उर्मिला अग्रवाल 200.00
मैं एक समुद्र/डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध 200.00
उड़ान जारी है/विनोद भृंग 200.00

हरिराम 'पथिक'

जो जिया वो रचा (मुक्तक-संग्रह) 200.00
कहता कुछ मौन (हाइकु-संग्रह) 200.00
धनुषभंजक राम/चंद्रवीरसिंह गहलौत 'बेदाग' 200.00
एक कुल्हड़ चाय/स्वर्ण ज्योति 200.00
सूर्यनगर की चाँदनी (ग़ज़लें)/ रामेश्वर वैष्णव 150.00
रात (रात पर कविताएँ)/दामोदर खड़से 150.00
झरनों का तराना है/लक्ष्मी खन्ना सुमन 200.00
अहसासों के तान-बाने/लक्ष्मी खन्ना सुमन 200.00
स्मृतियाँ/सुषमा अग्रवाल 200.00
कविताएँ फेसबुक से/लालित्य ललित 200.00

दुनिया इतनी भी बुरी नहीं/लालित्य ललित 200.00
बचे रहेंगे केवल शब्द/लालित्य ललित 200.00
मेरे लिए तुम्हारा होना/लालित्य ललित 250.00
सब पता है/लालित्य ललित 250.00
आँगन घर में टहलेगा/लालित्य ललित 200.00
घर उदास है/लालित्य ललित 300.00
अपने में से तुम्हें देखना/लालित्य ललित 200.00
विरमाल गीत समग्र/सं॰ डॉ॰ पंकज विरमाल 500.00
विस्थापित मन/आस्था नवल 200.00

आत्मकथा-संस्मरण-पत्र

मेरा जीवन : ए-वन/काका हाथरसी 200.00
आत्मसरोवर/ओम्प्रकाश अग्रवाल 125.00
निष्ठा के शिखर-बिंदु/नीरजा द्विवेदी 200.00
स्विट्ज़रलैंड के इक्कीस दिन/नीरजा द्विवेदी 200.00
सफ़र साठ साल का/डॉ॰अजय जनमेजय (सं) 400.00
गीतिका गोयल, अनुभूति भटनागर (संपादक)
यादों की गुल्लक 300.00
उत्तरोत्तर/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल (संपादक) 500.00
श्रद्धांजलि/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल (संपादक) 500.00
धर्मेन्द्र उपाध्याय
आमिर ख़ान : हिंदी सिनेमा के सेवक 300.00

बाल-साहित्य

गधा बत्तीसी/लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' 200.00
ईनी-मीनी की मज़ेदार दुनिया/लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' 200.00
चिड़ियों की दुनिया रंगीन/लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' 200.00
कविताओं में पंचतंत्र/लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' 250.00
छुटके-मुटके जंगल में/लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' 200.00
नन्हे-मुन्ने गीत सुहाने/लक्ष्मी खन्ना 'सुमन' 200.00
Adventures of The Laughing Donkey 200.00
Tiny-Tots in Forest 200.00
चुनमुन की कहानियाँ (पुरस्कृत)/गीतिका गोयल 200.00
बातूनी कहानियाँ/गीतिका गोयल 200.00
धरती पर चाँद (पुरस्कृत)/शंभूनाथ तिवारी 250.00
हम बगिया के फूल (बालगीत)/डॉ॰ बलजीतसिंह 250.00
आओ गीत सुनाओ गीत/डॉ॰ बलजीतसिंह 250.00
छुट्टी के दिन बड़े सुहाने/डॉ॰ बलजीतसिंह 200.00
दिन बचपन के (बालगीत)/डॉ॰ बलजीतसिंह 200.00
जादूगर बादल (बालगीत)/ विनोद भृंग 250.00
आटे-बाटे दही चटाके (शिशुगीत)/बालकृष्ण गर्ग 250.00
बालकृष्ण गर्ग के बालगीत (पुरस्कृत) 500.00
किशोर मन की कहानियाँ/डॉ॰ सरला अग्रवाल 250.00
चलो आकाश को छू लें/डॉ॰ तारादत्त निर्विरोध 200.00
काग़ज़ की नाव/डॉ॰ सरोजनी कुलश्रेष्ठ 250.00
मानव-विकास की कहानी/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 200.00
पार्टी गेम्स/चाँदनी कक्कड़ 225.00
शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ/डॉ॰ अशोककुमार 200.00
भारतीय लोकजीवन की कहानियाँ/तारा प्रकाश 400.00

समाजोन्मुख साहित्य

उत्तराखंड में आध्यात्मिक पर्यटन/डॉ॰ सरिता शाह 200.00
निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण, डॉ॰ मीना अग्रवाल
पर्यावरण : दशा और दिशा (पुरस्कृत) 300.00
नारी : कल और आज 200.00
निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
विश्व आतंकवाद : क्यों और कैसे 300.00
हिंसा : कैसी-कैसी 300.00
दंगे : क्यों और कैसे (पुरस्कृत) 300.00
रमेशचंद्र दीक्षित, निश्तर ख़ानक़ाही, डॉ॰ गिरिराजशरण
मानवाधिकार : दशा और दिशा (पुरस्कृत) 300.00
डॉ॰ गिरिराज शाह
अपराध-अपराधी : अन्वेषण एवं अभियोजन 200.00
गुरु नानकदेव/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 200.00
अमृतवाणी/डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल 300.00
वेद-वेदान्त दर्शन/डॉ॰ मूलचंद दालभ 300.00
प्रकृति : एक ज्ञेय तत्त्व/डॉ॰ मूलचंद दालभ 300.00
कन्हैया गीता/डॉ॰ मूलचंद दालभ 900.00
डॉ॰ गोविंद शर्मा एवं रवि लंगर
टास्कफोर्स : हैल्थकेयर प्रोजेक्ट्स 450.00
सिद्धाश्रम का संन्यासी/मनोज भारद्वाज 300.00
समुद्री दैत्य सुनामी/डॉ॰ लालबहादुर रावल 300.00

हिंदी साहित्य निकेतन

16 **साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)**

फोन : 01342-263232, 09557746346

गुड़गाँव में संपर्क

बी-203, पार्क व्यू सिटी-2, सोहना रोड, गुड़गाँव 122018

फोन : 0124-4076565, 07838090732

शोध दिशा

समकालीन सृजन को समर्पित त्रैमासिकी

सदस्यता शुल्क
एक वर्ष के लिए : 150 रुपए
आजीवन सदस्यता : 1500 रुपए
संरक्षक सदस्यता : 10,000 रुपए

पत्रिका को प्राप्त करने के लिए
आज ही सदस्य बनिए

डी॰डी॰/धनादेश/चैक 'शोध दिशा' के नाम बिजनौर में देय हों, जिन्हें **शोध दिशा,**
16 **साहित्य विहार, बिजनौर** (**उ॰प्र॰**) 246701 के पते पर भेजा जाना चाहिए।
चैक द्वारा भुगतान करने पर बिजनौर के बाहर के चैकों पर 50 रुपए अतिरिक्त भेजें।
सदस्यता शुल्क जनवरी से दिसंबर तक रहता है।
कृपया अपना नाम-पता स्पष्ट अक्षरों में पिन कोड, फोन नं॰ के साथ भरें।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें–shodhdisha@gmail.com

यह फार्म भरकर डी॰डी॰/धनादेश/चैक के साथ भेजें

नई सदस्यता

एक वर्ष के लिए ☐
आजीवन सदस्यता ☐
संरक्षक सदस्यता ☐

नाम.....

पता .....

नगर ..... राज्य .....

पिन कोड ☐☐☐☐☐☐

ईमेल ..... टेलीफोन .....

डी॰डी॰/चैक संख्या..... दिनांक .....

बैंक का नाम .....

हस्ताक्षर